अमृता

तृतीयो भागः

अष्टम-वर्गस्य कृते

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत
पाठ्य पुस्तकों का निःशुल्क वितरण ।
क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सर्व शिक्षा अभियान : 2013-14 – 15,38,461

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, कुन-कुन सिंह लेन, पटना-6 द्वारा एच०पी०सी० के 70 जी०एस०एम० क्रीम वोभ टेक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) तथा एच०पी०सी० के 130 जी०एस०एम० ह्वाईट (वाटर मार्क) आवरण पेपर पर कुल 7,78,014 प्रतियाँ 24 X18 सेमी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया। इस क्रम में शैक्षिक सत्र 2010–11 के लिए वर्ग I,III, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पाठ्य–पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की गयीं। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I,III,VI एवं X की सभी अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गयीं। इस सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011–12 के लिए वर्ग II,IV एवं VII तथा शैक्षिक सत्र 2012–13 के लिए वर्ग V एवं VIII की नई पाठ्य–पुस्तकें बिहार राज्य के छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ–ही–साथ वर्ग–I से VIII तक की पुस्तकों का नया परिमार्जित रूप भी शैक्षिक सत्र 2013–14 के लिए एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार, पटना के सौजन्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री पी0के0 शाही एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली तथा एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार, पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

t0d0i0 flg] भा0रे0का0से0
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक प्रकाशन निगम लि0

दिशा बोध सह पाठ्य-पुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राहुल सिंह**
  राज्य परियोजना निदेशक
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **श्री राम शरणागत सिंह**
  संयुक्त निदेशक,
  शिक्षा विभाग, बिहार एवं विशेष कार्य
  पदाधिकारी, बी.एस.टी.बी.पी.सी., पटना
- **श्री अमित कुमार**
  सहायक निदेशक, प्राथमिक शिक्षा निदेशालय
  बिहार सरकार
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य**
  शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **श्री हसन वारिस**
  निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
  परिषद्, बिहार, पटना
- **श्री मधुसूदन पासवान**
  कार्यक्रम पदाधिकारी
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **डॉ. एस.ए. मुईन**
  विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
  परिषद्, बिहार, पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**
  प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
  एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर
- **डॉ. उदय कुमार उज्ज्वल**
  अपर कार्यक्रम पदाधिकारी
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

विषय विशेषज्ञ – **प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'**
पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

लेखक समूह –

1. **डॉ. मधु बाला सिन्हा**
   व्याख्याता, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
2. **डॉ. सीताराम झा**
   सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, हाबीभौआर, बेनीपुर, दरभंगा
3. **शाहिद आलम**
   सहायक शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, हड़सर धनौती, सिवान
4. **(श्री) शंभू राय**
   सहायक शिक्षक, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलजारबाग
   पटना सिटी, पटना-7
5. **(श्रीमती) प्रियंका**
   सहायक शिक्षिका, अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय, उसफा, पटना

संस्कृत पाठ्य-पुस्तक समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

1. **डॉ. रामगुलाम मिश्र**
   अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना
2. **डॉ. अशोक कुमार**
   प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक – **डॉ. अर्चना**
व्याख्याता,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार, पटना

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
व्याख्याता,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार, पटना

आभार – **यूनिसेफ, बिहार**

WEBCOPY: BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

पुरोवाक्

संस्कृतं भारतवर्षस्य अतीव महत्त्वपूर्णा प्राचीना च भाषा वर्तते । अस्या अध्ययनं विद्यालयेषु विभिन्नैः विषयैः सह परम्परया क्रियते । छात्राणां सामञ्जस्यं संस्कृतादिभिः विषयैः सह विद्यालय-शिक्षाकाले संस्थापितं जायते । क्रमेण 2005 तमे ईस्वीवर्षे राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः रूपरेखा प्रकाशिताऽभूत् यत्र छात्राणां विद्यालयजीवनस्य संयोजनं विद्यालयेतर-जीवनेन भवेदित्यनुशंसितम् । ततः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायां पुस्तकीयं ज्ञानमेव मुख्यमासीत्, यत्र विद्यालयस्य परिवारस्य समाजस्य च मध्येऽन्तरालं पोषितम् । राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यपुस्तकानि सम्प्रति मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते । संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारराज्येऽपि तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि भवेयुः इत्यस्माकं संकल्पः । अस्माकमयमभिनवः प्रयासः 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रियशिक्षानीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितायाः शिक्षाव्यवस्थाया विकासाय कल्पिष्यते इति वयमाशास्महे ।

एतादृशस्य नूतनस्य प्रयासस्य सफलता तु विद्यालयानां प्राचार्याणां शिक्षकाणां च तथाभूतान् प्रयासानेवालम्बते यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाशीलतायाः विकासाय, प्रश्नाँश्च प्रष्टुं प्रोत्साहयन्ति । इदमत्र स्वीकरणीयं यद् रुचिपूर्णा पाठ्यसामग्री, तदनुशीलनाय स्वतन्त्रता च यदि छात्रेभ्यो दीयते तदा ते वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य स्वयमपि नूतनं ज्ञानं सृजन्ति । परीक्षायाः कार्यक्रमोऽपि व्यापको भवेत्, न तु पाठ्यपुस्तकाश्रितं ज्ञानमात्रम् । बालकेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च उपक्रमः तदैव सम्भवेत् यत्र वयं तान् सर्वानपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य केवलस्य ग्राहकरूपेण ।

उपर्युक्तानि लक्ष्याणि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते । दैनिकसमयसारण्यां परिवर्तनशीलता यथा अपेक्षिता, तथैव वार्षिक-कार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परतापि अनिवार्या वर्तते । शिक्षणार्थं नियते काले तदैव वास्तविकं शिक्षणं सम्भवति । नूनं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य स्थितिविशेषस्य च दृष्ट्या प्रस्तुतं पाठ्यपुस्तकं छात्राणां विद्यालयीयजीवने आनन्दानुभूतये प्रभावकं भविष्यति, न तु नीरसतायाः साधनम् । पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्धकालदृष्ट्या च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः । पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, उत्सुकतावृद्धेः, लघुसमूहेषु वार्त्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च प्रभूतमवसरं प्रदास्यति ।

बिहार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृत-पाठ्यपुस्तक-विकास-समितेः अध्यक्षाय विश्रुतयशसे डॉ. उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च भूयोभूयः साधुवादं वितरति, स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति ।

हसन वारिस
निदेशकः (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार

भूमिका

संसार में अनेक भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं। कुछ भाषाएँ केवल इतिहास में सुरक्षित हैं। उन्हें औपचारिक दृष्टि से मृतभाषा कहते हैं । सौभाग्यवश संस्कृत भाषा संसार की उपलब्ध तथा जीवित भाषाओं में इतिहास की दृष्टि से प्राचीनतम है । इसका साहित्य न्यूनतम चार हजार वर्षों से अनवरत चल रहा है, यद्यपि इसे इस कालावधि में अपनी रक्षा के लिए पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा है । संस्कृत ने अपने साहित्य के अन्तर्गत अनेक अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को आत्मसात् करके सर्वांगपूर्ण भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है । इसीलिए इसके विषय में एक प्रशस्ति चल पड़ी है – **संस्कृतिः संस्कृताश्रिता ।** अर्थात् भारतीय संस्कृति प्रत्यक्षतः या परोक्षतः संस्कृत भाषा पर आश्रित है, इसमें समाविष्ट है । भारत की अधिसंख्य भाषाएँ (जैसे- हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमिया, मैथिली आदि) इसी से निकली हैं। दक्षिण भारत की चारों प्रमुख भाषाओं (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम) ने भी संस्कृत की शब्द-सम्पदा को व्यापक रूप से स्वीकार किया है । इस प्रकार बहुत प्राचीनकाल से भारतीय स्तर पर संस्कृत लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद रही है । भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृत के विद्वान् कवि तथा लेखक हुए हैं और आज भी अपनी संस्कृत रचनाओं से इस भाषा और साहित्य को सम्पन्न कर रहे हैं । भारतवर्ष की वर्तमान बहुभाषिकता का सर्वोत्तम सेतु संस्कृत भाषा ही है । इस दृष्टि से इस चिर प्राचीन और चिर नवीन भाषा का अध्ययन आवश्यक है ।

भारतीय संस्कृति की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि और प्रसार में संस्कृत भाषा का ज्ञान और अध्ययन वर्तमान शिक्षा पद्धति में भी सभी ने स्वीकार किया है । विद्यालय-स्तर पर संस्कृत शिक्षण के रुचिकर रूप पर बल देते हुए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005 ई.) के आलोक में स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार तथा बिहार राज्य की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता के अनुसार **राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (S.C.E.R.T.), बिहार** द्वारा संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकों के विकास का कार्यक्रम बनाया गया है । इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत **भाषा शिक्षा विभाग** द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक-शृंखला **अमृता** का विकास किया गया है । इन भागों में नैतिक एवं शिक्षाप्रद मूल्यों से परिपूर्ण गद्य-पद्य पाठों का समावेश किया गया है ।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

संस्कृत के प्रारंभिक छात्रों के स्वस्थ भाषिक मनोरंजन के लिए इनमें रुचिवर्धक, ज्ञानवर्धक तथा आकर्षक सामग्री का समावेश किया गया है । इस पुस्तक-श्रृंखला के सभी भाग विद्यालय स्तर के छात्र-छात्राओं में भारतीय संस्कृति की अमर स्रोतस्विनी संस्कृतभाषा के प्रति रुचि तो उत्पन्न करेंगे ही, साथ ही इस भाषा का स्वयं प्रयोग करने की क्षमता भी दे सकेंगे । छात्र क्रमशः संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति अपेक्षित कुशलता पा सकेंगे, ऐसा विश्वास है ।

इस श्रृंखला का यह तृतीय पुष्प **अमृता तृतीयो भागः** छात्रों के लिए प्रस्तुत है । इसका द्वितीय भाग इसके पूर्व ही प्रकाशित हो चुका है । इस तृतीय भाग के निर्माण में भी इस तथ्य पर विशेष ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक तथा छात्र-छात्राओं के बीच अंतः क्रिया प्रश्नोत्तर के माध्यम से हो । यह संस्कृत भाषा में हो तो अधिक अच्छा है क्योंकि छात्रों में संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की प्रवृत्ति और कुशलता अधिकाधिक होती जायेगी । यह उनके भावी जीवन के लिए भी उपयोगी होगी ।

विद्यालय स्तर पर यह संस्कृत की तृतीय पाठ्यपुस्तक है । अतः इसमें भी यथासाध्य चित्रों के आधार पर संस्कृत के सम्बद्ध पाठों को प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है । पाठ सरल किन्तु स्तरीय हैं । कई पाठों में दैनिक उपयोग के विषयों का समावेश किया गया है । पाठों के निर्माण में नवीन शिक्षाशास्त्रियों के परामर्शानुसार निम्नलिखित विषयों की सामग्री का यथासाध्य समावेश किया गया है - **मनोरंजन** (जैसे- 'प्रहेलिकाः' में), **खेल** (जैसे-'प्रहेलिकाः' में), **विज्ञान** ('विज्ञानस्य उपकरणानि में), **गणित** ('विज्ञानस्य उपकरणानि' के योग्यता-विस्तार में), **लिंग - समानता** ('गुरु-शिष्य-संवादः' में), **पर्व-त्योहार** ('रक्षाबन्धन-व्रतोत्सवः' में), **विशिष्ट व्यक्तित्व** ('संकल्पवीरः दशरथ माँझी' में), **देशभक्ति** ('अस्माकं देशः' में), **सामाजिक समरसता** ('मङ्गलम्' 'अस्माकं देशः', 'संघे शक्तिः' इत्यादि में), **स्थानीय परिवेश** ('संकल्पवीरः दशरथ माँझी' में), **सांस्कृतिक धरोहर** ('प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः' में), **स्वास्थ्य** ('गुरु-शिष्य-संवादः' में), **जनसंख्या-नियंत्रण के लाभ** (लघुकथा-'रघुदासस्य लोकबुद्धिः' व इसके योग्यता विस्तार में), **नैतिक आचरण** ('नीति-श्लोकः', 'गुरु-शिष्य-संवादः' आदि में)। इस प्रकार पाठों का परिवेश व्यापक है तथा सामाजिक मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर उन्हें निर्मित किया गया है ।

छात्रों की रुचि समस्त परिवेश को आत्मसात् कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है । उनका बौद्धिक विकास हो, मनोरंजन हो, स्वतन्त्र चिंतन की प्रवृत्ति हो तथा सर्जनात्मक क्षमता का भी विकास हो, इसी दृष्टि से पाठों की विषय-वस्तु तथा भाषा-शैली रखी गयी है। प्रायः सभी पाठों का नव विकास किया गया है । केवल 'मङ्गलम्' तथा 'सदाचारः' प्राचीन ग्रन्थों से संकलित हैं । सभी पाठों में छात्रों के आस-पास के परिवेश की ही प्रस्तुति है जिससे कोई भी अंश उद्वेजक (ऊबाऊ) न लगे । कुल मिलाकर इसके चौदह पाठ चौदह रत्नों के समान हैं जो उपयोगी तथा बहुमूल्य भी हैं । इनसे संस्कृत के छात्रों और अध्यापकों को वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होगी ऐसा विश्वास है ।

पाठों का परिचय :

यद्यपि प्रत्येक पाठ के आरम्भ में तथा योग्यता-विस्तार के क्रम में पाठों का महत्त्व तथा सामान्य परिचय दिया गया है फिर भी यहाँ उनके विषय में कुछ निवेदन करना प्रासंगिक है ।

1. मङ्गलम् :- मङ्गलाचरण के रूप में इसमें वेद और उपनिषद् के दो मन्त्र संकलित हैं जिनमें समस्त जनता के सहयोग तथा गुरु-शिष्य के परस्पर अभ्युदय की मंगल कामना है । इनका पाठ वैदिक लय और स्वर के साथ किसी भी सभा या कार्यक्रम के आरम्भ में किया जा सकता है ।

2. सङ्घे शक्तिः :- यह एक प्राचीन कथा का पुनराख्यान है । इसमें परिवार में परस्पर विवाद की निन्दा करते हुए मिल-जुलकर रहने का सुझाव व्यावहारिक रूप से दिया गया है। व्यष्टि से अधिक समष्टि महत्त्वपूर्ण है । यह प्राचीन और आधुनिक सिद्धान्त भी है ।

3. अस्माकं देशः :- इस निबन्धात्मक पाठ में भारतवर्ष की प्राचीन सांस्कृतिक महिमा के साथ आधुनिक भारतीय महापुरुषों की उपलब्धियों का संकेत किया गया है ।

4. प्रहेलिकाः :- सभी संस्कृतियों में पहेलियाँ बच्चों के बौद्धिक विस्तार और तर्कशक्ति के विकास के लिए आवश्यक मानी गयी हैं । इस पाठ में संस्कृत पद्यों में पाँच सरल पहेलियाँ दी गयी हैं । इन्हें अपनी क्षमता से समझने का प्रयास छात्र कर सकते हैं ।

5. सामाजिकं कार्यम् :- व्यक्तियों के समुदाय के रूप में समाज का लक्ष्य स्वार्थपरता को हटाकर समाजोपयोगी कार्यों के प्रति एक-एक व्यक्ति को प्रवृत्त करना है । इस विषय पर यह निबन्धात्मक पाठ बच्चों को स्वस्थ सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

6. रघुदासस्य लोकबुद्धिः :- इस कथात्मक पाठ में प्रकारान्तर से जनसंख्या-नियन्त्रण पर बल दिया गया है। हरिप्रसाद आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर भी अनियन्त्रित परिवार के कारण दु:खी है। दूसरी ओर छोटे परिवार वाला रघुदास आर्थिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न न होने पर भी प्रसन्न तथा समृद्ध है।

7. प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः :- इस पाठ में भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक धरोहरों के रूप में स्थित तक्षशिला, नालन्दा एवं विक्रमशिला नामक विश्वविद्यालयों के स्वर्णिम युगों का स्मरण किया गया है, जहाँ दूर-दूर से देश-विदेश से छात्र सुयोग्य शिक्षकों से विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त करते थे । इनके अवशेष पुरातत्त्व विभाग द्वारा किये गये उत्खननों से प्राप्त हुए हैं । ये देश के गौरव स्वरूप हैं ।

8. नीति-श्लोकाः :- जीवन को सन्मार्ग पर ले जाने तथा संकट के समय आश्वासन देने वाले नीति-श्लोक संस्कृत में बहुत महत्त्व रखते हैं । विविध नैतिक मूल्यों से सम्बद्ध आठ नीति श्लोक इस पाठ में दिए गए हैं । इनमें सुख-दु:ख की अनिवार्यता, आचार की महत्ता, महापुरुषों की विशिष्टता आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है ।

9. संकल्पवीरः दशरथ माँझी :- इस पाठ में बिहार के एक कर्मठ भूमिहीन किसान दशरथ माँझी का संक्षिप्त जीवन है जिसने पर्वत घाटी को अपने अकेले श्रम से काटकर चौड़ा किया और दो स्थानों की दूरी कम कर दी । भले ही उसे इस कार्य में बाईस (22) वर्ष लग गए, किन्तु वह इतिहास में अमर हो गए ।

10. गुरु-शिष्य-संवादः :- यह पाठ कक्षा में संवाद के रूप में है । यहाँ छात्रों और शिक्षक के बीच वार्तालाप के रूप में विद्या के महत्त्व और जीवन के प्रति किशोरों की स्वस्थ मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है । इसका अभिनय भी सम्भव है ।

11. विज्ञानस्य उपकरणानि :- इस निबन्धात्मक पाठ में विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों के आविष्कर्ता तथा उपयोग की चर्चा की गयी है । ये उपकरण पूरे विश्व में जन-जन तक व्याप्त हैं । अत: सामान्य ज्ञान के लिए भी इस पाठ की उपयोगिता है ।

12. सदाचार :- यह पद्यात्मक पाठ संस्कृत के विभिन्न ग्रन्थों से संकलित है । इसमें सत्पुरुषों के योग्य कार्यों का प्रकाशन है । इन कार्यों में बोलने की कला, अभिवादन, व्यक्तित्व के महत्त्व का कारण, प्रात: जागने के लाभ, शिक्षक एवं परिवार के बड़े सदस्य का महत्त्व, सदाचारी की प्रशंसा तथा ईमानदारी पर प्रकाश डाला गया है ।

13. रविषष्ठी-व्रतोत्सव : :- बिहार के त्योहारों में छठ का पर्व संभवत: सबसे बड़ा है । इसमें कठोर संयम, उपवास तथा प्रकृति के सर्वाधिक स्पष्ट देवता सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है । नदियों तथा तालाबों के किनारे अर्घ्यदान तथा व्रत के अनुष्ठान के लिए नर-नारियों का मेला लगता है । इस पर्व का परिचय प्रस्तुत पाठ में दिया गया है।

14. कृषिगीतम् :- यह पाठ नवरचित संस्कृत गीत के रूप में है । किसानों की विपन्नावस्था तथा जीवन के प्रति उनके मोदमय दृष्टिकोण का परिचय इस गीत में दिया गया है । यह विडम्बना है कि पृथ्वी को हरे-भरे परिधान से सम्पन्न करने वाला किसान स्वयं आवश्यक परिधान से वञ्चित रहता है ।

इन पाठों में प्रत्येक के अन्त में शब्दार्थ, अनुप्रयुक्त व्याकरण, मौखिक और लिखित अभ्यास के प्रश्न तथा आवश्यक योग्यता-विस्तार की सामग्री दी गई है । इनसे छात्रों की कक्षा में सक्रियता तथा जागरूकता की अभिवृद्धि होगी । यह इन पाठों की प्रस्तुति का उद्देश्य है । आशा है शिक्षक महोदय पाठ के अंत में आई हुई सामग्री का उपयोग कक्षा में सम्यक् रूप से कराएँगे ।

पुस्तक के अन्त में प्रासंगिक व्याकरण के अन्तर्गत बहुत उपयोगी बातें समझाई गयी हैं । इनमें वर्णविचार, सन्धि, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, समास की अवधारणा, पत्रलेखन तथा अनुच्छेद-लेखन, शब्दरूप-धातुरूप के अतिरिक्त संस्कृत सम्भाषण के अभ्यास के लिए दैनिक व्यवहार में आने वाले सरल वाक्यों का विन्यास किया गया है । इस उपयोगी सामग्री से प्रस्तुत पुस्तक की उपयोगिता अवश्य ही बढ़ी हुई प्रतीत होगी ।

इस पुस्तक-शृंखला के इस तृतीय भाग में भी निम्नांकित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है -

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- प्रश्नोत्तर के माध्यम से शिक्षक-छात्र की अन्त:क्रिया
- भाषिक तत्त्वों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के प्रयोग की क्षमता
- नैतिक मूल्यों से युक्त संस्कृत पद्यों का परिचय
- संस्कृत की वर्त्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता

- प्रत्येक पाठ में शब्दार्थ का परिचय
- प्रत्येक पाठ में अपने आस-पास के परिवेश का परिचय
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता
- सामाजिक समरसता
- पाठों के अनुरूप चित्रों का संयोजन
- पुस्तक के परिशिष्ट में व्याकरण की आवश्यक सामग्री ।

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक को कितना भी वैज्ञानिक और रोचक बनाया जाए उसकी महत्ता और उपयोगिता का वास्तविक अंकन शिक्षक ही कर सकते हैं । इसलिए अध्यापन-कार्य में लगे हुए शिक्षक की भूमिका बहुत प्रभावी होती है । एक ओर अध्यापन-कार्य में तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा होती है, तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित भाषिक तत्त्वों तथा विषयगत बिन्दुओं के सम्प्रेषण तथा अधिगम में कुशल अध्यापन-शैली भी आवश्यक है । पाठ्यपुस्तक के निर्माण का लक्ष्य तभी पूरा हो सकेगा जब शिक्षकगण अपनी रोचक अध्यापन-शैली से इस पुस्तक की बातों को सम्बद्ध छात्र-छात्राओं तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे।

बिहार के बहुभाषिक परिवेश में शिक्षक संस्कृत के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं को भी यथासंभव माध्यम बनाते हुए छात्रों में संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्ति के हेतु बनें तथा इस भाषा की ओर छात्रों को क्रमशः अधिक-से-अधिक उन्मुख करें । उनसे अपेक्षा है कि वे छात्रों के मन में यह बात बैठाएँ कि संस्कृत कोई विचित्र और कठिन भाषा नहीं अपितु हमारी भाषाओं की जननी है। इसी के शब्दों को हम परिवर्तित करके बोलते हैं ।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठों के अन्त में आए हुए अभ्यासों तथा उन पाठों के वाक्यों को आधार बनाकर अनुप्रयुक्त (Applied) रूप से करें। इससे व्याकरण भाररूप नहीं लगेगा। वह भाषा की अभिव्यक्ति में सहायक विषय का काम करेगा । कण्ठस्थीकरण

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास छात्रों में किया जाए । अध्यापक भी नये अभ्यासों की सर्जना करें जिससे छात्रों की अपनी सर्जनाशक्ति का विकास हो तथा उनकी अन्त:वृत्ति संस्कृतमय हो । इससे छात्र अपने परिवेश की अभिव्यक्ति भी संस्कृत में कर सकेंगे ।

संस्कृत भाषा की यह विशिष्टता है कि इसमें प्रयुक्त पद व्याकरण के नियमों से परिपुष्ट होता है, प्रत्येक पद की व्युत्पत्ति होती है, एक-एक पद नए-नए पदों को जन्म देता है जिससे आरंभिक छात्र भी सैकड़ों संस्कृत शब्दों से परिचित हो जाते हैं । शिक्षक यदि चाहें तो शब्दों के पर्याय शब्द, विलोम शब्द तथा उनके प्रयोग भी कक्षा में सिखाएँ। सन्धि के कठिन नियम, समास की जटिलता तथा विभक्तियों के प्रयोग के कठिन नियमों में आरंभिक कक्षा में न जाएँ। तभी संस्कृत भाषा का अध्ययन छात्रोपयोगी तथा आकर्षक होगा, शिक्षक की लोकप्रियता बढ़ेगी ।

आशानुरूप पूर्व के संस्करण पर विभिन्न स्रोतों से सारगर्भित सुझाव प्राप्त हुए। उन सुझावों के आधार पर इस नये संस्करण को संशोधित एवं परिमार्जित कर लिया गया है। हम सुझाव देनेवालों के प्रति आभारी हैं। अब आशा है कि उपर्युक्त तथ्यों पर शिक्षकबंधु एवं सुधीजन पुन: ध्यान देंगे। यद्यपि पाठ्यपुस्तक के लिए सामग्री प्रस्तुत करने में प्रतिभागियों ने यथासाध्य परिश्रम किया है, निर्देशानुसार उन्होंने अभ्यास तथा अन्य उपयोगी सामग्री देकर इसे परिष्कृत करने का पूरा प्रयास किया है तथापि पाठ्यपुस्तक के लेखन से मुद्रण तक के विभिन्न स्तरों में जो स्खलन हुए हों उसके लिए अग्रिम क्षमा मांगने के अतिरिक्त यह अनुरोध भी करता हूँ कि अपने परामर्शों से अध्यापकबन्धु मुझे अवगत करायें तथा पुस्तक की व्यापक परिष्कृति में अपनी भागीदारी भी सुनिश्चित करें।

(प्रो.) उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

अध्यक्ष

संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रथमः पाठः

मङ्गलम्

(उपसर्ग, अयादिसन्धि)

(भारत की प्राचीन परम्परा रही है कि मङ्गलाचरण से ही कोई महत्त्वपूर्ण कार्य आरम्भ होता है। कुछ विद्वानों ने तो कार्य के आदि, मध्य और अन्त में भी मङ्गल करने की बात कही है। मङ्गल के अन्तर्गत प्रायः आराध्य देवताओं या गुरुओं की वन्दना, प्रभुप्रार्थना अथवा कार्य की सफलता की शुभकामना होती है। प्रस्तुत पाठ में ऋग्वेद तथा उपनिषदों के मन्त्र मङ्गल के रूप में दिये गये हैं जिनमें सहयोग एवं गुरु-शिष्य के अभ्युदय की कामना की गई है।)

1. संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
   देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥ 1 ॥
2. सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
   तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ 2 ॥

Developed by: ABSOL www.absol.in

शब्दार्थ :

संगच्छध्वम्	=	तुम लोग साथ चलो
संवदध्वम्	=	तुमलोग साथ बोलो
वो (वः)	=	तुम्हारे
मनांसि	=	मन (बहुवचन)
सं जानताम्	=	एक साथ चिन्तन करें
देवाः	=	श्रेष्ठ पुरुष
पूर्वे	=	प्राचीन काल के
भागम्	=	अपने प्राप्य अंश को
सञ्जानानाः	=	समान चित्त वाले
सह	=	साथ
नौ	=	हमदोनों
उपासते	=	समीप रहते हैं, ग्रहण करते हैं
भुनक्तु	=	भोजन करे, भोगे
अधीतम्	=	ज्ञान, पढ़ा हुआ विषय
मा	=	नहीं
विद्विषावहै	=	(हमदोनों) विद्वेष करें
नाववतु (नौ + अवतु)	=	हमदोनों की रक्षा करें

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद :

नाववतु = नौ + अवतु

नावधीतमस्तु = नौ + अधीतम् + अस्तु

अभ्यासः

मौखिकः

1. मन्त्रौ श्रावयत ।

2. स्वस्मरणेन कञ्चित् मङ्गलश्लोकं श्रावयत ।

3. उच्चैः गायत - (क) मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ।।

4. रिक्तस्थानानि पूरयत

(क) .... संवदध्वं सं .... जानताम् । देवा भागं ....
सञ्जानाना ....।।

(ख) पावकः = पौ + अकः

नायकः = नै + ...

नयनम् = ...+ अनम्

नाविकः = ... + ...

पवनः = ... + ...

भवनम् = भो .... +

5. संस्कृते अनुवादं कुरुत -

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(क) वह प्रतिदिन विद्यालय जाता है ।

(ख) मेरे साथ तुम भी जाओगे ।

(ग) सभी सुखी हो ।

(घ) संसार ही परिवार है ।

(ङ) दिल्ली भारत की राजधानी है ।

6. **वाक्यानि रचयत-**

यथा – ऋतुराजः – वसन्तः ऋतुराजः कथ्यते ।

(क) दृष्ट्वा .... ।

(ख) महोत्सवः .... ।

(ग) शनैः शनैः .... ।

(घ) गच्छन्ति .... ।

(ङ) वेदेषु .... ।

7. **उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत –**

यथा – सर्वेषामेव – सर्वेषाम् + एव

अधीतमस्तु – .... + ...

अध्ययनमेव – .... + ...

वर्षमस्ति – .... + ...

समुद्रमिव – .... + ...

8. **भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –**

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(क) सिंह:, कुक्कुर:, गर्दभ:, भल्लूक:, शुक:

(ख) जम्बु: , आम्रम्, नारिकेलम्, ओदनम्, अमृतफलम्

(ग) रजक:, नापित:, लौहकार:, स्वर्णकार:, वस्त्रम्

(घ) मस्तकम्, ग्रीवा, ओष्ठ:, पौत्र:, कपोल:

(ङ) दशानन:, सप्त, शतम्, विंशति:, द्वादश

9. कोष्ठे दत्तानां लट्रूपाणां लङ्रूपाणि (एकवचने) लिखत -

यथा - उज्ज्वल: पुस्तकं (पठति) - उज्ज्वल: पुस्तकम् अपठत् ।

(क) शाम्भवी जलं (पिबति) -

(ख) आलोक: उच्चै: (हसति) -

(ग) इकबाल: पत्रं (लिखति) -

(घ) आफताब: कुत्र (गच्छति) ?

(ङ) अनुष्का श्लोकं (वदति) -

10. भवान् / भवती विद्यालयस्य प्राङ्गणस्य चित्रे किं पश्यति ?

यथा - 1. अहं चित्रे एकं वृक्षं पश्यामि ।

2. .... ।

3. .... ।

4. .... ।

5. .... ।

6. .... ।

योग्यताविस्तार:

भारतवर्ष की धार्मिक परम्परा में ऐसा विश्वास रहा है कि किसी कार्य को आरम्भ

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED ©BSTBPC

करते समय तथा उसके समापन के समय माङ्गलिक वचनों का उच्चारण किया जाये। वैयाकरण पतञ्जलि ने कहा है – **मङ्गलादीनि मङ्गलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते ।** अर्थात् जिन शास्त्रों के आरम्भ और अन्त में मङ्गल कार्य होते हैं वे बहुत दूर तक और बहुत दिनों तक प्रचलित रहते हैं। इसलिए कार्य के स्थायित्व एवं लोकप्रिय होने के लिए आरम्भ में मङ्गलाचरण आवश्यक है । इसमें किसी देवता या आराध्य व्यक्ति की वन्दना की जाती है अथवा संसार के सुखी होने की कामना की जाती है। यद्यपि यह मङ्गल कार्य शास्त्रीय दृष्टि से प्रचलित हुआ था किन्तु आगे चलकर सभी कार्यों के लिए आवश्यक माना गया । तभी तो किसी भवन के निर्माण के पूर्व वास्तुपूजा, गृहप्रवेश में सत्यनारायण आदि की पूजा की जाती है । मध्यकाल में कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गलाचरण आवश्यक माना गया ।

भौतिकवादी युग में भी किसी-न-किसी रूप में शिलान्यास, उद्घाटन इत्यादि के कार्य मङ्गल समझ कर ही किये जाते हैं। संस्कृत में भी कहा गया था कि ग्रन्थ में नमस्कार या आशीर्वाद की कामना न होने पर भी कथानक की केवल सूचना दे देना (वस्तुनिर्देश) भी मङ्गल का स्वरूप है । वस्तुतः मङ्गल इस आस्था पर आश्रित है कि हमारा कार्य विघ्न-बाधा के बिना पूरा हो जाए ।

प्रस्तुत पाठ में ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का एक मन्त्र है जिसमें सभी लोगों के मिलजुल कर रहने, समान हृदय, समान विचार तथा सामञ्जस्य की कामना है । एकता का संकेत इससे मिलता है । दूसरा मन्त्र कुछ उपनिषदों के मङ्गल पाठ के रूप में है जिसमें गुरु -शिष्य के बीच सौहार्द तथा विद्या के आदान-प्रदान की भास्वरता की सुन्दर कामना है ।

QQQ

©BSEB WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

द्वितीयः पाठः

सङ्घे शक्तिः

(कृदन्त-प्रयोग)

(आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्या लोगों में परस्पर अविश्वास, लोभ तथा महत्त्वाकांक्षा की है जिसके कारण परिवार, समाज इत्यादि संस्थाओं का बहुत तेजी से विघटन हो रहा है। लोग संघ की शक्ति की उपेक्षा करके व्यक्तिवाद को बढ़ावा दे रहे हैं । इससे परिवार, समाज तथा राष्ट्र तक की सत्ता सन्देह में पड़ गयी है । प्रस्तुत पाठ में एक प्रसिद्ध लोककथा के द्वारा संघ अर्थात् मिलजुल कर रहने की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है ।)

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अस्ति गङ्गायाः रमणीये तीरे पुष्कलनामको ग्रामः । तत्र बहुधनसम्पन्नः हरिहरो नाम कृषिकः । कृषिकर्मणा तेन प्रभूता सम्पत्तिरर्जिता । ग्रामे तत्परिसरे च तेन महती प्रतिष्ठा सम्प्राप्ता । तस्य चत्वारः पुत्राः अभवन् । पितुः कार्ये सहायतां नाकुर्वन्, प्रत्युत परस्परं नित्यं कलहायन्ते । एकः कथयति – त्वामेव पिता अधिकं मन्यते । त्वमेव तस्य विपुलां सम्पत्तिं प्राप्स्यसि । अपरः वदति – त्वम् अतीव अलसः । कदापि किमपि हितकरम् उपयोगि कार्यं न करोषि । तृतीयः तथैव विद्याध्ययनस्य निन्दां करोति, चतुर्थः विद्याध्ययनाय पितुः धनयाचनां करोति तदा तृतीयः पितरं वारयति । एवमेव किमपि

समाश्रित्य चतुर्षु भ्रातृषु कलहः प्रवर्तते स्म । अनेन बुद्धिमान् पिता सततं चिन्तितस्तिष्ठति ।

वृद्धः पिता स्वपुत्रान् कृषिकर्मणः सञ्चालनाय भूयो भूयः प्रेरयति किन्तु सर्वेऽपि अलसाः न शृण्वन्ति । एकदा स वार्धक्यजनितेन रोगेण ग्रस्तः शय्यासीनो जातः । स कलहायमानेषु पुत्रेषु सङ्घबद्धतायाः महत्त्वस्य बोधनाय उपायमचिन्तयत्। सर्वानपि पुत्रानाहूय स एकस्मै सुबद्धं दण्डचतुष्टयं दत्वा प्राह – त्वमेनं भञ्जय । स कथमपि भङ्क्तुं नाशक्नोत् । तदा अपरः पुत्रः तथैव आदिष्टः ।

सोऽपि तद् दण्डचतुष्टयं भङ्क्तुं न समर्थो जातः । इयमेव दशा अपरयोरपि

WEBCOPY : NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

पुत्रयोरभवत् । तदा वृद्धः पिता दण्डचतुष्टयं निर्बध्य एकैकं दण्डम् एकैकस्मै पुत्राय दत्तवान् । किञ्च तं दण्डं त्रोटयितुं पुनः आदिष्टवान् । सर्वे पुत्राः स्व-स्व हस्तस्थं दण्डं भङ्क्तुं समर्थाः जाताः । तदा पिता कथितवान् - पुत्राः ! एवमेव बुध्यध्वम् । यदि यूयं पृथक्-पृथक् तिष्ठथ, तदा कश्चित् शत्रुः युष्मान् एकैकान् विनाशयिष्यति । यदि पुनः यूयं सर्वे मिलित्वा सुबद्धाः तिष्ठथ, तदा कोऽपि बाह्यजनः युष्मान् विनाशयितुं न समर्थः । अयमुपदेशः - संहतिः श्रेयसी पुंसाम् ।

तस्माद् दिवसात् प्रभृति सर्वेऽपि चत्वारः पुत्राः स्व-स्व दुष्टविचारान् त्यक्त्वा परस्परं मेलनेन गृहेऽवर्तन्त पितुश्च सेवया तम् अरोगं कृतवन्तः ।

शब्दार्थः

रमणीये	=	सुन्दर (सप्तमी विभक्ति)
ग्रामः	=	गाँव
तत्र	=	वहाँ
बहुधनसम्पन्नः	=	बहुत सम्पत्ति से युक्त, धनी
कृषिकः	=	किसान
प्रभूता	=	बहुत, पर्याप्त
सम्पत्तिः	=	धन
अर्जिता	=	कमायी गयी
परिसरे	=	प्रांगण में/ आस-पास
महती	=	बहुत, बड़ी
सम्प्राप्ता	=	प्राप्त हुई
चत्वारः	=	चार

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभवन्	=	हुए
अकुर्वन्	=	किये
प्रत्युत	=	अपितु, बल्कि
परस्परम्	=	आपस में
कलहायन्ते	=	लड़ते हैं
अपरम्	=	दूसरे को
कथयति	=	कहता है
त्वाम्	=	तुम्हें
एव	=	ही
मन्यते	=	मानता है
विपुलाम्	=	बहुत
प्राप्स्यसि	=	पाओगे
अतीव	=	बहुत
अलसः	=	आलसी
किमपि	=	कुछ भी
हितकरम्	=	भला
करोषि	=	करते हो
तथैव	=	वैसे ही
धनयाचनाम्	=	धन की मांग

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

तदा	=	तब
पितरम्	=	पिता को
वारयति	=	रोकता है, मना करता है
एवम्	=	इस प्रकार
समाश्रित्य	=	आश्रय लेकर
कलहः	=	लड़ाई
प्रवर्तते स्म	=	होती थी
सततम्	=	लगातार
तिष्ठति	=	रहता है
कृषिकर्मणः	=	खेती के काम के
सञ्चालनाय	=	करने के लिए
भूयो भूयः	=	बार बार
प्रेरयति	=	प्रेरित करता है
शृण्वन्ति	=	सुनते हैं
एकदा	=	एक बार
वार्धक्यजनितेन	=	बुढ़ापे से उत्पन्न
शय्यासीनः	=	बिछावन पर लेटा हुआ
जातः	=	हुआ

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सङ्घबद्धतायाः	=	मिलकर रहने के
बोधनाय	=	समझने के लिए
अचिंन्तयत्	=	सोचा, विचार किया
आहूय	=	बुलाकर
सुबद्धम्	=	अच्छी तरह बंधा हुआ
दण्डचतुष्टयम्	=	चार दण्डों को (दण्डम् = डण्डा)
दत्वा	=	देकर
प्राह	=	कहा
एनम्	=	इसको, इसे
भञ्जय	=	तोड़ो
भङ्क्तुम्	=	तोड़ने के लिए / में
नाशक्नोत्	=	(न + अशक्नोत्) समर्थ नहीं हुआ
तदा	=	तब
आदिष्टः	=	आदेश दिया गया
निर्बध्य	=	बन्धनरहित करके, खोलकर
एकैकम्	=	एक-एक को
दत्तवान्	=	दिया
त्रोटयितुम्	=	तोड़ने के लिए
किञ्च	=	तदनन्तर

पुनः	=	फिर
आदिष्टवान्	=	आदेश दिया
हस्तस्थम्	=	हाथ में स्थित, हाथ में रहने वाले
बुध्यध्वम्	=	तुमलोग समझो
तिष्ठथ	=	रहते हो
कश्चित्	=	कोई
एकैकान्	=	एक-एक को
विनाशयिष्यति	=	नष्ट कर देगा
मिलित्वा	=	मिलकर
बाह्यजनः	=	बाहरी मनुष्य
विनाशयितुम्	=	नष्ट करने के लिए / में
संहतिः	=	एकता
श्रेयसी	=	अधिक अच्छी
पुंसाम्	=	मनुष्यों का/की/ के
प्रभृति	=	से लेकर, इत्यादि
सर्वे	=	सभी
त्यक्त्वा	=	छोड़कर
परस्परम्	=	आपस में
मेलनेन	=	मेल-मिलाप से

अवर्तन्त	=	थे, रहते थे
अरोगम्	=	रोगरहित
कृतवन्तः	=	किये

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः पदविच्छेदश्च

सम्पत्तिरर्जिता	=	सम्पत्तिः + अर्जिता (विसर्ग–सन्धिः)
त्वामेव	=	त्वाम् + एव
त्वमेव	=	त्वम् + एव
किमपि	=	किम् + अपि
कदापि	=	कदा + अपि (दीर्घ – सन्धिः)
तथैव	=	तथा + एव (वृद्धि – सन्धिः)
विद्याध्ययनस्य	=	विद्या + अध्ययनस्य (दीर्घ–सन्धिः)
एवमेव	=	एवम् + एव
चिन्तितस्तिष्ठति	=	चिन्तितः + तिष्ठति (विसर्ग–सन्धिः)
सर्वेऽपि	=	सर्वे + अपि (पूर्वरूप–एकादेशः)
कथमपि	=	कथम् + अपि
सोऽपि	=	सः + अपि (विसर्ग–सन्धिः)
इयमेव	=	इयम् + एव
अपरयोरपि	=	अपरयोः + अपि (विसर्ग– सन्धिः)

पुत्रयोरभवत् = पुत्रयोः + अभवत् (विसर्ग-सन्धिः)

एकैकम् = एक + एकम् (वृद्धि-सन्धिः)

किञ्च = किम् + च (व्यञ्जन-सन्धिः)

कश्चित् = कः + चित् (विसर्ग-सन्धिः)

कोऽपि = कः + अपि (विसर्ग-सन्धिः)

अयमुपदेशः = अयम् + उपदेशः

गृहेऽवर्तन्त = गृहे + अवर्तन्त (पूर्वरूप-सन्धिः)

पितुश्च = पितुः + च (विसर्ग-सन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

अर्जिता = + क्त, स्त्रीलिङ्गम्, एकवचनम्

सम्प्राप्ता = सम् + प्र + + क्त, स्त्री॰, एकवचनम्

√अर्ज्

कलहायन्ते = कलह + क्यङ्, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√आप्

अकुर्वन् = लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

मन्यते = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√कृ

प्राप्स्यसि = प्र लृट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्

√मन्

जातः = + क्त

√आप्

समाश्रित्य = सम् + आ + श्रि + ल्यप्

√जन्

प्रवर्तते = प्र + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√

तिष्ठति = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√वृत्

प्रेरयति = प्र + + णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√स्था

श्रृण्वन्ति = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√ईर्

अचिन्तयत् = णिच्, लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√श्रु

आहूय = आ + ह्वे + ल्यप्

√चिन्त्

दत्त्वा = + क्त्वा

√

आदिष्टः = आ + दिश् + क्त

√दा

भञ्जय = भञ्ज् लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्

अशक्नोत् = लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√

अभ्यासः

√शक्

मौखिकः

1. **निम्नलिखितानां शब्दानाम् उच्चारणं कुरुत –**

   कृषिकर्मणा, सम्पत्तिरर्जिता, समाश्रित्य, चिन्तितस्तिष्ठति, श्रृण्वन्ति, दण्डचतुष्टयम्, एकैकस्मै, सर्वेऽपि, गृहेऽवर्तन्त ।

2. **'सङ्घे शक्तिः भवति'** – इति विषयम् आश्रित्य संस्कृतभाषायां द्वे वाक्ये वदत ।

3. **निम्नलिखितानां शब्दानाम् अर्थं वदत –**

   तथैव, विपुलाम्, कदापि, एवमेव, सततम्, एकदा, कथमपि, तदा, किञ्च ।

लिखितः

4. **वाक्यनिर्माणं कुरुत –**

पितरम्, ग्रामः, कृषिकः, करोषि, एकदा, पिता, त्यक्त्वा ।

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत -

तथैव, चिन्तितस्तिष्ठति, सर्वेऽपि, सोऽपि, सम्पत्तिरर्जिता ।

6. मञ्जूषातः शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

संहतिः, गङ्गायाः, चत्वारः, ग्रामे, शृण्वन्ति, कृषिकः

(क) अस्ति .... तीरे पुष्कलनामको ग्रामः ।

(ख) तत्र बहुधनसम्पन्नः हरिहरो नाम .... ।

(ग) .... तेन महती प्रतिष्ठा सम्प्राप्ता ।

(घ) तस्य .... पुत्राः अभवन् ।

(ङ) सर्वेऽपि अलसाः न .... ।

(च) .... श्रेयसी पुंसाम् ।

7. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -

दत्त्वा, जातः, समाश्रित्य, आहूय, आदिष्टः ।

8. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन लिखत -

(क) पुष्कलनामको ग्रामः कुत्र अस्ति ?

(ख) कृषिकर्मणा केन प्रभूता सम्पत्तिरर्जिता ?

(ग) हरिहरस्य कति पुत्राः आसन् ?

(घ) के अति अलसाः आसन् ?

(ङ) सर्वे पुत्राः सेवया कम् अरोगं कृतवन्तः ?

9. सुमेलनं कुरुत -

अ आ

(क)	दत्वा	(1)	+ क्त
(ख)	ग्रस्तः	(2)	आ + + क्त
(ग)	त्रोटयितुम्	(3)	+ तुमुन्
(घ)	भङ्क्तुम्	(4)	+ क्त्वा
(ङ)	मिलित्वा	(5)	+ णिच् + तुमुन्
(च)	आदिष्टः	(6)	+ क्त्वा

√ग्रस् √दिश् √भञ्ज् √मिल् √त्रुट् √दा

10. उदाहरणानुसारम् अव्ययपदानि चिनुत –

यथा – सः अद्य पाटलिपुत्रं गच्छति – अद्य

(क) त्वम् अत्र किं करोषि ? – .... ।

(ख) सः कदा गृहं गमिष्यति ? – .... ।

(ग) शीला करीना वा चित्रं द्रक्ष्यति?– .... ।

(घ) असत्यं मा वद । .... ।

(ङ) शकीलेन साकं सः अगच्छत् । .... ।

11. अधोलिखितानां निर्देशानुसारं रूपाणि लिखत –

यथा – मातृ (द्वितीया – एकवचने) – मातरम् ।

(क) पुत्र (सप्तमी – एकवचने) – .... ।

(ख) फल (षष्ठी – बहुवचने) – .... ।

(ग) नदी (चतुर्थी – द्विवचने) – .... ।

(घ) लता (सप्तमी – बहुवचने) – .... ।

(ङ) युष्मद् (पञ्चमी – द्विवचने) – .... ।

12. अधोलिखित-वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत -

(क) तत्र हरिहरो नाम कृषिकः वर्तते ।

(ख) एकदा हरिहरः रोगग्रस्तः अभवत् ।

(ग) गङ्गायाः तीरे पुष्कलनामको ग्रामः अस्ति ।

(घ) हरिहरस्य चत्वारः पुत्राः आसन् ।

(ङ) सर्वे पुत्राः अतीव अलसाः आसन् ।

(च) हरिहरः पुत्रान् आहूय अवदत् ।

(छ) सर्वे पुत्राः दुष्टविचारान् अत्यजन् ।

13. मञ्जूषायाः उचितानि पदानि योजयित्वा वाक्यनिर्माणं कुरुत -

सः		गच्छतः
त्वम्		गच्छामि
अहम्		गच्छन्ति
ते		गच्छसि
वयम्	गृहम्	गच्छामः
यूयम्		गच्छथ
तौ		गच्छति
आवाम्		गच्छावः

योग्यताविस्तार

समाज के इतिहास में दो प्रकार की धारणाएँ सदा से रही हैं- व्यक्तिवाद तथा समाजवाद। इसे प्राचीन संस्कृत साहित्य में स्वहित और परहित (परोपकार) के रूप में

वर्णित किया गया है। व्यक्तिवाद अर्थात् केवल स्वहित स्वाभाविक मनोवृत्ति है। सभी लोग अपने हित को सबसे बढ़कर मानते हैं किन्तु ऐसी मनोवृत्ति अन्तत: सामाजिक प्रक्रिया के विकास में हानिकारक होती है । इसीलिए परोपकार या परहित की कामना पर संस्कृत के प्राचीन लेखक बहुत मुखर रहे हैं। पुराणों के विषय में यह श्लोक कहा गया है –

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

अर्थात् सभी पुराणों का यही सार है कि परोपकार व्यक्ति का आत्यन्तिक हित करता है और दूसरों को कष्ट देना बहुत बड़ा अपराध है । इसी प्रकार एक अन्य श्लोक है–

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग् भवेत् ।

ये सारे वचन स्वहित के परित्याग एवं परहित की भद्रकामना के अन्तर्गत संघबद्धता की दिशा में व्यक्ति को प्रेरित करते हैं । आदिम युग में व्यक्तिवाद चलता हो किन्तु सभ्य सुसंस्कृत समाज परस्पर सहयोग के बिना नहीं चल सकता। संघ से ही परिवार, समाज, राज्य – ये सारी संस्थाएँ चलती हैं । पञ्चतन्त्र में कहा गया है –

असंहता: विनश्यन्ति, संहति: कार्यसाधिका ।

अर्थात् जो लोग बिखर कर रहते हैं वे नष्ट हो जाते हैं (Degeneration destroys)। दूसरी ओर संघबद्ध होने से अर्थात् मिलजुल कर कार्य करने से कार्य की सिद्धि होती है । वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक युग तक के संस्कृत लेखक संघ की शक्ति को रेखाङ्कित करते रहे हैं ।

विगत एक सौ वर्षों से पाश्चात्त्य जगत् में समाजवाद (Socialism) की

अवधारणा बहुत महत्त्वपूर्ण हो गयी है। इसमें व्यक्ति को समाज का अविभाज्य अङ्ग माना गया है । एक व्यक्ति को समाज वह सब-कुछ प्रदान करे जो उसके जीवन-यापन के लिए आवश्यक है किन्तु उस व्यक्ति से भी समाज यह आशा करता है कि वह अपनी शक्तिभर समाज के लिए शारीरिक या बौद्धिक श्रम करे जिससे समाज की उन्नति हो (From each according to his capacity, to each according to his needs)। यही अवधारणा प्राचीन भारत की आश्रमव्यवस्था में भी थी जिसमें अवस्था के अनुरूप व्यक्ति स्वहित और परहित दोनों के लिए श्रम करता था । सम्यक् श्रम को ही ''आश्रम'' कहा गया था।

QQQ

तृतीयः पाठः

अस्माकं देशः

(भूतकाल की क्रियाएँ)

(हमारा देश भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति के कारण एक ओर संसार में अपनी प्राचीनता का गौरव धारण करता है तो दूसरी ओर अत्याधुनिक विकसित देशों के साथ चलते हुए अपने आधुनिक गौरव से भी सम्पन्न है। किसी समय इस देश की सीमाएँ पूर्व-पश्चिम में बहुत बड़े क्षेत्र को व्याप्त करती थी, भले ही आन्तरिक राज्यों की उपस्थिति यदा-कदा संघर्षात्मक भी होती थी, किन्तु आज यह उपमहादेश कई खण्डों में विभक्त हो चुका है । भारतवर्ष के नाम से अवशिष्ट देश अत्यधिक सम्पन्न एवं महत्त्वपूर्ण है । इस पाठ में देश के प्राचीन और आधुनिक दोनों रूपों का यथार्थ निरूपण है।)

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

वर्षं तद् भारतं प्राहुः भारती यत्र सन्ततिः ॥

अस्माकं देशः भारतवर्षमिति कथ्यते । प्राचीनकालात् अस्य देशस्य प्राकृतिकी समृद्धिः, साहित्यिकं योगदानं, सांस्कृतिकं वैभवं च आश्चर्यकराणि बभूव । अत्रैव वेदानाम् आविर्भावः सप्तसिन्धुप्रदेशे जातः, यत्र भौतिकम् आध्यात्मिकं च चिन्तनम् अद्‌भुतम् आसीत् । उत्तरभारते महाकाव्यानां पुराणानां शास्त्राणां च व्यापकता दक्षिणदेशभागमपि स्वप्रकाशे आनयत्। तत्रापि शिलप्पदिकारम् - प्रभृतयः ग्रन्थाः प्राचीनकालतः एव तमिलसाहित्यस्य गौरवं वर्धितवन्तः । सम्पूर्णस्य भारतस्य सांस्कृतिके एकत्वे पुराणानां योगदानम् अविस्मरणीयम् । इदानीं भारतस्य जने-जने धर्मस्थलानां तीर्थयात्रार्थं योऽभिनिवेशः दृश्यते स नूनं पुराणसाहित्यकृतम् । दक्षिणस्य निवासी बदरीकेदारयात्रां करोति, उत्तरस्य निवासी रामेश्वरं कन्याकुमारीतीर्थं च गन्तुमिच्छति । एवमेव द्वारिकाकामाख्यादिषु स्थलेषु गच्छन्ति तीर्थयात्रिकाः ।

अस्य देशस्य नद्यः पुण्यतोयाः मन्यन्ते, पर्वताः पावनाः कथ्यन्ते, वृक्षाः पूज्यन्ते । प्रकृतिं प्रति भारतीयानाम् आश्चर्यकरम् आकर्षणमासीत् । पूजनीयत्वात् प्रकृतेः प्रदूषणं पापं मन्यते स्म । अतएव पर्यावरणस्य कापि समस्या अत्र नासीत् ।

अस्मिन् देशे विज्ञानस्यापि महती प्रतिष्ठा आसीत् । वास्तुशिल्पिनः विशालानि मन्दिराणि निर्मान्ति स्म । भवनानि भव्यानि क्रियन्ते स्म । आकाशपिण्डानि ज्योतिर्विद्‌भिः अधीयन्ते स्म । अत्र चिकित्साशास्त्रमपि प्रगतिशीलम् । गणितशास्त्रे शून्यस्य कल्पना भारतेन कृता येन दशमलव-गणना प्रारभत, अन्यदेशेष्वपि गता ।

भारतस्य प्राचीनगौरवं मध्यकाले किञ्चित् तिरोहितं पराधीनतया किन्तु सम्प्रति शिक्षिताः सन्तः जनाः आधुनिके विज्ञानेऽपि प्रतिभां दर्शयन्ति । सी. वी. रमण-जगदीशचन्द्र बसु - मेघनाथसाहा - होमी जहांगीर भाभा - विक्रम साराभाई प्रभृतयः वैज्ञानिकाः आधुनिकभारतस्य गौरववर्धकाः । एवं महात्मा-गाँधीसदृशः कर्मवीरः,

रवीन्द्रनाथठाकुरसदृशः साहित्यकारः, अरविन्दसदृशः दार्शनिकः, राधाकृष्णन्सदृशः शिक्षकः, राजेन्द्रप्रसादसदृशः स्थितप्रज्ञः इत्यादयः वर्तमानभारतस्य गौरवरूपाः नेतारः सन्ति ।

सम्प्रति देशस्य विकासः सार्वत्रिकः वर्तते । कृषिक्षेत्रे नवीनाः प्रयोगाः, संचारसाधनानि उत्कृष्टानि अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि विशिष्टं योगदानं स्वास्थ्यं प्रति जनजागरणं, चिकित्सासुविधानां वृद्धिः, सर्वशिक्षाभियानम् इत्यादीनि उल्लेखनीयानि सन्ति। सर्वथापि देशः संसारस्य अग्रगण्येषु गणनीयो वर्तते ।

शब्दार्थः

उत्तरम्	=	उत्तर दिशा में
यत्	=	जो
समुद्रस्य	=	समुद्र का / के / की
हिमाद्रेः	=	हिमालय के
दक्षिणम्	=	दक्षिण दिशा में
वर्षम्	=	देश, वर्ष, वृष्टि
भारतम्	=	भारत (नामक देश)
प्राहुः	=	कहते हैं
भारती	=	भारतीय
यत्र	=	जहाँ
संततिः	=	संतान
अस्माकम्	=	हमारा, हमलोगों का

इति	=	ऐसा
कथ्यते	=	कहा जाता है
प्राचीनकालात्	=	प्राचीन काल से
अस्य	=	इसका
प्राकृतिकी	=	प्राकृतिक
समृद्धिः	=	सम्पन्नता
साहित्यिकम्	=	साहित्य-संबन्धी
सांस्कृतिकम्	=	सांस्कृतिक, संस्कृति से सम्बन्धित
वैभवम्	=	समृद्धि, सम्पन्नता
आश्चर्यकरम्	=	आश्चर्य उत्पन्न करने वाला
बभूव	=	था / हुआ
अत्रैव (अत्र + एव)	=	यहीं
वेदानाम्	=	वेदों का
आविर्भावः	=	जन्म, उत्पत्ति
सप्तसिन्धुप्रदेशे	=	सप्तसैन्धव क्षेत्र में (सिन्धु, झेलम, चेनाब, रावी, व्यास, सतलज व घग्घर (सरस्वती) सात नदियों वाला क्षेत्र)
जातः	=	हुआ

भौतिकम्	=	भौतिक, सांसारिक
आध्यात्मिकम्	=	आध्यात्मिक (आत्मा से सम्बन्धित)
चिन्तनम्	=	चिन्तन, मनन
अद्भुतम्	=	अद्भुत (जो आज से पहले न देखा गया हो)
उत्तरभारते	=	उत्तर भारत में
महाकाव्यानाम्	=	महाकाव्यों का
पुराणानाम्	=	पुराणों का
शास्त्राणाम्	=	शास्त्रों का
व्यापकता	=	विस्तार
दक्षिणम्	=	दक्षिण को
देशभागमपि (देशभागम् + अपि)	=	देश के भाग को भी
स्वप्रकाशे	=	अपने प्रकाश में
आनयत्	=	लाया
तत्रापि (तत्र + अपि)	=	वहीं
शिलप्पदिकारम्	=	शिलप्पदिकारम् (तमिल साहित्य का एक महाकाव्य)
प्रभृतयः	=	इत्यादि
प्राचीनकालतः	=	प्राचीन काल से

Developed by: ABSOL www.absol.in

तमिलसाहित्यस्य	=	तमिल साहित्य का
गौरवम्	=	गौरव को
वर्धितवन्तः	=	बढ़ाये हुए हैं
सम्पूर्णस्य	=	सम्पूर्ण का, समस्त का
भारतस्य	=	भारत का
सांस्कृतिके	=	सांस्कृतिक में
एकत्वे	=	एकता में
अविस्मरणीयम्	=	नहीं भुलाये जाने योग्य (है)
इदानीम्	=	इस समय
जने-जने	=	जन-जन में, लोगों में
धर्मस्थलानाम्	=	धर्म स्थलों का / की / के
तीर्थयात्रार्थम्	=	तीर्थ यात्रा के लिए
योऽभिनिवेशः (यः + अभिनिवेशः)	=	जो लगाव, अभिरुचि
दृश्यते	=	देखा जाता है
नूनम्	=	निश्चित रूप से
पुराणसाहित्यकृतम्	=	पुराण-साहित्य के द्वारा किया गया
दक्षिणस्य निवासी	=	दक्षिण (भारत) के रहनेवाले

बदरीकेदारयात्राम् = बद्री(नाथ) और केदार(नाथ) की यात्रा (को)

उत्तरस्य = उत्तर का

रामेश्वरं कन्याकुमारीं तीर्थं च = रामेश्वर और कन्याकुमारी तीर्थ (को)

गन्तुमिच्छति (गन्तुम् + इच्छति) = जाना चाहता है

एवमेव (एवम् + एव) = उसी प्रकार

द्वारिकाकामाख्यादिषु = द्वारिका, कामाख्या आदि में

स्थलेषु = स्थलों में / पर

तीर्थयात्रिकाः = तीर्थयात्री

नद्यः = नदियाँ

पुण्यतोयाः = पवित्र जलवाली

मन्यन्ते = माने जाते हैं, मानी जाती हैं

पावनाः = पवित्र करने वाले

कथ्यन्ते = कहे जाते हैं

पूज्यन्ते = पूजे जाते हैं

प्रकृतिं प्रति = प्रकृति के प्रति

भारतीयानाम् = भारतीयों का

आकर्षणमासीत् (आकर्षणम्+आसीत्) = आकर्षण था

पूजनीयत्वात्	=	पूज्य होने (के कारण) से
प्रकृतेः	=	प्रकृति का
प्रदूषणम्	=	प्रदूषण
मन्यते स्म	=	माना जाता था
अतएव	=	इसीलिए
पर्यावरणस्य	=	पर्यावरण की
कापि	=	कोई भी
अत्र	=	यहाँ
नासीत् (न + आसीत्)	=	नहीं था
अस्मिन् देशे	=	इस देश में
विज्ञानस्यापि (विज्ञानस्य + अपि)	=	विज्ञान का भी
महती	=	बड़ी
प्रतिष्ठा	=	इज्जत, सम्मान
वास्तुशिल्पिनः	=	वास्तुकार - शिल्पकार (भवन का नक्शा बनानेवाले)
विशालानि मन्दिराणि	=	बड़े मन्दिरों को

निर्मान्ति स्म	=	बनाते थे
भवनानि	=	भवन, मकान
भव्यानि	=	भव्य, सुन्दर, आकर्षक
क्रियन्ते स्म	=	बनाये जाते थे
आकाशपिण्डानि	=	आकाशीय पिण्डों (ग्रह, उपग्रह, नक्षत्रादि) को
ज्योतिर्विद्भिः	=	ज्योतिषियों के द्वारा
अधीयन्ते स्म	=	अध्ययन किये जाते थे
चिकित्साशास्त्रमपि (चिकित्साशास्त्रम् + अपि)	=	चिकित्सा शास्त्र भी
प्रगतिशीलम्	=	प्रगतिशील, लगातार आगे बढ़नेवाला
गणितशास्त्रे	=	गणितशास्त्र में
शून्यस्य	=	शून्य की, (का, के)
भारतेन	=	भारत के द्वारा
कृता	=	किया गया
येन	=	जिससे
दशमलवगणना	=	दशमलव की गणना (गिनती)
प्रारभत	=	आरम्भ हुआ
अन्यदेशेष्वपि (अन्यदेशेषु + अपि)	=	दूसरे देशों में भी

गता	=	गयी
किञ्चित्	=	कुछ
तिरोहितम्	=	लुप्त, गायब
पराधीनतया	=	पराधीनता से, गुलामी से, दूसरे के अधीन रहने से
सम्प्रति	=	इस समय
शिक्षिताः	=	शिक्षित, पढ़े-लिखे लोग
सन्तः	=	होते हुए
आधुनिके	=	आधुनिक में, आज के समय में
विज्ञानेऽपि (विज्ञाने + अपि)	=	विज्ञान में भी
प्रतिभाम्	=	प्रतिभा को
दर्शयन्ति	=	दिखाते हैं
आधुनिकभारतस्य	=	आधुनिक भारत के
गौरववर्धकाः	=	गौरव, प्रतिष्ठा, सम्मान बढ़ानेवाले
सदृशः	=	(के) समान
स्थितप्रज्ञः	=	जिसने आत्मतत्त्व को जान कर स्थिरता प्राप्त कर ली है (समसुखदुःखः)
इत्यादयः	=	इत्यादि
वर्तमानभारतस्य	=	वर्तमान भारत के

गौरवरूपाः = गौरवरूप, प्रतिष्ठा देने वाले

नेतारः = नेता (बहुवचन)

सार्वत्रिकः = सर्वत्र मिलने वाला

कृषिक्षेत्रे = कृषि क्षेत्र में

नवीनाः प्रयोगाः = नये प्रयोग

संचारसाधनानि = संचार के साधन (यथा- दूरभाष, वायुयान इत्यादि)

उत्कृष्टानि = उत्तम

अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि (अन्तरिक्षक्षेत्रे + अपि) = अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी

विशिष्टम् = विशेष

स्वास्थ्यं प्रति = स्वास्थ्य के प्रति

जनजागरणम् = जन-जागरूकता

चिकित्सासुविधानां =चिकित्सा सुविधाओं की

वृद्धिः = बढ़ोत्तरी

सर्वशिक्षाभियानम् = विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में उत्थान के लिए चलाया गया कार्यक्रम

इत्यादीनि = इत्यादि

उल्लेखनीयानि = उल्लेखनीय

सर्वथापि (सर्वथा + अपि)= सभी प्रकार से

अग्रगण्येषु	=	अग्रगण्यों में
गणनीयः	=	गणना-योग्य

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

हिमाद्रेश्चैव	=	हिमाद्रेः + च + एव (विसर्गसन्धिः, वृद्धिसन्धिः)
अत्रैव	=	अत्र + एव (वृद्धिसन्धिः)
योऽभिनिवेशः	=	यः + अभिनिवेशः
नासीत्	=	न + आसीत् (दीर्घसन्धिः)
अन्यदेशेष्वपि	=	अन्यदेशेषु + अपि (यण्-सन्धिः)
विज्ञानेऽपि	=	विज्ञाने + अपि (पूर्वरूप-सन्धिः)
अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि	=	अन्तरिक्षक्षेत्रे + अपि (पूर्वरूप-सन्धिः)
सर्वथापि	=	सर्वथा + अपि (दीर्घ-सन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

प्राहुः = प्र + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

कथ्यते = + यक् (कर्मवाच्यम्), प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

बभूव = √ब्रू लिट्लकार (परोक्षभूत), प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√कथ्

जातः = जन् + क्त, पुँ0, एकवचनम्

√भू

चिन्तनम् = + ल्युट्

√

आसीत् = लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√चिन्त्

व्यापकता = वि + + ण्वुल् + तल् (ता)

√अस्

आनयत् = आ + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√आप्

प्राचीनकालतः = प्राचीनकाल + तसिल् (तः)

√नी

वर्धितवन्तः = + णिच्, क्तवतु, बहुवचनम्

विस्मरणीयम् = वि + + अनीयर्, नपुंसकलिङ्गम्

√वृध्

न विस्मरणीयम् – अविस्मरणीयम् (नञ् समास)

√स्मृ

दृश्यते = + यक् (य), प्रथमपुरुषः, एकवचनम् (कर्मवाच्यम्)

कृतम् = + क्त, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्

√दृश्

करोति = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√कृ

गन्तुम् = + तुमुन्

√कृ

इच्छति = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

√गम्

गच्छन्ति = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√इष्

मन्यन्ते = + यक् (य), लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)

√गम्

कथ्यन्ते = + यक्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)

√मन्

पूज्यन्ते = + यक्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)

√कथ्

निर्मान्ति = निर् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√पूज्

क्रियन्ते = + यक्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)

√मा

अधीयन्ते = अधि + +यक् ,लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)

√कृ

प्रारभत = प्र + आ + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

गता = √इ क्त, स्त्रीलिङ्गम्, एकवचनम्

दर्शयन्ति = + णिच्, √रभ् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

वर्तते = √गम् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् (आत्मनेपदी)

√दृश्

मौखिकः

√वृत्

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत –

हिमाद्रेश्च, प्राहुः, साहित्यिकम्, आविर्भावः, शिलप्पदिकारम् अविस्मरणीयम्, योऽभिनिवेशः, द्वारिकाकामाख्यादिषु, पुण्यतोयाः, वास्तुशिल्पिनः, ज्योतिर्विद्भिः, चिकित्साशास्त्रम्, अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि, अग्रगण्येषु ।

2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत –

अस्माकम्, प्राचीनकालात्, समृद्धिः, वेदानाम्, आध्यात्मिकम्, वर्धितवन्तः, अविस्मरणीयम्, इदानीम्, अभिनिवेशः, गन्तुमिच्छति, पुण्यतोयाः, मन्यन्ते, पूजनीयत्वात्, प्रदूषणम्, आकाशपिण्डानि, ज्योतिर्विद्भिः, अन्यदेशेष्वपि, तिरोहितम्, स्थितप्रज्ञः, सार्वत्रिकः, संचारसाधनानि, जनजागरणम्, सर्वशिक्षाभियानम्, सर्वथापि, गणनीयः ।

3. भारतवर्षस्य विषये दश वाक्यानि स्वमातृभाषायां वदत ।

लिखितः

4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत -

(क) अस्माकं देशस्य नाम किम् ?

(ख) भारतवर्षं हिमालयस्य (हिमाद्रेः) कस्यां दिशायां वर्तते ?

(ग) भारतस्य दक्षिणदिशायां कः सागरः वर्तते ?

(घ) वेदानाम् आविर्भावः कस्मिन् प्रदेशे जातः ?

(ङ) 'शिलप्पदिकारम्' इति कस्याः भाषायाः महाकाव्यम् ?

(च) कस्मात् कारणात् प्रकृतेः प्रदूषणं पापं मन्यते स्म ?

(छ) आकाशपिण्डानि कैः अधीयन्ते स्म ?

(ज) गणितशास्त्रे शून्यस्य कल्पना केन कृता ?

5. समुचितं मेलनं कुरुत -

(क) वेदाः	-	1.	तमिलमहाकाव्यम्
(ख) भारतवर्षम्	-	2.	भारतवर्षे
(ग) शिलप्पदिकारम्	-	3.	ऋक्-यजुः - साम - अथर्व
(घ) शून्यस्य कल्पना	-	4.	राष्ट्रम्
(ङ) सी. वी. रमणः	-	5.	दार्शनिकः
(च) श्री अरविन्दः	-	6.	वैज्ञानिकः
(छ) सर्वशिक्षाभियानम्	-	7.	स्थितप्रज्ञः
(ज) श्रीराजेन्द्र प्रसादः	-	8.	शैक्षिकोत्थानकार्यक्रमः

6. कोष्ठकात् पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) भारतवर्षं हिमालयस्य .... दिशायां वर्तते। (उत्तर, दक्षिण)

(ख) .... निवासी प्रायेण बदरीकेदारयात्रां करोति। (उत्तरस्य/ दक्षिणस्य)

(ग) भारतस्य गौरवं .... काले किञ्चित् तिरोहितम्। (प्राचीने, मध्ये)

(घ) डॉ. होमी जहाँगीर भाभा एकः .... आसीत्। (वैज्ञानिकः / राजनीतिज्ञः)

(ङ) सम्प्रति राष्ट्रस्य विकासः .... । (सार्वत्रिकः / एकाङ्गिकः)

7. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन लिखत -

(क) अस्माकं देशः किं कथ्यते ?

(ख) वेदानाम् आविर्भावः कस्मिन् प्रदेशे जातः ?

(ग) वेदेषु किम् अद्भुतम् आसीत् ?

(घ) कां प्रति भारतीयानाम् आश्चर्यकरम् आकर्षणमासीत् ?

(ङ) भारतवर्षे के विशालानि मन्दिराणि निर्मान्ति स्म ?

(च) गणितशास्त्रे शून्यस्य कल्पना केन कृता ?

8. निम्नलिखितानां पदानां बहुवचनं लिखत -

(क) कथ्यते ....

(ख) आसीत् ....

(ग) वर्धितवान् ....

(घ) करोति ....

(ङ) इच्छति ....

(च) मन्यते ....

(छ) अधीयते ....

(ज) गतः ....

(झ) दर्शयति ....

(ञ) सदृशः ....

(ट) वर्तते ....

9. संस्कृते अनुवादं कुरुत –

(क) हमारा देश 'भारतवर्ष' कहा जाता है।

(ख) यहीं (अत्रैव) सप्तसैन्धव क्षेत्र में वेदों की उत्पत्ति हुई।

(ग) दक्षिण के निवासी प्रायः बद्रीकेदारनाथ की यात्रा करते हैं।

(घ) उत्तर के निवासी रामेश्वर और कन्याकुमारी की यात्रा पर जाना चाहते हैं।

(ङ) इस देश के पर्वत पवित्र कहे जाते हैं।

(च) इस देश में वृक्ष पूजे जाते हैं।

10. पदानि योजयित्वा लिखत –

(क) भारतवर्षम् + इति = ...

(ख) देशभागम् + अपि = ...

(ग) गन्तुम् + इच्छति = ...

(घ) आकर्षणम् + आसीत् = ...

(ङ) चिकित्साशास्त्रम् + अपि = ...

11. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –

(क) कथ्यते, नीयते, मन्यते, अमन्यत, क्रियते ।

(ख) देशः, ग्रन्थः, तीर्थयात्रिकः, जनः, लता ।

(ग) उत्तरम्, दक्षिणम्, भारतवर्षम्, वृक्षः, प्रदूषणम् ।

(घ) कन्या, कुमारी, नदी, विज्ञानम्, समस्या ।

12. अधोलिखितपदेषु प्रकृति-प्रत्ययविभागं कुरुत -

यथा - पदानि	प्रकृतिः		प्रत्ययः
कथयितुम्	कथ् +		तुमुन्
(क) पठितुम्	....	+	....
(ख) गन्तुम्	....	+	....
(ग) हसितुम्	....	+	....
(घ) द्रष्टुम्	....	+	....
(ङ) कर्तुम्	....	+	....

13. विशेष्य - विशेषणयोः उचितं मेलनं कुरुत -

विशेष्य - पदानि	विशेषण - पदानि
(क) चिन्तनम्	1. पवित्राः
(ख) नद्यः	2. महती
(ग) पर्वताः	3. नवीनाः
(घ) प्रतिष्ठा	4. पुण्यतोयाः
(ङ) प्रयोगाः	5. अद्भुतम्

योग्यता-विस्तार

भारतवर्ष का नाम प्राचीन राजा भरत (दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र) के नाम पर पड़ा है। वैदिक युग में भरत एक कबीले (समुदाय) का नाम था। ऋग्वेद में उसकी चर्चा अनेक बार हुई है। भरत नाम के अनेक व्यक्ति पुराणों में हैं किन्तु हमारे देश का नाम **भारत** दुष्यन्तपुत्र के कारण ही पड़ा। अंग्रेजी में इसे (India)कहते हैं जो यूनानी शब्द से निकला है। प्राचीन काल में यूनानी लेखक सिन्धु नदी के आसपास के क्षेत्र को 'इन्दुस्' कहते थे, वही आगे चलकर नदीवाचक नाम से देशवाचक नाम हो गया, जैसे संस्कृत साहित्य में राजा के नाम से देश का नाम पड़ गया। शब्दों का अर्थ कालक्रम से बदलता है, यह स्वाभाविक है।

इस पाठ के आरम्भ में जो श्लोक दिया गया है वह विष्णु पुराण का है। विष्णु पुराण तथा भागवत पुराण में भारतवर्ष की महिमा विस्तार से कही गयी है। विष्णु पुराण में एक अन्य श्लोक है –

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

भारत की ऐसी महत्ता थी कि देवता भी यहाँ जन्म लेने के लिए तरसते थे। यहाँ जलवायु का वैविध्य, प्रदेशों की भिन्नता, पेड़-पौधों का आधिक्य, जल की सुविधा, उर्वरभूमि इत्यादि प्राकृतिक उपादानों का वरदान जम कर मिला है। यही कारण है कि इस देश में भौतिक समृद्धि तथा सारस्वत कार्य के लिए सर्वथा अनुकूल वातावरण मिला। यहाँ के प्राचीन विद्वानों में एक ओर भौतिक विज्ञान के निरीक्षण एवं विकास की क्षमता थी तो दूसरी ओर आध्यात्मिक चिन्तन का उत्कर्ष भी था। विदेशियों की दृष्टि भारत की अपार प्राकृतिक सम्पदा पर आरम्भ से ही लगी रही थी जिसके कारण यह देश हजारों वर्षों तक राजनीतिक दासता झेलता रहा।

आज स्वाधीन भारत में देश के समक्ष अनेक समस्याएँ हैं जिनका समाधान बहुत दूर तक नागरिकों के शुद्ध आचरण, ज्ञान के प्रति अभिरुचि एवं मिलजुल कर रहने से हो सकता है।

QQQ

चतुर्थः पाठः

प्रहेलिकाः

(सन्धि)

(बालकों के बौद्धिक विकास के लिए गणित के समान प्रहेलिकाओं का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है । पाठ्यपुस्तकों में प्रहेलिकाओं का समावेश अत्याधुनिक समय में होने लगा है । इनमें कुछ समस्याएँ दी जाती हैं जिनका समाधान छात्र-छात्राएँ अपनी बुद्धि को लगाकर करते हैं । यह कार्य समुचित बौद्धिक व्यायाम करा देता है । अन्य भाषाओं के समान संस्कृत में प्राचीन काल से ही विभिन्न रूपों की प्रहेलिकाएँ प्रचलित रही है । कुछ प्रहेलिकाएँ तो टीकाओं के बिना समझ में नहीं आतीं किन्तु अपेक्षाकृत सरल होती हैं । प्रस्तुत पाठ में ऐसी पाँच प्रहेलिकाएँ दी गयी हैं ।)

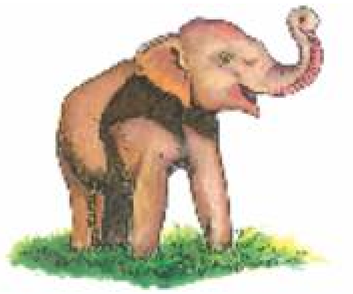

1. रेफ आदौ मकारोऽन्ते वाल्मीकिर्यस्य गायकः ।
   सर्वश्रेष्ठं यस्य राज्यं वद कोऽसौ जनप्रियः ।।
2. मेघश्यामोऽस्मि न कृष्णो, महाकायो न पर्वतः ।
   बलिष्ठोऽस्मि न भीमोऽस्मि, कोऽस्म्यहं नासिकाकरः ।।
3. चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः, महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः ।
   स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि, सीतावियोगी न च रामचन्द्रः ।।

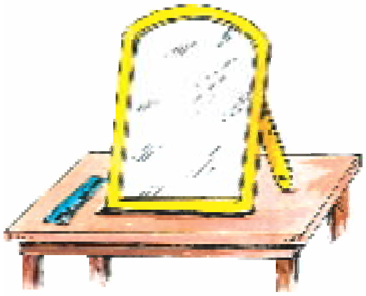

4. दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः ।
गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि परपादेन गच्छति ।।

5. स्वच्छाच्छवदनं लोकाः द्रष्टुमिच्छन्ति मे यदा ।
तत्रात्मानं हि पश्यन्ति खिन्नं, भद्रं यथायथम् ।।

(उत्तराणि – रामः, गजः, वृषभः, उपानह, दर्पणम्)

शब्दार्थः

रेफ = रकार

आदौ = शुरू में

मकारोऽन्ते (मकारः + अन्ते) = मकार अन्त में हो

गायकः = गवैया, गानेवाला

सर्वश्रेष्ठम् = सबसे अच्छा

वद = बोलो

कोऽसौ (कः + असौ) = कौन वह

जनप्रियः = लोकप्रिय

मेघश्यामः = बादल की तरह साँवला

कृष्णः = श्रीकृष्ण

महाकायः = विशाल शरीर वाला

बलिष्ठोऽस्मि (बलिष्ठः + अस्मि) = बलवान हूँ

भीमोऽस्मि (भीमः + अस्मि) = भीम (पाण्डवों में से एक) हूँ, भयंकर हूँ।

कोऽस्म्यहम् (कः + अस्मि + अहम्) = कौन हूँ मैं

नासिकाकरः =नाक रूपी हाथ वाला (कर= हाथ, सूँड़)जिसकी सूँड़ में नाक हो

चक्री = चक्रधारी, चक्र की छाप वाला

त्रिशूली = त्रिशूलधारी, त्रिशूल की छाप वाला

हरो (हरः) = शिव

स्वच्छन्दगामी = स्वतन्त्र रूप से भ्रमण करने वाला

सीतावियोगी = हल से अलग, सीता से अलग

नारदः = देवर्षि, ब्रह्मा जी के पुत्र (जो हमेशा घूमते रहते हैं)

दन्तैर्हीनः (दन्तैः + हीनः) = दाँतों से रहित

शिलाभक्षी = चट्टानों को खाने वाला, उनसे अप्रभावित

निर्जीवः = प्राणरहित

बहुभाषकः = बहुत बोलने वाला

गुणस्यूतिसमृद्धः = धागों (गुण) की सिलाई से युक्त

परपादेन = दूसरों के पैर से

स्वच्छाच्छवदनम् (स्वच्छ + अच्छवदनम्) = साफ व अच्छा मुख

द्रष्टुमिच्छन्ति (द्रष्टुम् + इच्छन्ति) = देखना चाहते हैं

आत्मानम् = अपने को

खिन्नम् = दु:खी / उदास

भद्रम् = अच्छा

यथायथम् = जैसा हो वैसा

सन्धिविच्छेदः

मकारोऽन्ते = मकार: + अन्ते (विसर्ग – सन्धि:)

वाल्मीकिर्यस्य = वाल्मीकि: + यस्य (विसर्ग – सन्धि:)

कोऽसौ = क: + असौ (विसर्ग – सन्धि:)

मेघश्यामोऽस्मि = मेघश्याम: + अस्मि (विसर्ग – सन्धि:)

बलिष्ठोऽस्मि = बलिष्ठ: + अस्मि (विसर्ग – सन्धि:)

भीमोऽस्मि = भीम: + अस्मि (विसर्ग – सन्धि:)

कोऽस्म्यहम् = क: + अस्मि + अहम् (विसर्ग – सन्धि:, यण् सन्धि:)

दन्तैर्हीन: = दन्तै: + हीन: (विसर्ग – सन्धि:)

गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि = गुणस्यूतिसमृद्ध : + अपि (विसर्ग – सन्धि:)

स्वच्छाच्छवदनम् = स्वच्छ + अच्छवदनम् (दीर्घ–सन्धि:)

नारदोऽपि = नारद: + अपि (विसर्ग – सन्धि:)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

वद	=	√वद् , लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्
रुदन्ति	=	√रुद् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
गच्छति	=	√गम् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
द्रष्टुम्	=	√दृश् + तुमुन्
इच्छन्ति	=	√इष् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
पश्यन्ति	=	√दृश् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. निम्नलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत -

मकारोऽन्ते, कोऽसौ, बलिष्ठोऽस्मि, भीमोऽस्मि, दन्तैर्हीनः, गुणस्यूतिसमृद्धः, स्वच्छाच्छवदनम्, द्रष्टुमिच्छन्ति, स्वच्छन्दगामी, नारदोऽपि ।

2. मातृभाषायाम् एकां प्रहेलिकां वदत ।

3. निम्नलिखितानां पदानां द्विवचनं वदत -

इच्छति, पश्यति, वदसि, आगच्छामि, गच्छति, भवति ।

लिखितः

4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत -

(क) कः पशुः नासिकया शाखां त्रोटयति ?

(ख) जना: कस्मिन् स्वमुखं पश्यन्ति ?

(ग) जना: पादयो: किं धारयन्ति ?

(घ) भीमसेन: कीदृश: आसीत् ?

(ङ) क: महाकाय: अत्र वर्णित: ?

(च) क: जनप्रिय: ?

5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् पूर्णवाक्येन लिखत –

(क) कस्य राज्यं सर्वश्रेष्ठम् ?

(ख) श्रीरामचन्द्रस्य पत्नी का आसीत् ?

(ग) गजात् भिन्न: क: मेघवत् श्याम: अस्ति ?

(घ) पादरक्षक: केषां भक्षणं करोति ?

(ङ) लोका: दर्पणे आत्मानं कथं पश्यन्ति ?

(च) वाल्मीकि: कस्य गायक: ?

6. अधोलिखितानां पदानां सन्धिं कुरुत –

(क) वाल्मीकि: + यस्य = ...

(ख) भीम: + अस्मि = ...

(ग) क: + असौ = ...

(घ) दन्तै: + हीन: = ...

(ङ) मकार: + अन्ते = ...

(च) क: + असौ = ...

(छ) नारद: + अपि = ...

7. मञ्जूषाया: उचितपदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत –

निर्जीवो, सीतावियोगी, पर्वतः, पश्यन्ति, कृष्णो, गायकः, विष्णुः

(क) महाकायो न .... ।

(ख) दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी .... बहुभाषकः ।

(ग) .... न च रामचन्द्रः ।

(घ) मेघश्यामोऽस्मि नो .... ।

(ङ) तत्रात्मानं हि .... खिन्नम् ।

(च) वाल्मीकिर्यस्य .... ।

(छ) चक्री त्रिशूली न हरो न .... ।

8. अधोलिखितपदानां बहुवचनं लिखत –

	एकवचनम्		बहुवचनम्
यथा–	चलति	=	चलन्ति
(क)	गच्छति	=	....
(ख)	पश्यति	=	....
(ग)	वदामि	=	....
(घ)	भवसि	=	....
(ङ)	तिष्ठामि	=	....
(च)	इच्छति	=	....
(छ)	नमामि	=	....

9. विपरीतार्थकशब्दयोः सुमेलनं कुरुत –

अ			आ
(क)	खिन्नः	–	1. अन्तः
(ख)	निर्जीवः	–	2. हसन्ति
(ग)	रुदन्ति	–	3. प्रसन्नः
(घ)	आदिः	–	4. सजीवः
(ङ)	कृष्णः	–	5. अल्पभाषकः
(च)	बहुभाषकः	–	6. धवलः

10. अधोलिखितानां शब्दानां लोट्लकारे रूपं लिखत –

	लट्लकारः		लोट्लकारः
यथा –	पठति		पठतु
(क)	पश्यति	–	....
(ख)	गच्छतः	–	....
(ग)	वदति	–	....
(घ)	भवन्ति	–	....
(ङ)	तिष्ठति	–	....
(च)	अस्ति	–	....
(छ)	ददाति	–	....
(ज)	हससि	–	....

11. पुस्तकम् – लता वस्त्रम् – रणधीरः

लेखनी	-	रुणा	उपनेत्रम्	-	मुकेश:
गृहम्	-	शुभाङ्गी	आम्राणि	-	आफताब:
घटी	-	बबीता	अङ्गुलीयकम्	-	ललिता:
			घट:	-	मनोज:

मञ्जूषायां केषाञ्चित् वस्तूनां नामानि सन्ति । पार्श्वे तेषां स्वामिन: अपि निर्दिष्टा:। उदाहरणानुसारं किं कस्य इति निर्दिशत।

यथा - 1. एषा कर्तरी रघुवीरस्य ।

2. .... पुस्तकम् .... ।

3. .... लेखनी .... ।

4. .... गृहम् .... ।

5. .... घटी .... ।

6. .... वस्त्रम् .... ।

7. .... उपनेत्रम् .... ।

8. .... आम्राणि .... ।

9. .... अङ्गुलीयकम् .... ।

10. .... घट: .... ।

योग्यता-विस्तार:

प्रत्याहार - व्याकरण शास्त्र में अक्षरों या प्रत्ययों की सूची को समेटने वाले शब्दों को 'प्रत्याहार' कहते हैं। संक्षेपण की यह प्रक्रिया अत्यन्त प्राचीन है। आचार्य पाणिनि के चौदह सूत्रों के आधार पर वर्णसंबन्धी प्रत्याहार की रचना की जाती है जिसमें दो वर्ण होते हैं । प्रथम वर्ण पूरा वर्ण होता है जबकि दूसरा वर्ण उन चौदह सूत्रों में से किसी के अन्तिम वर्ण के रूप में अर्थात् **'हल्'** होता है । प्रत्याहारों को समझने के लिए पहले

पाणिनि के चौदह सूत्रों को स्मरण रखना आवश्यक है । इन्हें 'प्रत्याहार सूत्र'' भी कहते हैं –

1. अइउण्	2. ऋलृक्	3. एओङ्
4. ऐऔच्	5. हयवरट्	6. लण्
7. ञमङणनम्	8. झभञ्	9. घढधष्
10. जबगडदश्	11. खफछठथचटतव्	12. कपय्
13. शषसर्	14. हल्	

इनसे अक्, अच्, इक्, यण् इत्यादि प्रत्याहार बनते हैं । अक् से निम्नलिखित वर्णों का ग्रहण होता है – अ, इ, उ, ऋ, लृ । इसी प्रकार **अच्** कहने से **अ** से लेकर **औ** तक सभी स्वरवर्ण आ जाते हैं । ध्यान रहे कि हल् वर्णों को प्रत्याहार के भीतर नहीं लिया जाता । कुछ अन्य उदाहरण – इक् = इ उ ऋ लृ ।

यण् = य् व् र् ल् । जश् = ज् ब् ग् ड् द् ।

प्रत्याहारों को बहुत वैज्ञानिक ढंग से सजाया गया है । इन्हें हम आगे चलकर समझेंगे । स्मरणीय है कि **'अच्'** कहने से केवल स्वरवर्णों का और **'हल्'** कहने से सभी व्यञ्जनों का बोध हो जाता है । पाणिनि ने अपने व्याकरण में इन सूत्रों के आधार पर 42 प्रत्याहारों का प्रयोग किया है ।

प्रत्ययों से भी प्रत्याहार बनते हैं जैसे सुप् = प्रातिपदिक से लगने वाले सभी प्रत्यय (सु से लेकर प् तक) । तिङ् = धातु से लगने वाले वे प्रत्यय जो **ति** से लेकर **ङ्** तक (कुल 18) हैं । सुट् आदि प्रत्याहार भी हैं ।

पञ्चमः पाठः

सामाजिकं कार्यम्

(क्त, क्तवतु प्रत्यय)

(समाज व्यक्तियों का समुदाय है। प्रत्येक व्यक्ति के विकास के अनुकूल परिवेश उत्पन्न करना एवं संकट के समय सब की सहायता करना समाज का परम लक्ष्य होता है। आधुनिक युग में भौतिकवाद के विकास से स्वार्थपरता बहुत बढ़ गयी है। इस दृष्टि से समाज के उपर्युक्त लक्ष्य को चुनौती मिल रही है। फिर भी ऐसी बहुत सी संस्थाएँ तथा कुछ व्यक्ति भी समाजोपयोगी कार्यों में लगे हैं। किसी भी संकट का सामना करना, असहाय व्यक्ति को उचित परामर्श एवं सर्वविध सहायता द्वारा उपकृत करना ऐसी संस्थाओं का एवं व्यक्तियों का कार्य है। प्रस्तुत पाठ में इस विषय का विवेचन किया गया है।)

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

[illegible] विकासेन अद्य संसारः पर्याप्तं नाना सुविधाः लभते किन्तु मनुष्येषु सामाजिकः सम्पर्कः क्रमशः अल्पीकृतः। स्वगृहे एव जनः अनेकानि विज्ञानोपकरणानि प्रयुञ्जानः अन्यान् तुच्छान् मन्यते। कदाचित् एतेषाम् उपकरणानाम् अभावे परिवारे सदस्याः एव उपकारकाः अभवन्। क्रमेण मानवस्य एकाकित्वेन स्वार्थवादः उदितः। इदानीं मनुष्यः स्वकीयं हितमेव सर्वोपरि मन्यते। किन्तु समाजस्य सदस्यरूपेण सर्वेषां

कर्त्तव्यं वर्तते यत् एकैकस्य जनस्य हिताहितं चिन्तयेयुः। कश्चित् संकटापन्नः वर्तते, कश्चिन्मार्गे दुर्घटनाग्रस्तः, क्वचित् जलपूरेण सम्पूर्णस्य ग्रामस्य विनाशः, क्वचित् निर्धनः जनः परिवारपालने असमर्थः, क्वचित् वृद्धाः जनाः उपेक्षिताः, कदाचित् गृहेषु अग्निदाहः, क्वचित् यातायातमार्गः अवरुद्धः, क्वचित् मार्गे वृक्षाः पतिताः, क्वचित् अनाथाः शिशवः, दुर्बलाः महिलाश्च सहायताम् अपेक्षन्ते – इत्येवं समाजे नाना समस्याः जनस्य ध्यानाकर्षणाय वर्तन्ते।

एताः स्वार्थिजनेन न समाधेयाः सन्ति, प्रत्युत उपकारपरेण जनेन कल्याणकारिण्या संस्थया वा गृह्यन्ते। सर्वदा न सुखं दृश्यते, संकटोऽपि कस्यापि कुत्रापि भवितुं शक्नोति। एतस्मिन् काले एव सामाजिकं कार्यं जनैः अपेक्षितं भवति। नेदं यत् सामाजिकं कार्यं संकटकाले एव भवति प्रत्युत समाजस्य विकासाय स्वग्रामस्य नगरस्य वा गौरवाय अपि इदं क्रियते। यथा काचित् सामाजिकी संस्था सम्पूर्णं ग्रामं स्वच्छं कुर्यात्, मार्गेषु वृक्षारोपणम्, कूपतडागादिजलाशयानां व्यवस्थाम्, रिक्तेषु क्षेत्रेषु उद्यानानां विन्यासम्, क्वचित् पुस्तकालयस्य, व्यायामशालायाः सामुदायिकभवनस्य वा प्रबन्धनं कुर्यात्। यदि ग्रामे मार्गव्यवस्था नास्ति तदा ग्रामजनानां स्वैच्छिक-श्रमेण मार्गं

निर्मातुं प्रभवन्ति सामाजिकसंस्थाः। तदर्थम् एकोऽपि मनुष्यः कार्यारम्भे समर्थः।

संकटकाले तु सुतरां वर्धते सामाजिकं कार्यम्। क्वचित् निर्धने परिवारे विवाहयोग्यानां किशोरीणां किशोराणां च सामूहिको विवाहोऽपि सार्वजनिकस्थलेषु आयोज्यते। तत्र विवाहस्य सरला रीतिः आडम्बरविहीना दृश्यते। किञ्च काश्चित् संस्थाः निर्धनान् छात्रान् प्रतियोगितापरीक्षार्थं प्रस्तुवन्ति निःशुल्कम्। तदपि महत्त्वपूर्णं कार्यम्। किञ्च क्वचित् यानानां दुर्घटनासु सत्वरं सहायतार्थं समागच्छन्ति, आहतान् चिकित्सालयं प्रापयन्ति, अनाथीभूतान् बालकान् उचितं स्थानं प्रापयन्ति काश्चित् संस्थाः।

भारते वर्षे नदीनां जलपूरेण यदा विनाशलीला दृश्यते, विशेषेण विहारराज्ये, तदानीमपि सामाजिकसंस्थाः दूरस्थाः अपि समागत्य विविधां सहायतां धनजनसामग्रीरूपां कुर्वन्ति। एकैकेनापि पुरुषेण यदि अपरस्योपकारः क्रियते तदा जीवनं सफलं मन्येत। भारतस्य प्राचीनः आदर्शः आसीत् –

"कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्"।

यत्र भारते सर्वे प्राणिनः सहायतां संकटकाले लभन्ते तत्र सम्प्रति मनुष्याः अवश्यमेव उपकर्त्तव्याः।

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थः

अद्य	=	आज
नाना	=	अनेक
लभते	=	प्राप्त करता है
अल्पीकृतः	=	कम हो गया है
प्रयुञ्जानः	=	प्रयोग करते हुए
तुच्छान्	=	नीच, महत्त्वहीन

मन्यते	=	मानता है, समझता है
कदाचित्	=	कभी
उपकारकाः	=	उपकार करने वाले
एकाकित्वेन	=	अकेलापन के कारण
उदितः	=	उत्पन्न हुआ, प्रकट हुआ
इदानीम्	=	इस समय
स्वकीयम्	=	अपना
सर्वोपरि	=	सबसे ऊपर
जलपूरेण	=	जल भरने से, बाढ़ से
क्वचित्	=	कहीं
अवरुद्धः	=	रुका हुआ, बन्द
पतिताः	=	गिरे हुए
शिशवः	=	बच्चे
अनाथाः	=	जिनके माता-पिता नहीं हैं
अपेक्षन्ते	=	चाहते हैं
एवम्	=	इस प्रकार
वर्तन्ते	=	हैं
एताः	=	ये
प्रत्युत	=	अपितु, बल्कि

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

उपकारपरेण	=	दूसरों की भलाई करने वाले (तृतीया विभक्ति)
दृश्यते	=	दिखलाई देता है
कस्यापि	=	किसी का भी
कुत्रापि	=	कहीं भी
भवितुम्	=	होने के लिए, होने में
शक्नोति	=	सकता है
क्रियते	=	किया जाता है
काचित्	=	कोई (स्त्रीलिङ्ग)
कुर्यात्	=	करें
कूपः	=	कुआँ
तडागः	=	तालाब
रिक्तेषु	=	खाली (सप्तमी विभक्ति)
क्षेत्रेषु	=	स्थानों में, विषयों में, खेतों में
उद्यानानाम्	=	बगीचों की
विन्यासम्	=	रचना, निर्माण
निर्मातुम्	=	बनाने के लिए
प्रभवन्ति	=	समर्थ / उत्पन्न होते हैं

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सुतराम्	=	बहुत
वर्धते	=	बढ़ता है
आयोज्यन्ते	=	मनाये जाते हैं, किये जाते हैं
किञ्च	=	इसके अतिरिक्त
सत्वरम्	=	शीघ्र
समागच्छन्ति	=	आते हैं
प्रापयन्ति	=	ले जाते हैं, पहुँचाते हैं
तदानीम्	=	उस समय
दूरस्थाः	=	दूर में रहने वाले
समागत्य	=	आकर
विविधाम्	=	विभिन्न (द्वितीया विभक्ति)
एकैकेनापि	=	एक-एक के द्वारा भी
अपरस्य	=	दूसरे का
कामये	=	कामना करता हूँ
दुःखतप्तानाम्	=	दुःख से आर्तों का, दुःख से पीड़ितों का
यत्र	=	जहाँ
उपकर्त्तव्याः	=	उपकृत करना चाहिए

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

यद्यपि	=	यदि + अपि	(यण् सन्धिः)
विज्ञानोपकरणानि	=	विज्ञान + उपकरणानि	(गुण-सन्धिः)
एकैकस्य	=	एक + एकस्य	(वृद्धि-सन्धिः)
कश्चित्	=	कः + चित्	(विसर्ग-सन्धिः)
संकटापन्नः	=	संकट + आपन्नः	(दीर्घ-सन्धिः)
कश्चिन्मार्गे	=	कः + चित् + मार्गे	(विसर्ग-सन्धिः, व्यञ्जन-सन्धिः)
निर्धनः	=	निः + धनः	(विसर्ग-सन्धिः)
दुर्बलाः	=	दुः + बलाः	(विसर्ग-सन्धिः)
महिलाश्च	=	महिलाः + च	(विसर्ग-सन्धिः)
इत्येवम्	=	इति + एवम्	(यण्-सन्धिः)
ध्यानाकर्षणाय	=	ध्यान + आकर्षणाय	(दीर्घ-सन्धिः)
संकटोऽपि	=	संकटः + अपि	(विसर्ग-सन्धिः)
कस्यापि	=	कस्य + अपि	(दीर्घ-सन्धिः)
कुत्रापि	=	कुत्र + अपि	(दीर्घ-सन्धिः)
नेदम्	=	न + इदम्	(गुण-सन्धिः)
पुस्तकालयस्य	=	पुस्तक + आलयस्य	(दीर्घ-सन्धिः)
नास्ति	=	न + अस्ति	(दीर्घ-सन्धिः)
तदर्थम्	=	तत् + अर्थम्	(व्यञ्जन-सन्धिः)

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

एकोऽपि = एकः + अपि (विसर्ग-सन्धिः)

कार्यारम्भे = कार्य + आरम्भे (दीर्घ-सन्धिः)

किञ्च = किम् + च (व्यंजन-सन्धिः)

काश्चित् = काः + चित् (विसर्ग-सन्धिः)

तदपि = तत् + अपि (व्यञ्जन-सन्धिः)

चिकित्सालयम् = चिकित्सा + आलयम् (दीर्घ-सन्धिः)

एकैकेनापि = एक + एकेन + अपि (वृद्धि-सन्धिः, दीर्घ-सन्धिः)

अपरस्योपकारः = अपरस्य + उपकारः (गुण-सन्धिः)

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

उदितः = उत् + + क्त, (पुँ०), एकवचनम्

कर्तव्यम् = + तव्यत् (नपुं.), एकवचनम्

√इ

अवरुद्धः = अव + + क्त (पुँ०), एकवचनम्

√कृ

पतिताः = + क्त (बहुवचन)

√रुध

भवितुम् = + तुमुन्

√पत

निर्मातुम् = निस् + + तुमुन्

√भू

समागच्छन्ति = सम् + आ + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√मा

समागत्य = सम् + आ + + ल्यप्

√गम्

कुर्वन्ति = लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√गम्

क्रियते = + यक् (आत्मनेपदम्), लट्लकारः, प्रथमपुरुषः,

√कृ

एकवचनम् (कर्मवाच्ये)

√कृ

आसीत् = लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

लभन्ते = आत्मनेपदम्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

√अस्

√लभ्

अभ्यासः

मौखिक :

1. **निम्नलिखितानां शब्दानाम् अर्थं वदत –**

   अल्पीकृतः, प्रयुञ्जानः, एकाकित्वेन, हिताहितम्, कश्चित्, प्रत्युत, सर्वदा, सुतराम्, विन्यासम्, वर्धते, आसीत् ।

2. **निम्नलिखितानां पदानाम् एकवचनरूपं वदत –**

   प्रापयन्ति, प्रभवन्ति, अभवन्, सन्ति, आसन्, समागच्छन्ति, कुर्वन्ति

3. **निम्नलिखितानां पदानां बहुवचनरूपं वदत –**

   विज्ञानोपकरणम्, महिला, जनस्य, बालकाय, ग्रामे, फलम्, नदी

© DSERT
NOT TO BE REPUBLISHED
WEDCOPY

लिखित:

4. **सन्धिं कुरुत –**

   (क) न + इदम् = ...

   (ख) कः + चित् = ...

   (ग) एकः + अपि = ...

(घ) एकेन + अपि = ...

(ङ) निः + धनः = ...

(च) इति + एवम् = ...

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत

महिलाश्च, कश्चिन्मार्गे, एकैकस्य, यद्यपि, किञ्च, काश्चित्, संकटोऽपि ।

6. वाक्यनिर्माणं कुरुत

असमर्थः, इदानीम्, वृद्धः, पतति, गमिष्यामि, वर्तते, आसीत् ।

7. मञ्जूषातः शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

गच्छन्ति, सन्ति, दृश्यते, रोहितः, जनाः, नद्यः

(क) सर्वदा सुखं न .... ।

(ख) जनाः गृहं .... ।

(ग) वृक्षे आम्रफलानि .... ।

(घ) .... छात्रः अस्ति ।

(ङ) .... प्रवहन्ति ।

(च) .... सत्वरं सहायतार्थं समागच्छन्ति ।

8. प्रकृति-प्रत्यय- विभागं कुरुत

भवितुम्, निर्मातुम्, गन्तव्यः, आसन्, समागत्य, पठितः

9. सुमेलनं कुरुत –

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

(क)	मानवस्य एकाकित्वेन	1.	सर्वोपरि मन्यते ।
(ख)	कामये दु:खतप्तानां	2.	स्वार्थवाद: उदित: ।
(ग)	इदानीं मनुष्य: स्वकीयं हितमेव	3.	सम्पूर्णं ग्रामं स्वच्छं कुर्यात् ।
(घ)	काचित् सामाजिकी संस्था	4.	सार्वजनिकस्थलेषु आयोज्यते ।
(ङ)	सामूहिक: विवाह:	5.	प्राणिनामार्तिनाशनम् ।

10. विपरीतार्थकशब्दयो: सुमेलनं कुरुत -

	अ			आ
(क)	गच्छति	-	1.	अनुचितम्
(ख)	उचितम्	-	2.	अकर्तव्य:
(ग)	तदानीम्	-	3.	असफलम्
(घ)	समर्थ:	-	4.	पूर्ण:
(ङ)	रिक्त:	-	5.	असमर्थ:
(च)	सफलम्	-	6.	इदानीम्
(छ)	कर्त्तव्य:	-	7.	आगच्छति

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

11. उदाहरणानुसारम् अव्ययपदानि चिनुत -

यथा - शीला श्व: ग्रामं गमिष्यति - श्व: ।

(क) वैभवी कुत्र गमिष्यति ? .... ।

(ख) शाम्भवी कदा पठिष्यति ?............................ ।

(ग) आयुषी चैतन्यः च लिखतः। .... ।

(घ) जावेदः उच्चैः अहसत्। .... ।

(ङ) जॉनः सर्वदा सत्यं वदति। .... ।

12. रेखाङ्कितपदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं लिखत -

(क) मनुष्येषु सामाजिकः सम्पर्कः क्रमशः अल्पीकृतः।

(ख) समाजस्य सदस्यरूपेण सर्वेषां कर्त्तव्यं वर्तते।

(ग) सर्वेषां जनानां विकासाय कार्यं कर्त्तव्यम्।

(घ) मम ग्रामे एका सामाजिकी संस्था अस्ति।

(ङ) जनैः सामाजिकं कार्यं कर्त्तव्यम्।

13. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां तत्समशब्दान् चिनुत

यथा - गाँव - ग्राम

आग - ....

कुआँ - ....

खेत - ....

पाँचवाँ - ....

सब - ....

बूढ़ा - ....

योग्यता-विस्तारः

भूतकालिक 'क्त', 'क्तवतु' प्रत्यय

संस्कृत भाषा में भूतकालिक ''कृत्'' प्रत्ययों में **क्त** और **क्तवतु** बहुत लोकप्रिय हैं । **क्त** प्रत्यय सामान्यत: कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है जबकि **क्तवतु** कर्तृवाच्य में होता है । यद्यपि क्रिया के रूप में इनका प्रयोग होता है किन्तु संस्कृत की तिङन्त क्रिया के विपरीत इनमें लिङ्ग भी होता है, तिङन्त में लिङ्ग नहीं रहता ।

उदाहरण देखें -

पठ् + क्त = पठित, पुँ॰ - पठित:, स्त्री॰ - पठिता, नपुं. - पठितम् । यदि तिङन्त होता तो अपठत् जैसा एक ही रूप रहता ।

प्रयोग देखें -

बालकेन ग्रन्थः पठितः (लड़के द्वारा ग्रन्थ पढ़ा गया), कर्मवाच्य, **ग्रन्थ:** पुँल्लिङ्ग है इसलिए कर्म के लिङ्ग के अनुसार क्रिया पुँल्लिङ्ग हुई ।

बालकेन कथा पठिता (लड़के द्वारा कहानी पढ़ी गयी) कर्मवाच्य, **कथा** स्त्रीलिङ्ग है, अत: कर्म के लिङ्ग के अनुसार क्रिया स्त्रीलिङ्ग हुई ।

बालकेन पुस्तकं पठितम् (लड़के द्वारा किताब पढ़ी गयी) कर्मवाच्य, **पुस्तकम्** नपुंसकलिङ्ग है, इसलिए क्रिया नपुंसकलिङ्ग में हुई ।

क्त प्रत्यय लगने पर **त** बचता है जो कहीं-कहीं **ट** हो जाता है । कभी-कभी (नियमानुसार) त के पहले इ (इट्) लगता है । जैसे पठित:, कथित:, लिखित:, हसित: इत्यादि । त से ट बनने का उदाहरण -

दृश् + क्त = दृष्ट:, दृष्टा, दृष्टम् ।

प्रच्छ् + क्त = पृष्ट:, पृष्टा, पृष्टम् ।

स्पृश् + क्त = स्पृष्टः, स्पृष्टा, स्पृष्टम् ।

नश् + क्त = नष्टः, नष्टा, नष्टम् ।

क्तवतु प्रत्यय में 'तवत्' शेष रहता है । यह कर्तृवाच्य में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार होता है । जैसे –

पठ् + क्तवतु = पठितवत् (नपुं.), पठितवान् (पुं.), पठितवती (स्त्री०)

वाक्य प्रयोग –

बालकः पुस्तकं पठितवान् (पुं.) ।

शीला पुस्तकं पठितवती (स्त्री.) ।

क्त प्रत्यय से बने शब्दों में वत्, वान्, वती लगाने से इस प्रत्यय का रूप हो जाता है । कर्ता के अनुसार लिङ्ग ही नहीं वचन भी बदलता है । जैसे–

गम् + क्तवतु = गतवत् । बालकौ गृहं गतवन्तौ । छात्राः विद्यालयं गतवन्तः । बालिका आपणं गतवती । बालिके पाठशालां गतवत्यौ । बालिकाः पुस्तकालयं गतवत्यः । क्तवतु स्त्रीलिङ्ग का रूप 'नदी' के समान होता है । कुछ धातुओं के उदाहरण –

	क्त	क्तवतु
पत् (गिरना)	पतितः	पतितवान्
	पतिता	पतितवती
	पतितम्	
दृश् (देखना)	दृष्टः	दृष्टवान्

Developed by: ABSOL www.absol.in

	दृष्टा	दृष्टवती
	दृष्टम्	
श्रु (सुनना)	श्रुतः इत्यादि	श्रुतवान् इत्यादि
ग्रह् (पकड़ना)	गृहीतः	गृहीतवान्
लभ् (पाना)	लब्धः	लब्धवान्
पा (पीना)	पीतः	पीतवान्
कृ (करना)	कृतः	कृतवान्

इस प्रकार प्रायः सभी धातुओं से तीनों लिङ्गों में रूप होते हैं। हिन्दी में भूतकाल बनाने के लिए इन्हीं प्रत्ययों के तद्भव का प्रयोग होता है। जैसे –

गतः – गया

मृतः – मरा

कृतः – किया

प्राप्तः – पाया

QQQ

षष्ठः पाठः

रघुदासस्यलोकबुद्धिः

(लट्लकारः)

(प्रस्तुत पाठ में एक कल्पित कथा दी गयी है जिसमें गाँव से आकर नगर में रहने वाले दो परिवारों का वृत्तान्त है । एक परिवार में बच्चों की संख्या अधिक है और दूसरा बहुत छोटा परिवार है । दोनों की स्थितियों का तुलनात्मक चित्रण करते हुए छोटे परिवार को भाग्यशाली माना गया है। देश के समक्ष वस्तुतः अनियंत्रित जनसंख्या एक समस्या है जिसके कारण प्राकृतिक संसाधन कम पड़ते जा रहे हैं।)

अस्ति रामभद्रनामकं समृद्धं नगरम् । तत्र बहवो जनाः स्व-स्व ग्रामान् परित्यज्य नगरनिवासाय परिवारेण सह समागताः । नगरे नाना सुविधाः सन्तीति न सन्देहः । किन्तु नगरस्य नियमाः ग्रामजनान् पीडयन्ति तत्रैको ग्रामपरिवारः हरिप्रसादस्य निवसति । तस्य प्रतिवेशी च रघुदासः स्वपरिवारेण सह सुखेन तिष्ठति । रघुदासस्य पुत्रः बिन्दुप्रकाशः अति मेधावी वर्तते । विद्यालये सर्वदा कक्षायां प्रथमः आगतः, सम्प्रति नगरस्य महाविद्यालये अधीते । बिन्दुप्रकाशस्य मातापितरौ निजस्य सन्तानस्य उन्नतिं विलोक्य

प्रमुदितौ भवतः। लघुपरिवारस्य कारणात् नातिसम्पन्नोऽपि रघुदासः नगरे सुखी वर्तते। यदा-कदा तद्गृहे ग्रामात् जनाः आगत्य तिष्ठन्ति । किन्तु परिवारः कदापि कष्टं नानुभवति ।

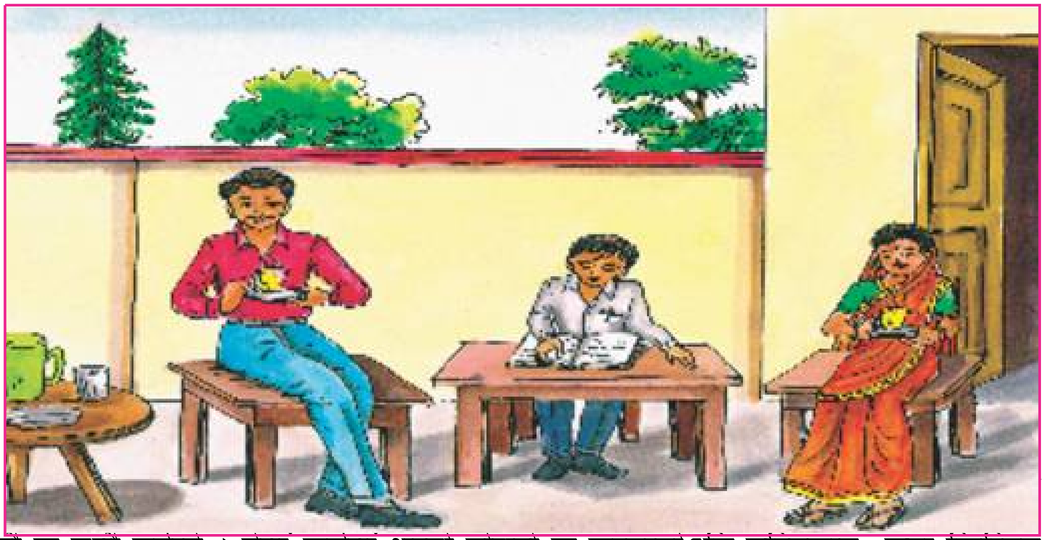

:

द्वौ च पुत्रौ वर्तन्ते । तेषां सर्वेषां भरणं पोषणं च सम्पन्नोऽपि हरिप्रसादः सदा चिन्तितः तिष्ठति । कन्यासु तिस्र एव विद्यालये गच्छन्ति, अपराः तिस्रः प्रवेशिकापरीक्षोत्तीर्णाः गृहे एव तिष्ठन्ति । हरिप्रसादः चिन्तयति यत् अधिकाध्ययनेन तासां विवाहसमस्या महती भविष्यति। गृहे स्थिताः ताः परिवारकार्याणि कुर्वन्ति किन्तु सदा परस्परं कलहं कुर्वन्ति । हरिप्रसादस्य पुत्रौ विद्यालये पठतः किन्तु तयोः महत्वाकांक्षा सदैव पितरं पीडयति । माता तावेव सर्वाधिकं मन्यते । तदवलोक्य कन्याः सर्वाः अपि अतीव दुःखिताः भवन्ति । एवं सम्पन्नः हरिप्रसादः प्रतिवेशिनः रघुदासस्य निर्धनस्यापि प्रसन्नतायै ईर्ष्यति । हरिप्रसादस्य विशालेऽपि गृहे आगताः तस्य ग्रामीणाः न प्रसीदन्ति । एतस्य परिवारस्य दुःखस्य चर्चां ते कुर्वन्ति ।

अन्ततः हरिप्रसादः स्वकीयं विशालं परिवारं सदा निन्दति- "रघुदासस्य

लघुपरिवारः। धिक् मां विशालपरिवारजनकम्। वर्तमानकाले ते एव धन्याः सन्ति येषां जनानां परिवारः अल्पकायः। सत्यमुच्यते –

परिवारस्य सौभाग्यं यत्र संख्या लघीयसी ।
विशालपरिवारस्य भरणे पीडितो जनः ॥
देशेऽपि परिवारेषु जनसंख्यानियन्त्रणात् ।
संसाधनानि सर्वेषां सुलभान्येव सर्वथा ॥''

शब्दार्था :

बहवः	–	अनेक
परित्यज्य	–	छोड़कर
सह	–	साथ
समागताः	–	आये
प्रतिवेशिनः	–	पड़ोसी
अधीते	–	पढ़ता है
विलोक्य	–	देखकर
प्रमुदितौ	–	प्रसन्न
यदा-कदा	–	कभी-कभी
आगत्य	–	आकर
इदानीम्	–	इस समय
सम्प्रति	–	इस समय
तिस्रः	–	तीन (स्त्रीलिङ्ग)

अपरा:	–	दूसरी
महती	–	बहुत
अवलोक्य	–	देखकर
प्रसीदन्ति	–	प्रसन्न होते हैं
ईर्ष्यति	–	डाह करते हैं
लघीयसी	–	छोटी (तुलनात्मक)
अल्पकाय:	–	छोटा
सर्वथा	–	सब प्रकार से
लोकबुद्धि:	–	व्यावहारिक बुद्धि
भरणे	–	पालन करने में

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद:

सन्तीति	=	सन्ति + इति (दीर्घ-सन्धि:)
नातिसम्पन्नोऽपि	=	न +अतिसम्पन्न: + अपि (दीर्घ-सन्धि:, विसर्ग-सन्धि:)
कदापि	=	कदा + अपि (दीर्घ-सन्धि:)
नानुभवति	=	न + अनुभवति (दीर्घ-सन्धि:)
प्रवेशिकापरीक्षोत्तीर्णा:	=	प्रवेशिकापरीक्षा + उत्तीर्णा: (गुणसन्धि:)

तदवलोक्य	=	तत् + अवलोक्य (व्यञ्जनसन्धिः)
विशालेऽपि	=	विशाले + अपि (पूर्वरूपसन्धिः)
सदैव	=	सदा + एव (वृद्धिसन्धिः)
तावेव	=	तौ + एव (अयादिसन्धिः)
सर्वाधिकम्	=	सर्व + अधिकम् (दीर्घसन्धिः)
सुलभान्येव	=	सुलभानि + एव (यण्सन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय, विभागः

परित्यज्य	=	परि + + ल्यप्
समागताः	=	सम् + आ + + क्त (बहुवचनम्)
विलोक्य	=	वि + √त्यज् + ल्यप्
प्रमुदितौ	=	प्र + + √गम् क्त (पुँल्लिंगम्, द्विवचनम्)
आगत्य	=	आ + √लोक् + ल्यप्
उत्तीर्णाः	=	उत् + √मुद् + क्त (बहुवचनम्)
स्थिताः	=	√गम् + क्त (बहुवचनम्)
अवलोक्य	=	अव + √तॄ + ल्यप्
गच्छन्	=	√स्था + शतृ (पुं०)

√लोक्

अभ्यासः

√गम्

मौखिकः

1. उच्चारणं कुरुत -

नातिसम्पन्नोऽपि, नानुभवति, चिन्ताग्रस्तः, प्रवेशिकापरीक्षोत्तीर्णाः, तावेव, तदवलोक्य, निर्धनस्यापि, प्राप्नुयात्।

2. एकपदेन उत्तरं वदत -

(क) रामभद्रनामकं नगरं कीदृशम् अस्ति ?

(ख) हरिप्रसादस्य प्रतिवेशी कः अस्ति ?

(ग) रघुदासस्य पुत्रः कः अस्ति ?

(घ) कस्य द्वौ पुत्रौ स्तः ?

(ङ) हरिप्रसादस्य परिवारे कियत्यः कन्याः सन्ति ?

लिखितः

3. मञ्जूषातः अव्ययपदं चित्वा वाक्यानि पूरयत

एव, च, सदा, अपि, एवम्, अति

(क) तस्य परिवारे षट् कन्या द्वौ .... पुत्रौ वर्तन्ते ।

(ख) कन्यासु तिस्रः .... विद्यालये गच्छन्ति ।

(ग) हरिप्रसादः .... चिन्ताग्रस्तो वर्तते ।

(घ) .... सम्पन्नः हरिप्रसादः प्रतिवेशिनः रघुदासस्य निर्धनस्य प्रसन्नतायै ईर्ष्यति ।

(ङ) बिन्दुप्रकाशः .... मेधावी वर्तते ।

4. निम्नलिखितानां शब्दानां प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -

आगत्य, विहस्य, आगताः, कुर्वन्, तिष्ठन्, पिबन्, मृतः ।

5. अधोलिखितानां शब्दानां प्रयोगेण वाक्यनिर्माणं कुरुत -

गृहे, सदा, जनाः, सह, तत्र, यदा-कदा, वर्तते ।

6. **निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकवाक्येन लिखत –**

(क) रघुदासस्य पुत्रः कीदृशः अस्ति ?

(ख) कस्य मातापितरौ निजस्य सन्तानस्य उन्नतिं विलोक्य प्रमुदितौ भवतः ?

(ग) कः स्वकीयं विशालं परिवारं सदा निन्दति ?

(घ) वर्तमानकाले के जनाः धन्याः ?

(ङ) कस्य परिवारः बहुसंख्यकः अस्ति ?

7. **अधोलिखितानां पदानां लकारं पुरुषं वचनञ्च लिखत –**

	पदानि	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा –	सन्ति	अस्	लट्लकारः	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
तिष्ठन्ति	....	....	....	....	....
भविष्यति	....	....	....	....	....
वर्तते	....	....	....	....	....
भवतः	....	....	....	....	....
अभवत्	....	....	....	....	....
गच्छेयुः	....	....	....	....	....

8. **अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनञ्च लिखत–**

	पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा –	तेषाम्	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्

तासाम्

सन्देह:

कन्यासु

विद्यालये

परिवारस्य

9. विशेष्य - विशेषणयो: उचितं मेलनं कुरुत -

विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि
विशाले	ग्रामपरिवार:
एक:	गृहे
स्वकीयम्	सन्तानस्य
निजस्य	विशालम्
महती	कारणात्
अस्मात्	समस्या

10. उदाहरणमनुसृत्य लकारपरिवर्तनं कुरुत -

वर्तमानकाल:	भूतकाल: (लङ्लकार:)
यथा - तत्र एक: नर: अस्ति	तत्र एक: नर: आसीत्।

(क) सः कुत्र गच्छति ? ………………………………… ।

(ख) ते फलं खादन्ति । ………………………………… ।

(ग) रीता विद्यालये पठति । ………………………………

…. ।

(घ) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति । ………………………………

…. ।

(ङ) सः स्वपरिवारेण सह सुखेन तिष्ठति। ………………………………

… ।

11. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि लिखत –

यथा – गच्छन्ति आगच्छन्ति

सर्वदा ………………….

सम्पन्नः ………………….

निजः ………………….

मूर्खः ………………….

धनवान् ………………….

योग्यता-विस्तारः

Developed by: ABSOL www.absol.in

प्राचीन भारत में निवासियों की संख्या बहुत कम थी। भूखण्डों पर लोग जहाँ-तहाँ बस जाते थे । भूमि के क्रय-विक्रय का प्रश्न नहीं था । विपुल मात्रा में प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों का स्वेच्छा से लोग प्रयोग करते थे । न कहीं जल की कमी थी, न ईन्धन की, न पशुओं की और न स्वोपार्जित अन्न की । परिणाम था कि प्राकृतिक संकट भले आते थे किन्तु सामान्य रूप से लोग तनावमुक्त एवं प्रसन्न रहते थे । ऐसी स्थिति में ही प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में "अष्टपुत्रा भव", पुत्रवती भव इत्यादि आशीर्वचन दिये जाते थे। सबका एक ही तात्पर्य था कि वंशवृद्धि हो, जनसंख्या बढ़े। कालक्रम से जनसंख्या इतनी बढ़ गयी कि प्राकृतिक संसाधन लोगों के लिए कम पड़ने लगे। इतना ही नहीं, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी आदि सभी संसाधन प्रदूषित भी होने लगे। प्रकृति पर नियंत्रण रखने वाले जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों का भयंकर संहार हुआ । विज्ञान ने मानव की सुख- सुविधा तो बढ़ा दी किन्तु समस्त पर्यावरण का प्रदूषण भी बढ़ा दिया। कहा जाता है कि विश्व में जनसंख्या का संतुलित वितरण नहीं है, किसी देश में संसाधनों से कम लोग हैं, तो किसी देश में सभी संसाधन मिल कर भी जनसंख्या की माँग पूरी नहीं कर सकते । हमारे देश में यह दूसरी स्थिति ही है ।

ऐसी स्थिति में जनसंख्या का नियंत्रण बहुत आवश्यक है । प्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसेल ने ज्ञान (Knowledge) तथा बुद्धि (Wisdom) का अन्तर बताते हुए यह उदाहरण दिया है कि ज्ञान ने मृत्युदर पर बहुत नियंत्रण कर लिया है किन्तु उस अनुपात में मनुष्य के पास यह बुद्धि नहीं थी कि जनसंख्या पर भी नियंत्रण किया

जाए। परिणामतः संसार के समक्ष सभी प्राकृतिक संसाधन कम पड़ने लगे । आज समस्त विश्व इस ओर जागरूक हो गया है कि जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाये । हमारा पड़ोसी देश चीन अपनी विशाल जनसंख्या के लिए विश्वविख्यात था किन्तु उसके अधिकारियों ने बुद्धि का अद्‌भुत **उदाहरण** देते हुए जनसंख्या वृद्धि की दर लगभग शून्य तक पहुँचा दी है । हमारे देश में भी इसका अनुकरण करने के प्रयास हो रहे हैं किन्तु समुदाय की सदिच्छा के बिना यह कार्य असम्भव है ।

इस कथा के द्वारा दिखाया गया है कि छोटे परिवार का अपने संसाधनों से अच्छी तरह **भरण-पोषण** किया जा सकता है जिससे सभी सदस्य प्रसन्न रह सकते हैं । बड़े परिवार में संसाधन कितने भी हों उनका वितरण हो जाने पर वे कम पड़ जाते हैं ।

QQQ

सप्तमः पाठः

प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः

(अव्यय-प्रयोग)

(प्राचीन भारत में विभिन्न विधाओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए विश्वविद्यालयों की कल्पना हो चुकी थी। राजाओं ने अनेक ग्रामों की आमदनी इन विश्वविद्यालयों के संचालन के लिए दानपत्र द्वारा निर्धारित कर दी थी । जिस समय यहाँ के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय अपने स्वर्णयुग में थे, विदेशों में एकाध स्थान पर ही ऐसे व्यवस्थित शिक्षालय थे । तक्षशिला, नालन्दा एवं विक्रमशिला - ये तीन विश्वविद्यालय प्राचीन भारत में अनेक शास्त्रों के अध्ययन के लिए विदेशी छात्रों एवं विद्वानों को भी आकृष्ट करते थे । प्रस्तुत पाठ में इनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है ।)

बहूनां शास्त्राणां ज्ञानविषयाणां च यत्र शिक्षा दीयते तस्यैव अभिधानं विश्वविद्यालय इति । तत्र सुयोग्याः अध्यापकाः निष्पक्षभावेन छात्रान् पाठयन्ति । छात्राश्च परीक्षानन्तरमेव तत्र प्रवेशं लभन्ते । विश्वविद्यालयाः ज्ञानकेन्द्राणि भवन्ति । ज्ञानस्य विकासोऽपि तत्र निरन्तरं जायते ।

प्राचीने भारते तक्षशिलायां प्रसिद्धः विश्वविद्यालयः षष्ठशतके ईस्वीपूर्वमेव

Developed by: ABSOL www.absol.in

अवर्तत । बौद्धसाहित्ये तक्षशिलायाः भूयो भूयः उल्लेखो वर्तते । अयं विश्वविद्यालयः गान्धारदेशे आसीत् । तस्य देशस्य तक्षशिलायां राजधानी बभूव । सम्प्रति तक्षशिलायाः भग्नावशेषाः पाकिस्तानदेशे रावलपिण्डीसमीपे सन्ति । अत्र धनुर्वेदस्य, आयुर्वेदस्य तथा अन्यासां विद्यानामपि शिक्षणम् आसीत् । अत्र बुद्धकालिकः वैद्यः जीवकः, वैयाकरणः पाणिनिः, मौर्यराज्यस्य संस्थापकः चन्द्रगुप्तः, कूटनीतिज्ञः चाणक्यः इत्यादयः प्रसिद्धाः छात्राः अधीतवन्तः ।

नालन्दा विश्वविद्यालयः विहारे एव आसीत् । अस्य भग्नावशेषाः विशालक्षेत्रे अवस्थिताः सन्ति । कुमारगुप्तेन पञ्चमशतके खीष्टाब्दे अस्य स्थापना कृता । प्रायः सप्तशतानि वर्षाणि अयम् अवस्थितः । बर्बराणाम् आक्रमणेन अस्य विध्वंसो जातः । अत्रानेके चीनयात्रिकाः बहूनि वर्षाणि अधीतवन्तः । तेषु हुएनसांगः प्रधानः । तेन विश्वविद्यालयस्य विस्तृतं विवरणं दत्तम् । अत्र दशसहस्राणि छात्राः एकसहस्रमध्यापकाः निवसन्ति स्म । यद्यपि बौद्धधर्मे अस्य अभिनिवेशः आसीत् किन्तु बहूनां शास्त्राणामपि वर्णनं स करोति । तानि अत्र पाठ्यन्ते स्म । अस्य

विश्वविद्यालयस्य त्रयः महान्तः पुस्तकालयाः सप्तसु तलेषु अविद्यन्त । भग्नावशेषेण विश्वविद्यालयस्य विशालता ज्ञायते ।

विहारराज्ये एव पालवंशीयेन राज्ञा धर्मपालेन अष्टम-शतके संस्थापितः विक्रमशिला-विश्वविद्यालयः अपि अनेकशास्त्राणां शिक्षणाय प्रसिद्धः आसीत् । अत्रापि नालन्दायामिव चीनतिब्बतादि-देशेभ्यः आगताः छात्राः अधीयते स्म । केचन अध्यापका अपि उभाभ्यां विद्यापीठाभ्यां तिब्बते चीने वा निमन्त्रिताः गच्छन्ति स्म । अस्यापि विक्रमशिलाविश्वविद्यालयस्य विनाशः नालन्दया सार्धं बर्बरैः कृतः धनलुण्ठनाशया । उभौ विश्वविद्यालयौ विहारस्य गौरवभूतौ स्तः ।

शब्दार्थ :

बहूनाम्	-	बहुत का, अनेक का
शास्त्राणाम्	-	शास्त्रों का
ज्ञानविषयाणाम्	-	ज्ञान के विषयों का
दीयते	-	दिया जाता है
तस्यैव (तस्य + एव)	-	उसी का
अभिधानम्	-	नाम
निष्पक्षभावेन	-	निष्पक्ष भाव से, बिना किसी का पक्ष लिए
परीक्षानन्तरमेव	-	परीक्षा के बाद ही
लभन्ते	-	पाते हैं
विकासोऽपि	-	विकास भी
निरन्तरम्	-	हमेशा
जायते	-	होता है

प्राचीने – प्राचीन में, पुराने में

तक्षशिलायाम् – तक्षशिला में

षष्ठशतके – छठी शताब्दी में

ईस्वीपूर्वमेव – ईस्वी पूर्व ही

अवर्तत – हुआ था

बौद्धसाहित्ये – बौद्ध साहित्य में

तक्षशिलायाः – तक्षशिला का/ की

भूयः भूयः – बार-बार

गान्धारदेशे – गान्धार में (वर्तमान पाकिस्तान में)

बभूव – हुआ

सम्प्रति – इस समय (साम्प्रतम् = आजकल)

भग्नावशेषः – खण्डहर

रावलपिण्डीसमीपे – रावलपिण्डी के समीप में

अन्यासाम् – दूसरी का/ के/ की

विद्यानामपि (विद्यानाम् + अपि) –विद्याओं का, विषयों का भी

बुद्धकालिकः – बुद्धकालीन, बुद्ध के समय वाला

वैयाकरणः – व्याकरण के विद्वान

मौर्यराज्यस्य – मौर्य राज्य का, के, की

कूटनीतिज्ञः – कूटनीति जाननेवाला

इत्यादयः	–	इत्यादि
अधीतवन्तः	–	अध्ययन करते थे
अवस्थिता	–	स्थित, रही हुई
पञ्चमशतके	–	पांचवीं शताब्दी में
खीष्टाब्दे	–	ईसवी में
सप्तशतानि	–	सात सौ
वर्षाणि	–	वर्ष (बहुवचन)
बर्बराणाम्	–	बर्बरों के, क्रूरों के
विध्वंसः	–	नाश
अत्रानेके	–	यहाँ अनेक
चीनयात्रिकाः	–	चीनी यात्री
दत्तम्	–	दिया गया
दशसहस्राणि	–	दस हजार
एकसहस्रमध्यापकाः	–	एक हजार अध्यापक
निवसन्ति स्म	–	रहते थे
अभिनिवेशः	–	लगाव, रुचि
शास्त्राणामपि	–	शास्त्रों का भी
तानि	–	वे (नपुंसकलिङ्ग)
पाठ्यन्ते	–	पढ़ाये जाते हैं

त्रयः – तीन (पुँल्लिङ्ग) तिस्रः (स्त्री.) तीन, त्रीणि (नपुं.) तीन

अविद्यन्त – मौजूद थे

विशालता – बड़ा आकार का भाव, भव्यता

ज्ञायते – जाना जाता है

अत्रापि – यहाँ भी

नालन्दायाम् – नालंदा में

आगताः – आये हुए

अधीयते स्म – अध्ययन करते थे

केचन – कोई, कुछ (पुँल्लिङ्ग)

उभाभ्याम् – दोनों से (अपादान कारक)

विद्यापीठाभ्याम् – विद्यापीठों से (अपादान कारक)

अस्यापि – इसका भी

सार्धम् – साथ

धनलुण्ठनाशया (धनलुण्ठन + आशया) – धन को लूटने की आशा से

व्याकरणम्

संधि-विच्छेदः / पद-विच्छेदः

तस्यैव	–	तस्य + एव	(वृद्धि-सन्धिः)
छात्राश्च	–	छात्राः + च	(विसर्ग-सन्धिः)
परीक्षानन्तरमेव	–	परीक्षा + अनन्तरम् + एव	(दीर्घ-सन्धिः)
विकासोऽपि	–	विकासः + अपि	(विसर्ग-सन्धिः)

ईस्वीपूर्वमेव	-	ईस्वीपूर्वम् + एव	
भग्नावशेषाः	-	भग्न + अवशेषाः	(दीर्घ - सन्धिः)
विद्यानामपि	-	विद्यानाम् + अपि	
इत्यादयः	-	इति + आदयः	(यण् - सन्धिः)
अत्रानेके	-	अत्र + अनेके	(दीर्घ-सन्धिः)
शास्त्राणामपि	-	शास्त्राणाम् + अपि	
नालन्दायामिव	-	नालन्दायाम् + इव	
अत्रापि	-	अत्र + अपि	(दीर्घ-सन्धिः)
अस्यापि	-	अस्य + अपि	(दीर्घ-सन्धिः)
यद्यपि	-	यदि + अपि	(यण् - सन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

दीयते	-	√दा + यक्, लट्लकारः,प्रथमपुरुषः,एकवचनम् (कर्मवाच्यम्)
पाठयन्ति	-	√पठ् + णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
लभन्ते	-	√लभ् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (आत्मनेपदी)
भवन्ति	-	√भू लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
जायते	-	√जन् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आसीत्	-	√अस् लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
बभूव	-	√भू लिट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
सन्ति	-	√अस् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

अधीतवन्तः	–	अधि + √इङ् + क्तवतु, पुंल्लिङ्गम्, बहुवचनम्
कृता	–	√कृ + क्त, स्त्रीलिङ्गम्, एकवचनम्
अवस्थिताः	–	अव + √स्था + क्त, पुंल्लिङ्गम्, बहुवचनम्
जातः	–	√जन् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
दत्तम्	–	√दा + क्त नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
निवसन्ति	–	नि + √वस् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
करोति	–	√कृ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
अविद्यन्त	–	√विद् (सत्तायाम्), लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
ज्ञायते	–	√ज्ञा यक्(कर्मवाच्य),लट्लकारः,प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आगताः	–	आ + √गम् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, बहुवचनम्
अधीयन्ते	–	अधि + √इङ् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
गच्छन्ति	–	√गम् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
कृतः	–	√कृ + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
स्तः	–	√अस् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत –**

   शास्त्राणाम्, तस्यैव, निष्पक्षभावेन, परीक्षानन्तरमेव, दशसहस्राणि, भग्नावशेषेण, धनलुण्ठनाशया, गौरवभूतौ ।

2. **अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत –**

   इति, यत्र, जायते, भूयोभूयः, अधीतवन्तः, भग्नावशेषाः, पञ्चमशतके, खीष्टाब्दे, बर्बरैः, उभौ

लिखितः

3. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकेन पदेन लिखत -

(क) तक्षशिला-विश्वविद्यालयः कस्मिन् देशे आसीत् ?

(ख) सम्प्रति तक्षशिलायाः भग्नावशेषाः कुत्र सन्ति ?

(ग) मौर्यराज्यस्य संस्थापकः कः आसीत् ?

(घ) नालन्दा-विश्वविद्यालयस्य भाग्नावशेषाः कुत्र सन्ति ?

(ङ) केन आक्रमणेन नालन्दा-विश्वविद्यालयस्य विध्वंसो जातः ?

4. कोष्ठात् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानम् पूरयत -

(क) षष्ठशतके ईस्वीपूर्वे .... विश्वविद्यालयः अवर्तत ।

(नालन्दा, तक्षशिला)

(ख) नालन्दा विश्वविद्यालयः .... एव आसीत्। (विहारे, उत्तरप्रदेशे)

(ग) कुमारगुप्तः .... विश्वविद्यालयस्य स्थापनां कृतवान् ।

(विक्रमशिला, नालन्दा)

(घ) हुएनसांगः .... देशस्य आसीत् । (अमेरिका, चीन)

(ङ) धर्मपालः .... वंशीयः राजा आसीत् । (पाल, चोल)

5. निम्नलिखितानां शब्दानां प्रयोगेण संस्कृते वाक्यानि रचयत -

अभिधानम्, तक्षशिला, चन्द्रगुप्तः, हुएनसांगः, अध्यापकः ।

6. मेलनं कुरुत –

(क) नालन्दाविश्वविद्यालयः	1. मौर्यवंशः
(ख) हुएनसांगः	2. विहारः
(ग) चन्द्रगुप्तः	3. पालवंशः
(घ) तक्षशिलाविश्वविद्यालयः	4. चीनी–यात्रिकः
(ङ) धर्मपालः	5. गान्धारः

7. रिक्तस्थानानि पूरयत –

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)	पाठयति	पाठयतः	....
(ख)	लभते	....	....
(ग)	वर्तते	वर्तेते	....
(घ)	आसीत्	....	आसन्
(ङ)	अस्ति	....	....

8. अधोलिखितानां पदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

(क) इत्यादयः = ...

(ख) अस्य + अपि = ...

(ग) छात्राश्च = ...

(घ) तस्य + एव = ...

(ङ) अत्र + अनेके = ...

(च) यदि + अपि = ...

(छ) विकासोऽपि = ...

(ज) अत्रापि = ...

9. **प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -**

दीयते, जायते, लभन्ते, आसीत्, करोति, कृतः।

10. **'सत्यम्' अथवा 'असत्यम्' लिखत -**

यथा - विश्वविद्यालयाः ज्ञानकेन्द्राणि भवन्ति। 'सत्यम्'

(क) तक्षशिलाविश्वविद्यालयः गान्धारदेशे आसीत्।

(ख) मौर्यराज्यस्य संस्थापकः धर्मपालः आसीत्।

(ग) नालन्दाविश्वविद्यालयः पाकिस्तानदेशे आसीत्।

(घ) विक्रमशिलाविश्वविद्यालयः धर्मपालेन संस्थापितः।

(ङ) नालन्दाविश्वविद्यालयस्य बर्बराणाम् आक्रमणेन विध्वंसो जातः।

11. **उदाहरणानुसारेण विभक्ति-वचन-निर्णयं कुरुत -**

			विभक्तिः	वचनम्
यथा -	गृहेषु		सप्तमी	बहुवचनम्
(क)	शास्त्राणाम्	-	....	....
(ख)	छात्रान्	-	....	....
(ग)	ज्ञानस्य	-	....	....
(घ)	भारते	-	....	....
(ङ)	देशस्य	-	....	....
(च)	वर्षाणि	-	....	....
(छ)	आक्रमणेन	-	....	....
(ज)	बर्बराणाम्	-	....	....

12. हिन्दीभाषायाम् अनुवदत-

(क) तक्षशिलाविश्वविद्यालयः गान्धारदेशे आसीत् ।

(ख) नालन्दाविश्वविद्यालयस्य कुमारगुप्तेन स्थापना कृता ।

(ग) अत्र सुयोग्याः अध्यापकाः छात्रान् पाठयन्ति ।

(घ) तक्षशिलाविश्वविद्यालयः षष्ठशतके ईस्वीपूर्वमेव अवर्तत ।

(ङ) धर्मपालः पालवंशीयः राजा आसीत् ।

योग्यता-विस्तारः

सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से विश्व में चार देश महत्त्वपूर्ण रहे थे जो आज भी अपने अतीत पर गौरवान्वित हैं। ये हैं – मिस्र, चीन, भारत तथा यूनान । इनमें भारत को 'विश्वगुरु' कहा जाता था क्योंकि यहाँ के प्रतिष्ठित विद्वानों ने अपनी प्रतिभा से विश्व के मानवों को आकृष्ट किया था । प्राचीन ऋषियों के आश्रम ही ज्ञान के केन्द्र नहीं थे अपितु कालान्तर में राजाश्रय से कुछ विद्यापीठों की स्थापना भी हुई । इनमें विविध विषयों के प्रतिभाशाली शिक्षक एवं दूर-दूर के ज्ञानार्थी निवास करते थे ।

इतिहास में सबसे पहला विद्यापीठ पंजाब (पाकिस्तानी पंजाब) की तक्षशिला में था । यहाँ उत्खनन से विद्यापीठ के अवशेष पाये गये हैं । यूनानी लेखकों ने भी इसकी चर्चा अपने विवरणों में की है । कहते हैं प्रसिद्ध आयुर्वेदज्ञ 'जीवक' तथा राजनीतिशास्त्री 'चाणक्य' ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी । जीवक के चमत्कारी कार्यों का वर्णन बौद्ध ग्रन्थों में, विशेष रूप से 'विनयपिटक' में मिलता है । चाणक्य को कौटिल्य या विष्णुगुप्त भी कहते थे । उनका अर्थशास्त्र संस्कृत राजशास्त्र का बहुत प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है ।

वर्तमान भारतीय क्षेत्र में बिहार राज्य के दो प्राचीन विद्यापीठ बहुत विख्यात थे । चीन, तिब्बत इत्यादि देशों से मेधावी छात्र आकर यहाँ अध्ययन करते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेष 1860 ई. के दशक में उत्खनन से अनावृत हुए थे। इन्हें देखकर लोग चकित रह गये कि कितने योजनाबद्ध रूप में यहाँ आवासीय व्यवस्था की गयी थी । इसकी स्थापना पाँचवीं शताब्दी में हुई थी । चीन के तीन प्रसिद्ध यात्रियों ने इसका विवरण दिया है जो यहाँ आकर कई वर्षों तक अध्ययन के लिए रहे थे । फाह्यान चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में (प्राय: 400 ई.) आया था । उसके यात्राविवरण खण्डित रूप में मिले हैं । सबसे अधिक प्रभावशाली विवरण हुएनसांग ने दिया है जो पूरे भारत में घूमा था (629-643 ई.)। नालन्दा विश्वविद्यालय में दो बार आकर उसने सैकड़ों पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ बनाई और उन्हें वह चीन ले गया था । इत्सिंग (671 ई. के आसपास) ने नालन्दा में पढ़ाये जाने वाले विषयों का विशेष रूप से विवरण दिया है तथा शिक्षणपद्धति पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है । इन तीनों यात्रियों के कारण नालन्दा से तिब्बत और चीन का सांस्कृतिक आदान-प्रदान बहुत अधिक बढ़ा जो पाँच - छह सौ वर्षों तक चलता रहा। नालन्दा का विध्वंस 1200 ई. के आस-पास बख्तियार खिलजी की बर्बर सेना ने किया तथा यहाँ के पुस्तकालय जला दिये । इसका वर्णन तिब्बती यात्री ''धर्मस्वामी'' ने किया है।

नालन्दा विश्वविद्यालय के समकालीन भागलपुर के निकट विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी सहयोगी के रूप में विकसित हुआ था । यहाँ भी बौद्ध धर्म तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन होता था यद्यपि यह नालन्दा के समान व्यापक नहीं था। तिब्बती विवरणों में विक्रमशिला की तथा यहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों की बहुत प्रशंसा की गयी है । इसका उत्खनन स्वतंत्र भारत में किया गया जिससे बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हुई है ।

अष्टमः पाठः

नीतिश्लोकाः

(कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य)

(नीतिश्लोक जीवन को सुचारु रूप से चलाने की प्रेरणा देते हैं । संस्कृत में यद्यपि अनेक काव्यों में प्रसङ्गवश नीतिश्लोक आये हैं जैसे रामायण, महाभारत, पञ्चतन्त्र, कालिदास के काव्य आदि में। तथापि कुछ ऐसे संग्रहग्रन्थ हैं जहाँ केवल नीतिश्लोक ही संकलित हैं । जैसे नीतिशतक, चाणक्यनीतिदर्पण इत्यादि । चाणक्यनीतिदर्पण यद्यपि कूटनीतिज्ञ चाणक्य के नाम से प्रचलित है किन्तु यह अनेक कालों में रचे गये नीतिश्लोकों का संकलन है । इनकी भाषा अत्यन्त सरल है, लगभग बोलचाल की संस्कृत भाषा है । इस पाठ में इसी ग्रन्थ से श्लोक दिये गये हैं।)

1. कस्य दोषः कुले नास्ति व्याधिना के न पीडिताः ।
   व्यसनं केन न प्राप्तं कस्य सौख्यं निरन्तरम् ॥(3.1)
2. आचारः कुलमाख्याति देशमाख्याति भाषणम् ।
   सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनम् ॥ (3.2)
3. अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः ।
   उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम् ॥ (8.1)

4. विद्वान् प्रशस्यते लोके विद्वान् सर्वत्र गौरवम् ।
विद्यया लभते सर्व विद्या सर्वत्र पूज्यते ।। (8.20)

5. दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिबेज्जलम् ।
शास्त्रपूतं वदेद्वाक्यं मन:पूतं समाचरेत् ।। (10.2)

6. अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वत: ।
नित्यं सन्निहितो मृत्यु: कर्त्तव्यो धर्मसंग्रह: ।। (12.12)

7. जलबिन्दुनिपातेन क्रमश: पूर्यते घट: ।
स हेतु: सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ।। (12.22)

8. यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो गच्छति मातरम् ।
तथा यच्च कृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति ।। (13.15)

शब्दार्थ:

कस्य = किसका / की / के

कुले = वंश/ खानदान में

व्याधिना = रोग से

केन = किससे, किसके द्वारा

सौख्यम् = मित्रता, दोस्ती

आचार: = चाल-चलन

कुलमाख्याति (कुलम् + आख्याति) = वंश को बताता है

सम्भ्रम : = आदर, श्रद्धा, व्याकुलता

वपु: = शरीर

अधमा: = नीच लोग

महताम्	=	महान् व्यक्तियों का/ की/ के
प्रशस्यते	=	प्रशंसित होता है
लोके	=	संसार में
गौरवम्	=	महत्त्वपूर्ण
पूज्यते	=	पूजी जाती है
अनित्यानि	=	अस्थायी, अस्थिर
विभवो (विभवः)	=	धन–सम्पत्ति, ऐश्वर्य
शाश्वतः	=	स्थायी, सदा रहने वाला
सन्निहितो (सन्निहितः)	=	समीप
कर्त्तव्यो (कर्त्तव्यः)	=	करने योग्य, करना चाहिए
धर्मसंग्रहः	=	धर्म का संचय, धार्मिक कार्य
पूर्यते	=	पूरा होता है, भरता है
हेतुः	=	कारण
सर्वविद्यानाम्	=	सभी विद्याओं का/ की/ के
धेनुसहस्रेषु	=	हजारों गायों में
वत्सो (वत्सः)	=	बछड़ा
मातरम्	=	माता को, माँ के पास
कृतम्	=	किया गया
कर्तारमनुगच्छति (कर्तारम् + अनुगच्छति)	=	कर्ता के पीछे जाता है

दृष्टिपूतम्	=	आँखों से पवित्र अर्थात् अच्छी तरह देखा गया
न्यसेत्	=	रखना चाहिए
पादम्	=	पैर
वस्त्रपूतम्	=	कपड़े से पवित्र किया हुआ अर्थात् छना हुआ
पिबेज्जलम् (पिबेत् + जलम्)	=	जल पीना चाहिए
शास्त्रपूतम्	=	शास्त्रों द्वारा पवित्र किया गया अर्थात् शास्त्रसम्मत
मन:पूतम्	=	मन से पावन किया गया अर्थात् मन से सोचा गया
समाचरेत्	=	आचरण करना चाहिए

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद:/ पदविच्छेद:

नास्ति	=	न + अस्ति	(दीर्घसन्धि:)
वपुराख्याति	=	वपु: + आख्याति	(विसर्गसन्धि:)
पिबेज्जलम्	=	पिबेत् + जलम्	(व्यञ्जनसन्धि:)
वदेद्वाक्यम्	=	वदेत् + वाक्यम्	(व्यञ्जनसन्धि:)
नैव	=	न + एव	(वृद्धिसन्धि:)
यच्च	=	यत् + च	(व्यञ्जनसन्धि:)
कुलमाख्याति	=	कुलम् + आख्याति	
देशमाख्याति	=	देशम् + आख्याति	
स्नेहमाख्याति	=	स्नेहम् + आख्याति	
कर्तारमनुगच्छति	=	कर्तारम् + अनुगच्छति	

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

आख्याति	=	आ + √ख्या लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
इच्छन्ति	=	√इष् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
प्रशस्यते	=	प्र + √शंस् + यक् (कर्मवाच्यम्), प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
लभते	=	√लभ् आत्मनेपदम्, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
पूज्यते	=	√पूज् +यक् (कर्मवाच्यम्), प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
न्यसेत्	=	नि + √अस् विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
पिबेत्	=	√पा (पिब्), विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
वदेत्	=	√वद् विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
समाचरेत्	=	सम् + आ +√चर् , विधिलिङ्लकारः,प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
कर्त्तव्यः	=	√कृ + तव्यत्, पुंल्लिंगम्, एकवचनम्
पूर्यते	=	√पृ + यक् (य) कर्मवाच्यम्, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
अनुगच्छति	=	अनु + √गम् (गच्छ्) लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत ।

2. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत –

आख्याति, वपुः, इच्छन्ति, महताम्, अनित्यम्, निपातेन, अनुगच्छति, वत्सः ।

3. निम्नलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं सन्धिं वा कुरुत –

नैव, वपुराख्याति, पिबेज्जलम्, वदेद्वाक्यम्, यत् + च, न्यसेत् + पादम्

लिखितः

4. एकपदेन उत्तरत -

(क) विद्वान् कुत्र प्रशस्यते ?

(ख) के धनम् इच्छन्ति ।

(ग) महतां धनं किमस्ति ?

(घ) धेनुसहस्रेषु वत्सः कुत्र गच्छति ?

(ङ) वस्त्रपूतं किं पिबेत् ?

5. अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं वचनं च लिखत -

	पदानि	विभक्तिः	वचनम्
यथा-	लोके	सप्तमी	एकवचनम्
	निपातेन	....	....
	धनस्य	....	....
	महताम्	....	....
	व्याधिना	....	....
	कुले	....	....
	मातरम्	....	....
	मानः	....	....

6. अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत –

विद्वान्, आख्याति, व्यसनम्, पूज्यते, घट:, वत्स:, लभते ।

7. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत–

यथा – आचार: कुलं न आख्याति न

(क) विद्या सर्वत्र पूज्यते । ☐

(ख) दृष्टिपूतं पादं न न्यसेत् । ☐

(ग) सर्वे व्याधिना पीडिता: भवन्ति । ☐

(घ) अधमा: मानम् इच्छन्ति । ☐

(ङ) मध्यमा: केवलं धनम् इच्छन्ति । ☐

(च) शरीरम् अनित्यं भवति । ☐

8. अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत –

यथा– दोष: (षष्ठी – एकवचने) – दोषस्य

(क) विद्या (द्वितीया – द्विवचने) ....

(ख) विद्वान् (तृतीया – द्विवचने) ....

(ग) जलम् (सप्तमी – बहुवचने) ....

(घ) भोजनम् (चतुर्थी – एकवचने) ....

(ङ) माता (पञ्चमी – बहुवचने) ....

9. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि लिखत -

दोषः, सौख्यम्, उत्थानम्, विद्या, मानम्, नित्यम्, अधमः

10. लङ्लकारे परिवर्तनं कुरुत -

	लट्लकारः		लङ्लकारः
यथा-	गजः धावति।	-	गजः अधावत् ।
(क)	वत्सः दुग्धं पिबति।	-	.... ।
(ख)	शरीरं नित्यं न अस्ति।	-	.... ।
(ग)	दुग्धं श्वेतं भवति।	-	.... ।
(घ)	सः विद्यालये पठति।	-	.... ।
(ङ)	ते गृहं गच्छन्ति ।	-	.... ।
(च)	बालकौ हसतः।	-	.... ।
(छ)	त्वं किं वदसि ?	-	.... ?

11. मञ्जूषातः पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

अधमः, उत्तमः, मध्यमः, आचारः, कर्त्तव्यः, घटः, अनुगच्छति ।

(क) .... मानम् इच्छति ।

(ख) .... धनम् इच्छति ।

(ग) जलबिन्दुनिपातेन .... पूर्यते ।

(घ) त्वया धर्मसंग्रहः .... ।

(ङ) कृतं कर्म कर्तारम् .... ।

(च) .... धनं मानं च इच्छति ।

(छ) .... कुलम् आख्याति ।

12. वचनपरिवर्तनं कुरुत –

	एकवचनम्		द्विवचनम्	बहुवचनम्
(क)	गच्छति	–	....	....
(ख)	अभवत्	–	....	....
(ग)	अस्ति	–	....	....
(घ)	धनस्य	–	....	....
(ङ)	विद्या	–	....	....
(च)	धनाय	–	....	....

13. समानार्थकानि पदानि मेलयत–

(क)	विद्वान्	–	कारणम्
(ख)	वपुः	–	कुम्भः
(ग)	हेतुः	–	वित्तम्
(घ)	घटः	–	तोयम्
(ङ)	धनम्	–	शरीरम्
(च)	जलम्	–	विज्ञः
(छ)	गृहम्	–	हस्ती
(ज)	गजः	–	सदनम्

योग्यता-विस्तारः

पाठ से सम्बद्ध

जीवन के संतुलित तथा बुद्धिमत्तापूर्वक संचालन के लिए नीति का महत्त्व है । नीति मानव को उन्नत करती है - नयति उन्नतिं नीतिः । प्रस्तुत पाठ में आचार्य चाणक्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ से जो नीतिश्लोक लिए गये हैं उनमें बहुमूल्य जीवनदर्शन निहित है । उन्हें क्रमशः देखें -

श्लोक 1 : दु:ख के समय आश्वासन प्राप्त करना - कोई सदा सुखी नहीं रहता ।

श्लोक 2 : इसमें विभिन्न पदार्थों का कार्यकारण-सम्बन्ध दिया गया है । जैसे - आचरण देखकर किसी के वंश का ज्ञान, भाषा देखकर उसका मूलनिवासस्थान जानना, श्रद्धा देखकर स्नेह को समझना, शरीर देखकर किसी के खान-पान का अनुमान करना ।

श्लोक 3 : उत्तम, मध्यम, अधम व्यक्तियों का अन्तर उनकी कामना से प्रकट होता है कि वे धन या सम्मान या दोनों चाहते हैं ।

श्लोक 4 : विद्या और विद्वान् की महत्ता का निरूपण ।

श्लोक 5 : अपने दैनिक कार्यों में पवित्र करने वाले पदार्थों का परिचय । जैसे- पदविन्यास में दृष्टि का महत्त्व है तो आचरण में मन का महत्त्व है । पूत (पवित्र किया हुआ) का लक्ष्यार्थ सभी स्थितियों में पृथक्-पृथक् है। जैसे- दृष्टिपूत का अर्थ है- **ठीक से देखकर, वस्त्रपूत का अर्थ है**- कपड़े से छानकर, शास्त्रपूत का अर्थ-शास्त्र से विचार करके और मन:पूत का अर्थ है - मन में समझकर ।

श्लोक 6 : संसार की अनित्यता और धर्म की नित्यता का अन्तर यहाँ दिखाया गया है । महाभारत का एक श्लोक इस विषय में उदाहरण-योग्य है -

न जातु कामान् न भयान्न लोभात् ।
धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ।।

धर्मो नित्यः सुखदु:खे त्वनित्ये ।
जीवो नित्यः हेतुरस्य त्वनित्यः ।।

श्लोक 7 : धर्म और धन का संग्रह क्रमशः धैर्यपूर्वक होता है, उतावलेपन से नहीं ।

श्लोक 8 : कर्म का फल अवश्य मिलता है चाहे कोई कहीं भी हो ।

व्याकरण से सम्बद्ध

यहाँ कुछ प्रमुख अव्ययों के अर्थ प्रयोगसहित अतिरिक्त ज्ञान के लिए दिये जाते हैं ।

कालवाचक अव्यय

सर्वदा, निरन्तरम् = हमेशा, सदा। **छात्रः सर्वदा/निरन्तरं विद्याभ्यासं करोति।**

सम्प्रति, अधुना, इदानीम् = इस समय । **सम्प्रति / अधुना / इदानीं गृहं गन्तुं वयम् उत्सुकाः स्मः ।**

ह्यः = बीता हुआ कल । **ह्यः अस्माकं गृहे कः आगतः ?**

श्वः = आने वाला कल । **श्वः मम पिता नगरं गमिष्यति ।**

अद्य = आज । **अद्य कः दिनाङ्कः अस्ति ?**

सायम् = शाम । **सायम् उद्यानस्य भ्रमणं करणीयम् ।**

चिरम् = देर तक । **अध्यक्षः सभायां चिरं तिष्ठति ।**

कदा = कब (कस्मिन् काले)। **त्वं पाटलिपुत्रं कदा गमिष्यसि? बालकः कदा पुस्तकं पठति ?**

यदा, तदा = जब, तब । **यदा मेघः गर्जति तदा मयूरः नृत्यति ।**

ऐषमः = इस वर्ष (अस्मिन् वर्षे)। **ऐषमः वर्षा पर्याप्ता न आसीत् ।**

प्रकारवाचक अव्यय :

शनैः, शनैःशनैः	= धीरे-धीरे । **वृद्धः शनैः / शनैः शनैः चलति ।**
भूयः, मुहुः, पुनः	= फिर । **शिक्षकः भूयः/ मुहुः / पुनः वर्गम् आगच्छति।**
मुहुर्मुहु :	= बार-बार (पुनः पुनः) । **मशकः मुहुर्मुहुः दशति ।**
यथा, तथा	= जिस प्रकार, उसप्रकार । **त्वं यथा करोषि तथा फलं भवति ।**
कथम्	= किस प्रकार, कैसे, क्यों । **त्वं कथं गमिष्यसि, यानेन पदातिः वा ?**
इत्थम्, एवम्	= इस प्रकार (अनेन प्रकारेण) । **इत्थं शिक्षकः कथं मां ताडयति ? सः अस्मान् पाठयति ।**
सम्यक्	= अच्छी तरह । **त्वं सम्यक् जानासि यत् अहं न गतः ।**
कदाचित्	= कभी, शायद । **स कदाचित् अत्र आगतः आसीत् ।**
कदाचिदपि	= कभी भी । **तत्र अहं कदाचिदपि न गतः ।**

QQQ

नवमः पाठः

संकल्पवीरः दशरथ माँझी

(विशेषणों का प्रयोग)

(प्रस्तुत पाठ में बिहार के एक ऐसे कर्मवीर की रोमांचक कथा है जिसने अपने निरन्तर परिश्रम और दृढ़ संकल्पशक्ति से बाईस वर्षों तक एक ही प्रकार का काम करके 360 फुट लम्बी, 30 फुट चौड़ी और 25 फुट ऊँची पर्वत घाटी को काटकर ही विश्राम किया। अपनी पत्नी का मूलतः कष्टनिवारण के लिए उसने ऐसा किया किन्तु पूरे क्षेत्र के कल्याण का यह कार्य हो गया। अत्यन्त निर्धन और सामाजिक दृष्टि से निम्न वर्ग के दशरथ माँझी ने जो कार्य किया वह सभी लोगों के लिए अनुकरणीय है।)

जयन्ति कर्मवीरास्ते कृतभूरिपरिश्रमाः।
सर्वेषामुपकाराय येषां संकल्पसिद्धयः॥

दुर्बलकायः, स्वेदमुखः, रिक्तोदरः, कौपीनवसनः, कृषिकः ग्रामक्षेत्रेषु सर्वदा श्रमं करोति । ग्रामेषु प्रायेणार्थव्यवस्थायाः आधारः कृषिरेव वर्तते । किन्तु कृषिकाः आवश्यकवस्तूनि क्रेतुं निकटस्थान् हट्टान् आपणान् च गच्छन्ति । विहारप्रान्तस्य गयामण्डले उटजप्रधाने ग्रामे गहलौरनामके कश्चित् कृषिश्रमिकः न्यवसत् । तस्य नाम

दशरथ माँझी इत्यासीत् । अतीव परिश्रमी संकल्पवान् चासीत् । सः तस्य ग्रामः राजगीर-पर्वतमालायाः एकभागे अवर्तत । तस्य ग्रामस्य आपणस्थानं वजीरगंजे आसीत्। उभयोः स्थानयोः मध्ये पर्वतस्य संकीर्णः मार्गः बाधारूपः अभवत् । पदयात्रिकाः अपि भारेण सह तस्मिन् मार्गे चलितुं समर्थाः नासन् ।

ग्रामे यद्यपि सर्वे श्रमिकाः कृषिकाश्च तां बाधाम् अनुभूतवन्तः किन्तु केषामपि हृदये मार्गस्य विस्तारीकरणे नासीत् उत्साहः, न च संकल्पः । एकदा दशरथस्य पत्नी जलपूर्णं घटं नीत्वा तस्मिन् संकीर्णे मार्गे अगच्छत्, घटश्च भग्नो जातः। एतया घटनया दशरथस्य मानसे संकल्पः उत्पन्नः, मार्गमेतम् अहमेव विस्तीर्णं करिष्यामि । पर्वतस्य कठोरस्यापि अहंकारं विनाश्य जनहिताय विस्तीर्णं मार्गं निर्मास्यामि ।

अनेन संकल्पेन दशरथं प्रति ग्रामीणाः जनाः उपहासं कृतवन्तः । किन्तु निरक्षरोऽपि दशरथः दृढसंकल्पवान् जातः । यद्यपि स कुठारेण काष्ठानयनस्य कार्याणि कृत्वा क्षेत्राणां कर्षणं च कृत्वा जीवनं यापयति, तथापि तस्मात् दिवसात् प्रस्तरछेदनाय अपि उपकरणानि क्रीत्वा स स्वसंकल्पस्य पूरणे प्रवृत्तः । दिनानि व्यतीतानि, वर्षाणि च गतानि । शनैःशनैः अस्य श्रमिकस्य परिश्रमः प्रत्यक्षो जातः । द्वाविंशतिवर्षेषु एकः विस्तीर्णः मार्गः पर्वतमध्ये निर्मितः, नात्र कस्यापि शारीरिकः सहयोगः प्राप्तः । प्रस्तरखण्डानि भग्नानि । गहलौरात् वजीरगंजस्य मार्गः अल्पीभूतः । एतेषु वर्षेषु दशरथ माँझी बहून् सम्मानान् लब्धवान् । पर्वतमार्गश्च तस्य नाम्ना अभिहितः । ग्रामे प्रशासनेन तदनु सामुदायिकं भवनं निर्मितं चिकित्सालयश्च तस्य नाम्ना स्थापितः । राज्यप्रशासनं तस्मै **'पर्वतपुरुष'** इति सम्मानोपाधिम् अयच्छत् । दशरथस्य उदाहरणेन स्पष्टं भवति यत् कोऽपि जनः दृढेन संकल्पेन कठिनं किञ्च असम्भवमपि कार्यं कृत्वा यशो लभते । एतादृशाः कर्मवीराः एव समाजस्य वास्तविकाः सेवकाः ।

शब्दार्थः

कृतभूरिपरिश्रमाः	=	जिन्होंने खूब परिश्रम किये हैं
सर्वेषाम्	=	सब का/ की / के
उपकाराय	=	उपकार के लिए
संकल्पसिद्धयः	=	संकल्पित कार्य के फल
दुर्बलकायः	=	दुबले शरीर वाला
स्वेदमुखः	=	पसीना युक्त मुँह
रिक्तोदरः	=	खाली पेट
कौपीनवसनः	=	लँगोटी धारण किये हुए
कृषिकः	=	किसान
ग्रामक्षेत्रेषु	=	ग्रामीण इलाकों में
क्रेतुम्	=	खरीदने हेतु
निकटस्थान्	=	समीप स्थित (को)
हट्टान्	=	हाटों को
आपणान्	=	दुकानों को
उटजप्रधाने	=	झोपड़ी बहुल
कृषिश्रमिकः	=	खेतिहर मजदूर
न्यवसत्	=	निवास करता था
संकीर्णः	=	सँकरा, तंग

बाधारूप:	=	बाधा पहुँचाने वाला
पदयात्रिका:	=	पदयात्री लोग, पैदल चलने वाले
चलितुम्	=	चलने में
अनुभूतवन्त:	=	अनुभव करते थे
विस्तारीकरणे	=	चौड़ा करने में
नीत्वा	=	लेकर
भग्नो (भग्न:) जात:	=	टूट गया
मानसे	=	मन में
मार्गमेतम् (मार्गम्+एतम्)	=	इस रास्ते को
अहमेव (अहम् + एव)	=	मैं ही
विनाश्य	=	नाश / समाप्त करके
निर्मास्यामि	=	बनाऊँगा, निर्माण करूँगा
उपहासम्	=	मजाक
दृढसंकल्पवान्	=	दृढ़ निश्चय वाला
काष्ठानयनस्य	=	लकड़ी ढोने का
कुठारेण	=	कुल्हाड़ी से
कर्षणम्	=	जुताई
क्षेत्राणाम्	=	खेतों का / की / के
यापयति	=	बिताता है

प्रस्तरछेदनाय	=	पत्थर काटने के लिए
पूरणे	=	पूरा करने में
प्रवृत्तः	=	लग गया
व्यतीतानि	=	बिताये गये / बीत गये
गतानि	=	चले गये, बीते
अल्पीभूतः	=	छोटा हो गया
द्वाविंशतिवर्षेषु	=	बाइस वर्षों में
नाम्ना	=	नाम से
अभिहितः	=	पुकारा गया
तदनु	=	उसके बाद
अयच्छत्	=	दिया
किञ्च	=	इसके अतिरिक्त
एतादृशाः	=	इस प्रकार के

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

कर्मवीरास्ते	=	कर्मवीराः + ते (विसर्ग-सन्धिः)
रिक्तोदरः	=	रिक्त + उदरः (गुण-सन्धिः)
प्रायेणार्थव्यवस्थायाः	=	प्रायेण + अर्थव्यवस्थायाः (दीर्घ-सन्धिः)
कृषिरेव	=	कृषिः + एव (विसर्ग-सन्धिः)

इत्यासीत्	=	इति + आसीत् (यण्-सन्धिः)
चासीत्	=	च + आसीत् (दीर्घ-सन्धिः)
यद्यपि	=	यदि + अपि (यण्-सन्धिः)
नासन्	=	न + आसन् (दीर्घ-सन्धिः)
कृषिकाश्च	=	कृषिकाः + च (विसर्ग-सन्धिः)
कठोरस्यापि	=	कठोरस्य + अपि (दीर्घ- सन्धिः)
निरक्षरोऽपि	=	निः + अक्षरः + अपि (विसर्ग-सन्धिः)
काष्ठानयनस्य	=	काष्ठ + आनयनस्य (दीर्घ-सन्धिः)
तथापि	=	तथा + अपि (दीर्घ-सन्धिः)
कस्यापि	=	कस्य + अपि (दीर्घ-सन्धिः)
चिकित्सालयश्च	=	चिकित्सा + आलयः + च (दीर्घ-सन्धिः)
सम्मानोपाधिम्	=	सम्मान + उपाधिम् (गुण-सन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभाग :

करोति	=	$\sqrt{\text{कृ}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
वर्तते	=	$\sqrt{\text{वृत्}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
क्रेतुम्	=	$\sqrt{\text{क्री}}$ + तुमुन्
गच्छन्ति	=	$\sqrt{\text{गम्}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
न्यवसत्	=	नि + $\sqrt{\text{वस्}}$ लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आसीत्	=	$\sqrt{\text{अस्}}$ लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

संकल्पवान्	=	संकल्प + मतुप्
अवर्तत	=	√वृत् लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
चलितुम्	=	√चल् + तुमुन्
अनुभूतवन्तः	=	अनु + √भू + क्तवतु, पुँल्लिङ्गम्, बहुवचनम्
नीत्वा	=	√नी + क्त्वा
अगच्छत्	=	√गम् लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
जातः	=	√जन् + क्त, पुं., एकवचनम्
करिष्यामि	=	√कृ लृट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
विनाश्य	=	वि + √नश् + णिच् + ल्यप्
निर्मास्यामि	=	निर् + √मा लृट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
कृतवन्तः	=	√कृ + क्तवतु, पुंल्लिङ्गम्, बहुवचनम्
कृत्वा	=	√कृ + क्त्वा
यापयति	=	√या + णिच्,पुगागमः,लट्लकारः,प्रथमपुरुषः,एकवचनम्
क्रीत्वा	=	√क्री + क्त्वा
प्रवृत्तः	=	प्र + √वृत् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
गतानि	=	√गम् + क्त, नपुंसकलिङ्गम्, बहुवचनम्
निर्मितः	=	निर् + √मा + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
प्राप्तः	=	प्र + √आप् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
लब्धवान्	=	√लभ् + क्तवतु, पुंल्लिङ्गम्, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभिहितः	=	अभि + √धा + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
स्थापितः	=	√स्था + णिच् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
अयच्छत्	=	√दाण् (यच्छ्) लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
भवति	=	√भू लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
लभते	=	√लभ् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्, आत्मनेपदी

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां शब्दानाम् उच्चारणं कुरुत –

रिक्तोदरः आपणस्थानम्, इत्यासीत्, प्रायेणार्थव्यवस्थायाः, हट्टान्, निर्मास्यामि, द्वाविंशतिवर्षेषु, असम्भवमपि, सम्मानोपाधिम् ।

2. कृषिकस्य विषये संस्कृतभाषायां द्वे वाक्ये वदत ।

3. निम्नलिखितानां शब्दानाम् अर्थं वदत –

हट्टान्, कौपीनः, स्वेदः आपणम्, चलितुम्, कर्षणम्, अयच्छत् ।

लिखित :

4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकेन पदेन लिखत –

(क) अस्मिन् पाठे संकल्पवीरः कः ?

(ख) सम्प्रति भारतवर्षे ग्रामीणक्षेत्रे अर्थव्यवस्थायाः मुख्याधार कः ?

(ग) ग्रामीणक्षेत्रे कृषिकाः आवश्यकवस्तूनि क्रेतुं कुत्र गच्छन्ति ?

(घ) दशरथ माँझी कस्मिन् ग्रामे वसति स्म ?

(ङ) राज्यप्रशासनं कस्मै 'पर्वतपुरुष' इति सम्मानोपाधिम् अयच्छत् ?

5. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन लिखत –

(क) दशरथ माँझी कीदृशः आसीत् ?

(ख) दशरथ माँझी–महोदयस्य ग्रामः कुत्र स्थितः आसीत् ?

(ग) कयोः स्थानयोः मध्ये पर्वतस्य संकीर्णः मार्गः बाधारूपः आसीत् ?

(घ) कं प्रति ग्रामीणाः जनाः उपहासं कृतवन्तः ?

(ङ) दशरथस्य उदाहरणेन का शिक्षा मिलति ?

(च) कस्याः कष्टं दृष्ट्वा दशरथः संकल्पं कृतवान् ?

6. मञ्जूषायाः उचितपदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत –

वजीरगंजे, संकीर्णः, कृषिरेव, दशरथ माँझी, राजगीर पर्वतमालायाः, गहलौर, अल्पीभूतः

(क) ग्रामेषु प्रायेणार्थव्यवस्थायाः आधारः .... वर्तते ।

(ख) तस्य ग्रामस्य आपणस्थानं .... आसीत् ।

(ग) गहलौरात् वजीरगंजस्य मार्ग : .... ।

(घ) उभयोः स्थानयोः मध्ये पर्वतस्य .... मार्गः बाधारूपः अभवत्।

(ङ) तस्य ग्रामः .... एकभागे अवर्तत ।

(च) उटजप्रधाने ग्रामे .... नामके कश्चित् कृषिश्रमिकः न्यवसत् ।

(छ) तस्य नाम .... इत्यासीत् ।

7. अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं वचनं च लिखत–

	पदानि	विभक्तिः	वचनम्
यथा–	क्षेत्रेषु	सप्तमी	बहुवचनम्
(क)	ग्रामेषु	....	....

(ख) दुर्बलकाय: ....

(ग) क्षेत्राणाम् ....

(घ) तस्मात् ....

(ङ) नाम्ना ....

(च) तस्य ....

(छ) पर्वतस्य ....

(ज) तस्मिन् ....

8. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत -

सर्वदा, कृषिक:, उभयो:, ग्रामेषु, अतीव ।

9. सुमेलनं कुरुत -

अ	आ
(क) जात:	1. √नी + क्त्वा
(ख) दृष्ट:	2. √जन् + क्त
(ग) नीत्वा	3. √दृश् + क्त्वा
(घ) क्रीत्वा	4. √गम् + क्त्वा
(ङ) गत्वा	5. √दृश् + क्त
(च) दृष्ट्वा	6. √क्री + क्त्वा

10. अधोलिखितानां पदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत -

(क) यदि + अपि = ... ।

(ख) .... + ... = चासीत् ।

(ग) न + आसन् = ... ।

(घ) .... + ... = रिक्तोदरः ।

(ङ) इति + आसीत् = ... ।

(च) .... + ... = कश्चित् ।

11. वचन – परिवर्तनं कुरुत –

	एकवचनम्		बहुवचनम्
यथा-	करोति		कुर्वन्ति
(क)	गच्छति	–	....
(ख)	आसीत्	–	....
(ग)	वर्त्तते	–	....
(घ)	अगच्छत्	–	....
(ङ)	करिष्यामि	–	....
(च)	अकरोत्	–	....
(छ)	रक्षतु	–	....
(ज)	भवसि	–	....

12. उदाहरणानुसारं अव्ययपदानि चिनुत –

यथा – दुर्बलकायः कृषिकः ग्रामक्षेत्रेषु सर्वदा श्रमं करोति । – सर्वदा

(क) ग्रामेषु अर्थव्यवस्थायाः आधारः प्रायेण कृषिः वर्त्तते । ....

(ख) दशरथः परिश्रमी संकल्पवान् च आसीत् । ....

(ग) शनैः शनैः अस्य श्रमिकस्य परिश्रमः प्रत्यक्षो जातः । ....

(घ) एतादृशाः कर्मवीराः एव समाजस्य वास्तविकाः सेवकाः । ....

(ङ) यात्रिकाः अपि चलितुम् असमर्थाः आसन् । ....

योग्यता-विस्तारः

पाठ से सम्बद्ध

भारत कृषिप्रधान देश रहा है । आज के अतिशय वैज्ञानिक युग में भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही है । कृषि अनेक उपादानों पर आश्रित होती है जैसे खेतिहर किसान (खेत का मालिक), भूमिरहित श्रमिक, हल-बैल (अथवा आज के युग में ट्रैक्टर), बीज, सिंचाई की व्यवस्था, वर्षा इत्यादि । मानव संसाधन की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान उस श्रमिक या मजदूर का होता है जो सभी संकटों को सहते हुए खेतों में परिश्रम करता है, आवश्यकता से भी कम मजदूरी पर काम करता हुआ मौसम के उत्पातों को भी झेलता है । वह वस्तुतः कर्मवीर है । ऐसे ही कर्मवीर दशरथ मांझी थे । वे सामान्य मजदूरों के समान अज्ञात रह जाते यदि अपने संकल्प की दृढ़शक्ति से पर्वत काटकर अकेला ही एक लम्बी सड़क नहीं बना लेते । इस संकल्पवीर का नाम फिर तो अखबारों की सुर्खियों में आ गया । पहाड़ की संकीर्ण घाटी को 360 फुट लम्बाई, 30 फुट चौड़ाई और 25 फुट ऊँचाई में काटकर उन्होंने ऐसी सड़क का निर्माण किया जिसके लिए सरकारी योजना में करोड़ों खर्च होते । इस काम में दशरथ मांझी को अपनी जीविका के लिए मजदूरी करने से बचे हुए समय का उपयोग करना पड़ा और 22 वर्षों का लम्बा समय लगा । अपने सहयोगियों, ग्रामवासियों तथा संभ्रान्त लोगों का उपहास सह कर भी यह कर्मवीर अपने काम में लगा रहा । वह एक अनुकरणीय महापुरुष बन गया। कर्म से सफलता और यश पाने वालों में दशरथ मांझी अमर है ।

व्याकरण से सम्बद्ध

स्थानवाचक अव्यय

अत्र	=	यहाँ (अस्मिन् स्थाने) । **अत्र** पञ्च वृक्षा: सन्ति ।
यत्र, तत्र	=	जहाँ, वहाँ । **यत्र** राम: अस्ति **तत्र** लक्ष्मण: अपि वर्तते ।
यत्र – तत्र	=	जहाँ–तहाँ । अस्मिन् नगरे **यत्र–तत्र** उद्यानानि सन्ति ।
कुत्र	=	कहाँ (कस्मिन् स्थाने) । तव माता **कुत्र** कार्यं करोति ?
सर्वत्र	=	सब जगह । भारते **सर्वत्र** शिक्षाप्रसार: दृश्यते ।
बहि:	=	बाहर । ग्रामात् **बहि:** नदी वहति ।
अन्तरा	=	बीच में । रामं लक्ष्मणं च **अन्तरा** सीता गच्छति ।
अध:	=	नीचे । वृक्षस्य **अध:** कुटी वर्तते ।
निकषा	=	निकट । विद्यालयं **निकषा** सरोवर: अस्ति ।
अन्यत्र	=	दूसरी जगह । नगरात् **अन्यत्र** नास्ति काचित् सुविधा ।
पुर:, पुरत:, अग्रे	=	सामने । गुरो: **पुर:** / **पुरत:** / **अग्रे** इदं कार्यं न शोभते ।

परिमाणवाचक अव्यय

किञ्चित्	=	कुछ । **किञ्चित्** अग्रे पश्य ।
ईषत्	=	थोड़ा । अयं बालक: **ईषत्** रुग्ण: वर्तते ।
प्रकामं भृशम्	=	पर्याप्त, भरपूर । अस्मिन् वर्षे वर्षा **प्रकामं** / भृशं भवति ।
कृतम्, अलम्	=	बस। **कृतं कृतं/अलम् अलं**, न अहम् अधिकं खादिष्यामि

संयोजक अव्यय

च	=	और । इसका प्रयोग जुड़े हुए शब्दों के बाद होता है।
		जैसे – रामः लक्ष्मणः **च** पठतः ।
अपि	=	भी । अहम् **अपि** गमिष्यामि ।
एव	=	ही । त्वम् **एव** मम कार्यं करिष्यसि ।
वा	=	अथवा । सीता मन्दिरा **वा** गच्छतु ।
परन्तु, किन्तु	=	लेकिन । यद्यपि सर्वे समानाः **किन्तु** मोहनः श्रेष्ठः ।
अपितु, प्रत्युत	=	बल्कि । अयं न केवलः मेधावी, **अपितु** / **प्रत्युत** महान् परोपकारी ।

QQQ

दशमः पाठः

गुरु-शिष्य-संवादः

(संस्कृत का वाग्व्यवहार)

(प्रस्तुत पाठ में कक्षा के भीतर शिक्षक और छात्रों के संवाद के रूप में दो विषयों पर प्रकाश डाला गया है जिनमें पहला है विद्या का महत्त्व । विद्या को आधुनिक युग में शिक्षा के व्यापक परिवेश में लिया जाता है । दूसरी बात जो इस संवाद में अंकित की गयी है वह है किशोरों की मनोवृत्ति और उनका जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण । जीवन कौशल को विकसित करने के लिए उन्हें किन बातों पर ध्यान देना है, उन्हें यहाँ शिक्षक द्वारा बताया गया है । इस संवादात्मक पाठ का अभिनय भी लघु स्तर पर किया जा सकता है ।)

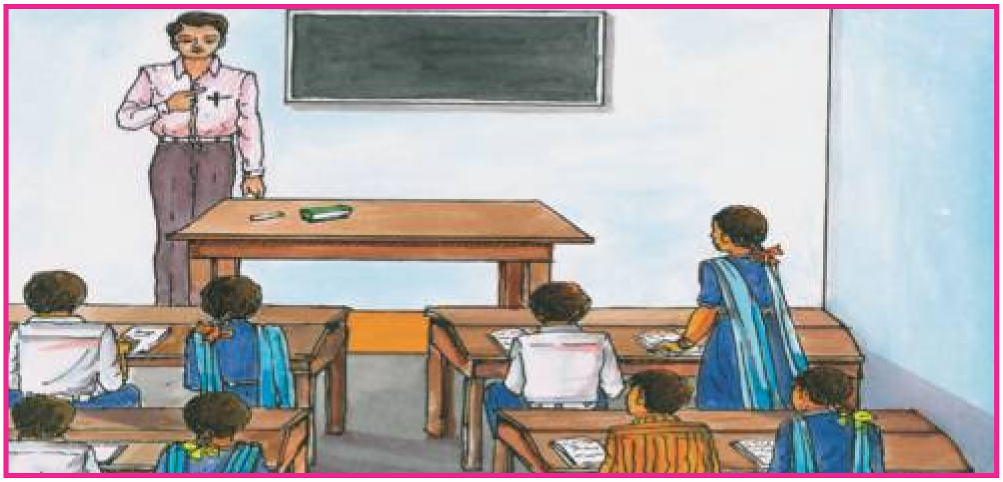

(अष्टमकक्षायाः दृश्यम्, आसनेषु स्थिताः बालकाः बालिकाश्च । पृष्ठभूमौ कृष्णपट्टः, समक्षं फलकम्, तस्योपरि मार्जनी पट्टलेखी च । शिक्षकस्य प्रवेशः, सर्वे छात्राः उत्तिष्ठन्ति ।)

छात्राः (समवेतस्वरेण) – प्रणमामो वयं सर्वे ।

शिक्षकः (दक्षिणं हस्तमुत्थाप्य) - तिष्ठन्तु सर्वे ।

भावना गुरुवर । अद्य किं पाठयिष्यति ?

शिक्षकः अद्य अनेकान् विषयान् कथयिष्यामि । आदौ विद्यायाः महत्त्वम् ।

शीला शोभनम् । विद्याविषये तु अस्माकमपि जिज्ञासा वर्तते ।

शिक्षकः तर्हि एवं प्राचीनं श्लोकं स्मरतु -

न चौरहार्यं न च राजहार्यं , न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।।

मोईनः अयं तु अतीव प्रसिद्धः श्लोकः । धनानां सीमा वर्तते, विद्या तु असीमा । अपि किञ्चिदस्ति विद्याविषयकं सुभाषितम् ?

शिक्षकः बहूनि सन्ति । यथा - विद्ययाऽमृतमश्नुते, विद्या ददाति विनयम्, विद्याविहीनः पशुः इत्यादीनि । अपरमपि अद्य वदिष्यामि ।

पंकजः तत्रापि रोचकं किमपि कथयतु । वयं किशोराः स्मः । अस्माकं जीवनस्य लक्ष्यं वदतु भवान् ।

शिक्षकः यस्मिन् देशे समाजे च वयं निवसामः तं प्रति सर्वेषां किशोराणां कर्त्तव्यमस्ति । अस्याम् अवस्थायां स्वस्थम् आचरणं यदि भवेत् तदा सर्वत्र कल्याणं शान्तिः सुखं च प्रसरेयुः। कुत्रापि विषमताभावं न धारयेत् । यदपि शारीरिकं मानसिकं च परिवर्तनं किशोरावस्थायां भवति, तत् सर्वं प्राकृतिकमेव । अतः आश्चर्यं नास्ति ।

वसुन्धरा गुरुवर ! किशोरान् प्रति भवतः कः उपदेशः ?

शिक्षकः किशोराः अस्मिन् वयसि उद्विग्नाः भवन्ति, सर्वत्र शीघ्रतां कुर्वन्ति । तत् नास्ति उचितम् । सर्वं कार्यं कालेन भवति । ईर्ष्या, द्वेषः, लोभः, क्रोधः, अपशब्दानां प्रयोगः, आलस्यम् इत्येते सर्वे दोषाः सन्ति । अतः तेषां परित्यागेन किशोराः किशोर्यश्च विद्यायाः पात्राणि भवन्ति । अन्यथा सर्वम् अध्ययनं व्यर्थम् । अपि च येन कार्येण वयम् उद्विग्नाः भवामः तथा अपरान् प्रति न करणीयम् । उक्तञ्च –

पालनीयं तु सर्वत्र किशोरैरनुशासनम् ।
न क्रोधेन न लोभेन तेषामपि हितं भवेत् ।।
त्याज्यं च मादकं द्रव्यं त्यजेदपि कुसंगतिम् ।
पितरौ प्रणमेत् नित्यम् आद्रियेत गुरूनपि ।।
समाजस्योपकाराय कुर्याद् देशहिताय च ।
एवं कृते किशोराणां कल्याणं सार्वकालिकम् ।।

छात्राः अतीव कल्याणकरं वस्तु दर्शितं भवता ।

(छात्राः प्रमुदिताः प्रतीयन्ते । शिक्षकः वर्गात् निर्गच्छति ।)

शब्दार्थः

आसनेषु	=	आसनों पर
पृष्ठभूमौ	=	पृष्ठभूमि में
कृष्णपट्टः	=	श्यामपट्ट (Blackboard)
समक्षम्	=	सामने

फलकम्	=	टेबुल
तस्योपरि	=	उसके ऊपर
मार्जनी	=	डस्टर
पट्टलेखी	=	चॉक
उत्तिष्ठन्ति	=	उठते हैं
समवेतस्वरेण	=	एक स्वर से
दक्षिणम्	=	दायाँ
हस्तमुत्थाप्य (हस्तम् + उत्थाप्य)	=	हाथ उठाकर
पाठयिष्यति	=	पढ़ाएँगे
कथयिष्यामि	=	कहूँगा
आदौ	=	आरम्भ (शुरू) में
शोभनम्	=	अच्छा
विद्याविषये	=	विद्या के विषय में
अस्माकमपि (अस्माकम् + अपि)	=	हमलोगों का भी
जिज्ञासा	=	जानने की इच्छा
तर्हि	=	तो
स्मरतु	=	याद रखें
चौरहार्यम्	=	चोर द्वारा चुराने योग्य

राजहार्यम्	=	राजा द्वारा छीनने योग्य
भ्रातृभाज्यम्	=	भाई द्वारा बाँटने योग्य
भारकारि	=	भार या बोझ देने वाला
व्यये कृते	=	खर्च करने पर
वर्धत एव	=	बढ़ता ही है
नित्यम्	=	हमेशा, सदा
विद्याधनम्	=	विद्यारूपी धन
सर्वधनप्रधानम्	=	सभी धनों में प्रधान
असीमा	=	असीमित
किञ्चित्	=	कुछ, कोई
विद्याविषयकम्	=	विद्या से सम्बन्धित
बहूनि	=	अनेक
विद्ययाऽमृतमश्नुते	=	विद्या से अमृत प्राप्त होता है (विद्यया + अमृतम् + अश्नुते)
विद्याविहीनः	=	विद्या से रहित
अपरम्	=	दूसरा, अन्य
वदिष्यामि	=	बोलूँगा
रोचकम्	=	रोचक, मनोरञ्जक

अस्माकम्	=	हमलोगों का
वदतु	=	बोलो, बोलिए
भवान्	=	आप
यस्मिन्	=	जिसमें
निवसाम:	=	रहते हैं
तम् प्रति	=	उसके प्रति
सर्वेषाम्	=	सब का
किशोराणाम्	=	किशोरों का
अस्याम् अवस्थायाम्	=	इस अवस्था में
प्रसरेत्	=	फैलना चाहिए
स्वपरिवारमेव (स्वपरिवारम् + एव)	=	अपना परिवार ही
कुत्रापि (कुत्र + अपि)	=	कहीं
विषमताभावम्	=	भेदभावपूर्ण भाव
धारयेत्	=	धारण करना चाहिए
यदपि (यत् + अपि)	=	जो भी
किशोरावस्थायाम्	=	किशोरावस्था में
किशोरान् प्रति	=	किशोरों के प्रति
भवत:	=	आपका

अस्मिन्	=	इसमें
वयसि	=	आयु में
उद्विग्नाः	=	उत्तेजित
अपशब्दानाम्	=	गालियों का
परित्यागेन	=	छोड़ देने से
पात्राणि	=	योग्य
अपरान् प्रति	=	दूसरे के प्रति
करणीयम्	=	करना चाहिए
उक्तञ्च (उक्तम् + च)	=	और कहा गया है
पालनीयम्	=	पालन करना चाहिए
किशोरैः	=	किशोरों द्वारा
अनुशासनम्	=	अनुशासन
तेषामपि (तेषाम् + अपि)	=	उनका भी
हितम्	=	हित, कल्याण
भवेत्	=	होना चाहिए
त्याज्यम्	=	छोड़ने योग्य
मादकम्	=	नशीला
द्रव्यम्	=	पदार्थ

त्यजेत्	=	छोड़ देना चाहिए
कुसंगतिम्	=	बुरी संगत (साथ) को
पितरौ	=	माता-पिता को
प्रणमेत्	=	प्रणाम करना चाहिए
आद्रियेत	=	आदर करना चाहिए
गुरूनपि	=	गुरुओं को भी
समाजस्योपकाराय (समाजस्य + उपकाराय)	=	समाज के उपकार के लिए
कुर्याद् (कुर्यात्)	=	करना चाहिए
देशहिताय	=	देश के हित के लिए
एवं कृते	=	ऐसा करने पर
किशोराणाम्	=	किशोरों का
कल्याणम्	=	हित
सार्वकालिकम्	=	हमेशा, सदा रहने वाला
कल्याणकरम्	=	कल्याण करने वाला, हितकारी
दर्शितम्	=	दिखाया गया
भवता	=	आपके द्वारा
प्रमुदिताः	=	प्रसन्न, खुश
प्रतीयन्ते	=	प्रतीत होते हैं, लगते हैं
वर्गात्	=	कक्षा से, वर्ग से
निर्गच्छति	=	निकलता है

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः / पदविच्छेदः

बालिकाश्च	=	बालिकाः + च (विसर्गसन्धिः)
तस्योपरि	=	तस्य + उपरि (गुणसन्धिः)
हस्तमुत्थाप्य	=	हस्तम् + उत्थाप्य
किञ्चिदस्ति	=	किञ्चित् + अस्ति (व्यञ्जनसन्धिः)
विद्ययाऽमृतमश्नुते	=	विद्यया + अमृतम् + अश्नुते
अपरमपि	=	अपरम् + अपि
तत्रापि	=	तत्र + अपि (स्वरसन्धिः)
किमपि	=	किम् + अपि
कर्त्तव्यमस्ति	=	कर्त्तव्यम् + अस्ति
स्वपरिवारमेव	=	स्वपरिवारम् + एव
कुत्रापि	=	कुत्र + अपि (स्वरसन्धिः)
यदपि	=	यत् + अपि (व्यञ्जनसन्धिः)
किशोरावस्थायाम्	=	किशोर + अवस्थायाम् (स्वरसन्धिः)
प्राकृतिकमेव	=	प्राकृतिकम् + एव
नास्ति	=	न + अस्ति (दीर्घसन्धिः)
उद्विग्नाः	=	उत् + विग्नाः (व्यञ्जनसन्धिः)
इत्येते	=	इति + एते (स्वरसन्धिः)

किशोर्यश्च	=	किशोर्य: + च (विसर्गसन्धि:)
किशोरैरनुशासनम्	=	किशोरै: + अनुशासनम् (विसर्गसन्धि:)
तेषामपि	=	तेषाम् + अपि
त्यजेदपि	=	त्यजेत् + अपि (व्यञ्जनसन्धि:)
गुरूनपि	=	गुरून् + अपि
समाजस्योपकाराय	=	समाजस्य + उपकाराय (गुणसन्धि:)
निर्गच्छति	=	नि: + गच्छति (विसर्गसन्धि:)

प्रकृति-प्रत्यय-विभाग:

दृश्यम्	=	√दृश् + यत्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
स्थिता:	=	√स्था + क्त स्त्री. / पुं. बहुवचनम्
उत्तिष्ठन्ति	=	उत् + √स्था लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
प्रणमाम:	=	प्र + √नम् लट्लकार:, उत्तमपुरुष:, बहुवचनम्
उत्थाप्य	=	उत् + √स्था + ल्यप्
तिष्ठन्तु	=	√स्था लोट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
पाठयिष्यति	=	√पठ् णिच् (य्) लृट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम्
कथयिष्यामि	=	√कथ् लृट्लकार:, उत्तमपुरुष:, एकवचनम्
स्मरतु	=	√स्मृ लोट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम्

हार्यम्	=	√हृ + ण्यत्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
भाज्यम्	=	√भञ्ज् + ण्यत्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
वर्धते	=	√वृध् आत्मनेपदी, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
सन्ति	=	√अस् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
अश्नुते	=	√अश् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
ददाति	=	√दा लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
वदिष्यामि	=	√वद् लृट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
कथयतु	=	√कथ् लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्
स्मः	=	√अस् लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्
वदतु	=	√वद् लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
निवसामः	=	नि + √वस् लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्
कर्त्तव्यम्	=	√कृ + तव्यत्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
प्रसरेत्	=	प्र + √सृ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
मन्येत	=	√मन् विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
धारयेत्	=	√धृ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
कुर्वन्ति	=	√कृ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
करणीयम्	=	√कृ + अनीयर्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
उक्तम्	=	√वच् + क्त, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्

पालनीयम्	=	√पाल् + अनीयर्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
त्याज्यम्	=	√त्यज् + ण्यत्, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
प्रणमेत्	=	प्र + √नम् विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आद्रियेत	=	आ + √दृ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
कुर्यात्	=	√कृ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
दर्शितम्	=	√दृश् + क्त नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
प्रमुदिताः	=	प्र + √मुद् + क्त, बहुवचनम्
प्रतीयन्ते	=	प्रति + √इङ् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
निर्गच्छति	=	निर् + √गम् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत–

पृष्ठभूमौ, समक्षम्, पट्टलेखी, हस्तमुत्थाप्य, जिज्ञासा, चौरहार्यम्, राजहार्यम्, भ्रातृभाज्यम्, सर्वधनप्रधानम्, किञ्चिदस्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते, विद्याविहीनः इत्यादीनि, उद्विग्नाः, अपशब्दानां, किशोर्यश्च, उक्तञ्च, किशोरैरनुशासनम्, त्याज्यम्, कुसंगतिम्, गुरूनपि, समाजस्योपकाराय, सार्वकालिकम्, प्रमुदिताः, निर्गच्छति ।

2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत –

कृष्णपट्टः, समक्षम्, मार्जनी, हस्तमुत्थाप्य, चौरहार्यम्, राजहार्यम्, भ्रातृभाज्यम्, किञ्चित्, अपरम्, प्रसरेत्, विषमताभावम्, उद्विग्ना, अपशब्दानाम्, परित्यागेन, तेषामपि, त्याज्यम्, मादकम्, कुसंगतिम्, पितरौ, सार्वकालिकम्, प्रमुदिताः ।

लिखित :

3. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत -

(क) 'गुरुशिष्य-संवाद:' इति पाठे कस्या: कक्षाया: दृश्यम् ?

(ख) बालका: बालिकाश्च कुत्र स्थिता:?

(ग) शिक्षक: पाठेऽस्मिन् कस्या: महत्त्वं दर्शयति ?

(घ) किं न चौरहार्यं न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं वा वर्तते ?

(ङ) सर्वधनप्रधानं धनं किम् ?

(च) धनानां सीमा का?

(छ) विद्या किं ददाति ?

(ज) विद्याविहीन: जन: कीदृश: भवति ?

(ञ) किशोरावस्थायां किशोरा: कीदृशा: भवन्ति ?

(ट) किशोरै: सर्वत्र किं पालनीयम् ?

(ठ) कौ नित्यं प्रणमेत् ?

(ड) शिक्षक: कस्मात् निर्गच्छति ?

4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन लिखत-

(क) कक्षायां शिक्षकस्य प्रवेशे सति सर्वे छात्रा: किं कुर्वन्ति ?

(ख) छात्रा: समवेतस्वरेण किं वदन्ति ?

(ग) शिक्षक: कं हस्तम् उत्थाप्य वदति - तिष्ठन्तु सर्वे ।

(घ) शिक्षक: आदौ कस्या: महत्त्वं दर्शयति ?

(ङ) किशोरावस्थाया: के के दोषा: सन्ति ?

(च) केषां परित्यागेन किशोरा: किशोर्यश्च विद्याया: पात्राणि भवन्ति ?

(छ) येन कार्येण वयम् उद्विग्ना: भवाम: तथा कान् प्रति न करणीयम् ?

(ज) कौ नित्यं प्रणमेत् ?

(झ) कान् नित्यम् आद्रियेत ?

5. मञ्जूषाया: उचितानि पदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

पृष्ठभूमौ, समक्षम्, विद्याधनम्, विनयम्, पशुसमान:, अनुशासनम्, कुसंगतिम्, त्याज्यम्, किशोरा:, प्राकृतिकम् ।

(क) कृष्णपट्ट: .... वर्तते ।

(ख) फलकं .... वर्तते ।

(ग) सर्वधनप्रधानं .... ।

(घ) विद्या ददाति .... ।

(ङ) विद्याविहीन: .... ।

(च) किशोरै: सर्वत्र .... पालनीयम् ।

(छ) .... त्यजेत् ।

(ज) मादकेन द्रव्येण .... उद्विग्ना भवन्ति ।

(झ) किशोरावस्थायां शारीरिकं मानसिकं च परिवर्तनं .... एव ।

6. निम्नलिखितानां पदानां बहुवचनं लिखत –

(क) उत्तिष्ठति ....

(ख) तिष्ठतु ....

(ग) पाठयिष्यति ....

(घ) कथयिष्यामि ....

(ङ) स्मरतु ....

(च) वर्तते ....

(छ) वदिष्यामि ....

(ज) भवति ....

(झ) करोति ....

(ञ) निर्गच्छति ....

7. पदानि योजयित्वा लिखत –

(क) अपरम् + अपि = ...

(ख) हस्तम् + उत्थाप्य = ...

(ग) अस्माकम् + अपि = ...

(घ) अपरम् + अपि = ...

(ङ) किम् + अपि = ...

(च) कर्तव्यम् + अस्ति = ...

(छ) स्वरपरिवारम् + एव = ...

(ज) प्राकृतिकम् + एव = ...

(झ) तेषाम् + अपि = ...

(ञ) गुरून् + अपि = ...

8. संस्कृते अनुवादं कुरुत -

(क) आज क्या पढ़ाएँगे ?

(ख) आरम्भ में विद्या का महत्त्व कहूँगा ।

(ग) धन की सीमा होती है ।

(घ) विद्या विनय देती है ।

(ङ) विद्या से रहित व्यक्ति पशु के समान होता है ।

(च) छात्र प्रसन्न प्रतीत होते हैं ।

9. उदाहरणानुसारेण विभक्तिनिर्णयं कुरुत -

यथा - आसनेषु सप्तमी विभक्तिः

(क) बालकाः ....

(ख) पृष्ठभूमौ ....

(ग) शिक्षकस्य ....

(घ) अवस्थायाम् ....

(ङ) अस्मिन् ....

(च) पात्राणि ....

(छ) किशोरैः ....

(ज) गुरून् ....

(झ) उपकाराय ....

(ञ) शिक्षक : ....

10. उदाहरणानुसारेण वचननिर्णयं कुरुत –

यथा– बालिकाः बहुवचनम्

(क) बालकाः ....

(ख) श्लोकः ....

(ग) पशुः ....

(घ) किशोराः ....

(ङ) पितरौ ....

11. निम्नलिखितानां पदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

(क) तस्य + उपरि ....

(ख) .... + ... = तत्रापि

(ग) .... + ... = यदपि

(घ) उत् + विग्नाः ....

(ङ) किशोर + अवस्था ....

(च) किञ्चित् + अस्ति ....

(छ)......................... + ...किशोरैरनुशासनम्

(ज) नि: + गच्छति ....

योग्यताविस्तार :

उपसर्गों के लगने से मूलशब्द या धातु के अर्थ में बहुत परिवर्तन होता है। संस्कृत का एक शब्द है - वाद । यह वद् धातु से घञ् प्रत्यय लगकर बना है । इसका इस दृष्टि से अर्थ है ''बोलना'' । यह मुख्यत: बातचीत करने के अर्थ में आता है । आधुनिक हिन्दी में ''मुकदमे'' के अर्थ में इसका प्रयोग देखा जाता है । इस शब्द के पूर्व कुछ उपसर्ग लगाएँ तो अर्थ परिवर्तन आवश्यक है । जैसे -

संवाद = दो या अधिक व्यक्तियों में कोई सार्थक वार्तालाप ।

अनुवाद= एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरण ।

प्रवाद = किसी घटना या व्यक्ति के विषय में अफवाह ।

परिवाद = किसी व्यक्ति के विरोध में शिकायत करना, निन्दा ।

विवाद = झगड़ा, वाग्युद्ध

अपवाद= सामान्य विषय का विशेष स्थिति में विरोध ।
कभी-कभी यह अफवाह के अर्थ में भी होता है।

प्रतिवाद= विरोध

दुर्वाद = बुरा-भला कहना, निन्दा

प्रस्तुत पाठ में गुरु और शिष्यों के बीच में कक्षा के अन्तर्गत दो विषयों को लेकर संवाद है। संवाद नाटक का एक महत्त्वपूर्ण तथा अनिवार्य अङ्ग है। ऋग्वेद में कई संवाद

मन्त्रों में निर्दिष्ट हैं, जैसे विश्वामित्र-नदी संवाद, सरमा-पणि संवाद, यम-यमी संवाद, उर्वशी-पुरूरवा संवाद इत्यादि। ये विभिन्न विषयों पर वार्तालाप के रूप में हैं । उपनिषदों में दार्शनिक ज्ञान से सम्बद्ध गुरु-शिष्य के बीच अनेक संवाद हैं । जैसे- कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद, बृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद इत्यादि । संवादपद्धति से ही शिक्षण होता था । गुरु और शिष्य दोनों की सक्रियता संवाद में देखी जाती है फिर भी अनुशासन का महत्त्व तो है ही। प्रश्न ऐसे ही उठाए जायें जो विशुद्ध जिज्ञासा के सूचक हों। खिलवाड़ करने के लिए या किसी को तंग करने के लिए प्रश्न करना अशोभनीय है । ऐसी स्थिति से निपटने के लिए मनु ने कहा था -

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयात् न चान्यायेन पृच्छतः ।
जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ।।

अर्थात् बिना पूछे हुए कुछ नहीं बोलना चाहिए । अन्यायपूर्वक कोई पूछ रहा हो तो भी नहीं जवाब देना चाहिए। मेधावी को चाहिए कि जानते हुए भी इन स्थितियों में जड़ (मूर्ख) के समान संसार के प्रति व्यवहार करना चाहिए। इसलिए बातचीत के क्रम में अनुशासन की आवश्यकता बहुत अधिक होती है ।

इस प्रसंग में वाद से उत्पन्न होने वाले दो परिणामों की लोकोक्तियाँ दी गयी हैं -

1. वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः (अच्छा परिणाम)
2. वादे-वादे जायते वै विवादः (कुत्सित परिणाम)

QQQ

एकादशः पाठः

विज्ञानस्य उपकरणानि

(विभक्ति-प्रयोग)

(आज का युग वैज्ञानिक युग कहलाता है क्योंकि हजारों वर्षों में संसार ने उतनी प्रगति नहीं की थी जितनी प्रगति पिछले सौ वर्षों में हुई है । वैज्ञानिक उपकरणों के कारण सम्पूर्ण संसार एक ग्राम या एक परिवार जैसा हो गया है। इनके कारण कोई दूरी मानव के बीच नहीं रही। घर बैठे सम्पूर्ण संसार का चित्र ही नहीं देख सकते अपितु दूरस्थ व्यक्तियों से आमने-सामने बात भी कर सकते हैं । महीनों के काम कम्प्यूटर मिनटों में कर देता है । इन उपकरणों के आविष्कारकों तथा कार्य का ज्ञान देने वाला यह पाठ सामान्य ज्ञान की दिशा में उपयोगी है।)

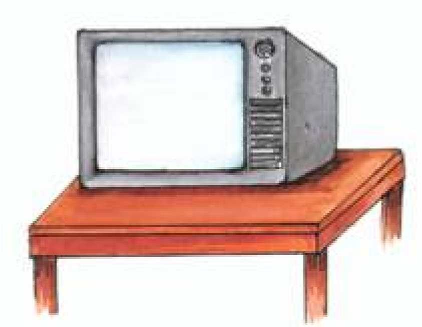

अधुना वैज्ञानिकं युगं सर्वे अनुभवन्ति । अद्य मानवः तथैव नास्ति यथा शतं वर्षाणि पूर्वमासीत् । विज्ञानप्रभवाणि उपकरणानि सर्वेषां जीवने प्रविष्टानि सन्ति । नगरेषु वा ग्रामेषु वा सर्वे स्व-स्व-कार्येषु विज्ञानस्य साधनानि व्यवहरन्ति। आधुनिकानि वैज्ञानिकान्युपकरणाणि सर्वाण्यपि वैदेशिकैः जनैराविष्कृतानि सन्ति । रेलयानं सम्प्रति लोकप्रियं वाहनं दूरं गन्तुम् । देशे बहूनि रेलस्थानकानि वर्तन्ते । प्रथमं रेलचालकयन्त्रं जार्ज स्टीफेन्सनेन निर्मितमासीत् । एवमेव मुद्रणयन्त्रैः पुस्तकानि शीघ्रमेवासंख्यानि मुद्रितानि भवन्ति । कैक्सटनेन तस्य यन्त्रस्य आविष्कारेण संसारस्योपकारः कृतः । एडीसन नामकः आंग्लदेशीयो वैज्ञानिकः ग्रामोफोनस्य विद्युद्बल्बस्य चाविष्कारं

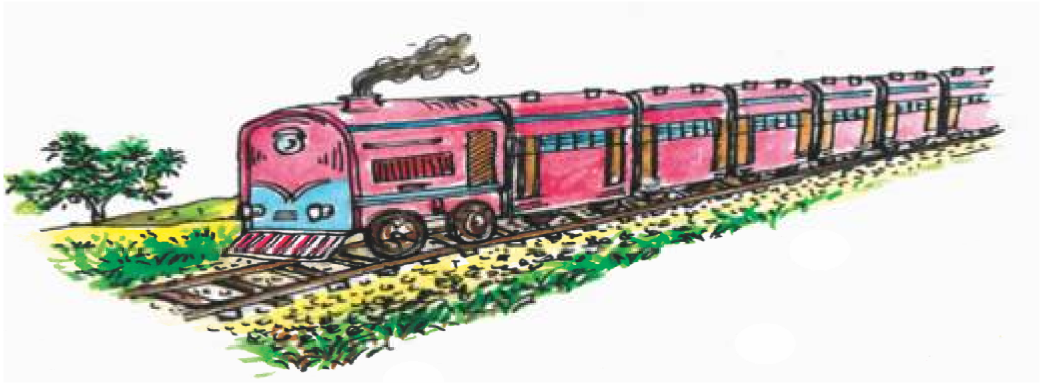

कृतवान् । विद्युतः उत्पादनाय डायनेमोनामकं यन्त्रमनिवार्यं वर्तते । तदाविष्काराय वयं माइकल फेराडे नामकं वैज्ञानिकं प्रति कृतज्ञाः । दूरस्थितानां वस्तूनां साक्षात्करणाय दूरबीन-नामकस्य उपकरणस्य आविष्कारम् इटलीदेशवासी गैलीलियो नामकः वैज्ञानिकः कृतवान् । रेडियो यन्त्रेण दूरस्थाः शब्दाः गृह्यन्ते । अस्य आविष्कारः इटलीवासिना मारकोनी महोदयेन कृतः । मोटरकारस्य आविष्काराय ऑस्टीनमहोदयः प्रसिद्धः। वायुयानम् अमेरिकावासिनौ राइटभ्रातरौ आविष्कृतवन्तौ ।

अधुना टेलीविजनयन्त्रं महदुपकारकं सिध्यति तेन गृहे स्थिताः वयं चित्राणि, पश्यामः चित्रस्थपात्राणां वचनानि च शृणुमः । जे.एल. वेयर्ड महोदयः अस्य यन्त्रस्य आविष्कारकः। तथैव कम्प्यूटरयन्त्रं लघुकायमपि गणनाकार्ये, श्रेणीकरणे, विश्लेषणे, तालिकादिनिर्माणे, मुद्रणे, स्मृतिसंग्रहणे च आधुनिकयुगे महदुपकारकं वर्तते । यद्यपि

भारतवर्षे बिलम्वेन समागतं किन्तु अस्य आविष्कार: 1946 वर्षे एव ब्रेनर्ड इंकटमैन्युली महोदयाभ्यां कृत: आसीत् । हेलीकाप्टरनामकं वायुयानं दुर्गमस्थलेष्वपि यानवाहनयो: कार्यं संचालयति । तस्याविष्कार: एटीन ओहमिसेन नामकेन वैज्ञानिकेन अभवत् । जी. ब्रैड शॉ महोदय: अत्युपयोगिन: स्कूटरयानस्य आविष्कारमकरोत् । डायनामाइट-नामकेन प्रभावशालिना चूर्णेन कठोरा: पर्वता: अपि भज्यन्ते । तस्य आविष्कारम् अल्फ्रेड नोबल महोदय: स्वीडेन निवासी कृतवान् । तस्यैव नाम्ना तेन दत्तेन राशिना च विश्वप्रसिद्ध: नोबलपुरस्कार: प्रदीयते ।

यद्यपि सहस्राधिकानां विज्ञानोपकरणानां प्रयोग: अहर्निशं भवति, नित्यं च नवीनानि आविष्क्रयन्ते सुविधार्थं जनानाम्। आयुर्विज्ञानस्य आविष्कारै: रोगा: दूरीक्रियन्ते जीवनावधिश्च जनानां वर्धित: । अत्र कानिचनैव उपकरणानि सूचितानि।

शब्दार्थ:

अधुना	=	आजकल
शतम्	=	सौ
विज्ञानप्रभवाणि	=	विज्ञान से उत्पन्न
प्रविष्टानि	=	प्रवेश किये हुए
वैदेशिकै:	=	विदेशियों द्वारा
सम्प्रति	=	आजकल
रेलस्थानकानि	=	रेल-स्टेशन
रेलचालकयन्त्रम्	=	रेल इंजन
विद्युद्बल्बस्य	=	बिजली-बल्ब का

विद्युतः	=	बिजली का/ की/ के
कृतज्ञाः	=	किये गये उपकार को जानने वाले, ऋणी
कृतवान्	=	किया गया
गृह्यन्ते	=	ग्रहण किये जाते हैं
कृतः	=	किया
आविष्कृतवन्तौ	=	आविष्कार / खोज किये (द्विवचन)
महदुपकारकम्	=	बड़ा उपयोगी, महान उपकारक
सिध्यति	=	सिद्ध होता है
चित्रस्थपात्राणाम्	=	चित्र स्थित पात्रों/ व्यक्तियों का/ के/ की
शृणुमः	=	(हम) सुनते हैं
लघुकायमपि (लघुकायम् + अपि)	=	छोटा शरीर होने पर भी
श्रेणीकरणे	=	वर्गीकरण में
स्मृतिसंग्रहणे	=	याद करने योग्य (तथ्यों) को इकट्ठा करने में
समागतम्	=	आया
यानवाहनयोः कार्यम्	=	सवारी एवं माल-ढुलाई के काम को
अत्युपयोगिनः	=	अधिक उपयोगी (का/की/के)
भज्यन्ते	=	तोड़े जाते हैं
तस्यैव (तस्य + एव)	=	उसके ही

सहस्राधिकानाम्	=	हजार से अधिक (का/ की/ के)
अहर्निशम्	=	दिन-रात
आयुर्विज्ञानस्य	=	चिकित्साशास्त्र का
जीवनावधिश्च	=	आयु, जीवनकाल
कानिचनैव (कानिचन + एव)	=	कुछ ही
सूचितानि	=	बताये गये (हैं)

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद:/ पदविच्छेद:

तथैव	=	तथा + एव (वृद्धिसन्धि:)
नास्ति	=	न + अस्ति (दीर्घसन्धि:)
पूर्वमासीत्	=	पूर्वम् + आसीत्
वैज्ञानिकान्युपकरणानि	=	वैज्ञानिकानि + उपकरणानि (यण्सन्धि:)
सर्वाण्यपि	=	सर्वाणि + अपि (यण्सन्धि:)
जनैराविष्कृतानि	=	जनै: + आविष्कृतानि (विसर्गसन्धि:)
निर्मितमासीत्	=	निर्मितम् + आसीत्
एवमेव	=	एवम् + एव
शीघ्रमेवासंख्यानि	=	शीघ्रम् + एव + असंख्यानि (दीर्घसन्धि:)
संसारस्योपकार:	=	संसारस्य + उपकार: (गुणसन्धि:)

चाविष्कारम्	=	च + आविष्कारम् (दीर्घसन्धिः)
यन्त्रमनिवार्यम्	=	यन्त्रम् + अनिवार्यम्
तदाविष्काराय	=	तत् + आविष्काराय (व्यञ्जनसन्धिः)
महदुपकारकम्	=	महत् + उपकारकम् (व्यञ्जनसन्धिः)
दुर्गमस्थलेष्वपि	=	दुर्गमस्थलेषु + अपि (यण्सन्धिः)
तस्याविष्कारः	=	तस्य + आविष्कारः (दीर्घसन्धिः)
अत्युपयोगिनः	=	अति + उपयोगिनः (यण्सन्धिः)
आविष्कारमकरोत्	=	आविष्कारम् + अकरोत्
तस्यैव	=	तस्य + एव (वृद्धिसन्धिः)
सहस्राधिकानाम्	=	सहस्र + अधिकानाम् (दीर्घसन्धिः)
विज्ञानोपकरणानाम्	=	विज्ञान + उपकरणानाम् (गुणसन्धिः)
अहर्निशम्	=	अहः + निशम् (विसर्गसन्धिः)
जीवनावधिश्च	=	जीवन + अवधिः + च (दीर्घसन्धिः, विसर्गसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

अनुभवन्ति	=	अनु + √भू , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
व्यवहरन्ति	=	वि + अव + √हृ, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
गन्तुम्	=	√गम् + तुमुन्
आविष्कृतानि	=	आ + वि + √कृ , क्त, नपुंसकलिङ्गम्, बहुवचनम्

कृतः	=	√कृ , क्त, पुंल्लिंगम्, एकवचनम्
कृतवान्	=	√कृ + क्तवतु, पुंल्लिंगम्, एकवचनम्
आविष्कृतवन्तौ	=	आ + वि + √कृ + क्तवतु, पुंल्लिंगम्, द्विवचनम्
शृणुमः	=	√श्रु , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्
भज्यन्ते	=	√भज् , यक् (कर्मवाच्यम्) प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
प्रदीयते	=	प्र + √दा + यक् (कर्मवाच्यम्) प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
आविष्क्रियन्ते	=	आ + वि + √कृ, यक् (कर्मवाच्यम्) प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
संचालयति	=	सम् + √चल् णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. **निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत-**

अधुना, सम्प्रति, विज्ञानप्रभवाणि, गृह्यन्ते, लघुकायमपि, सहस्राधिकानाम्, आयुर्विज्ञानस्य, सिध्यति, समागतम् ।

2. **निम्नलिखितानाम् उपकरणानाम् आविष्कारकाणां नामानि वदत-**

रेलचालकयन्त्रम्, विद्युद्बल्बः, दूरबीन, रेडियोयन्त्रम्, मोटरकारः, डायनामाइट

3. **निम्नलिखितानां धातुरूपाणां पाठं कुरुत-**

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लिखितः

4. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत –

(क) विद्युद्बल्बस्य आविष्कारः कः कृतवान् ?

(ख) कम्प्यूटरयन्त्रस्य आविष्कारः कस्मिन् वर्षे अभवत् ?

(ग) कस्य नाम्ना नोबेल–पुरस्कारः प्रदीयते ?

(घ) मोटरकारस्य आविष्कारं कः कृतवान् ?

(ङ) जी ब्रैड शॉ महोदयः कम् आविष्कारम् अकरोत् ?

5. पठितपाठमाश्रित्य निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत –

(क) माइकलफेराडे नामकः वैज्ञानिकः कम् आविष्कारम् अकरोत् ?

(ख) दूरबीननामकस्य उपकरणस्य आविष्कारं कः कृतवान् ?

(ग) केन गृहे स्थिताः वयं चित्राणि पश्यामः ?

(घ) कम्प्यूटरयन्त्रस्य आविष्कारं कः कृतवान् ?

(ङ) हेलीकाप्टरनामकं वायुयानस्य आविष्कारं कः कृतवान् ?

(च) केन चूर्णेन कठोराः पर्वताः अपि भज्यन्ते ?

(छ) जे. एल. वेयर्ड महोदयः कस्य यन्त्रस्य आविष्कारं अकरोत् ?

6. लङ्लकारे परिवर्तनं कुरुत –

	लट्लकारः	लङ्लकारः
यथा –	सः करोति	सः अकरोत्
(क)	अहं गच्छामि	....
(ख)	त्वं पश्यसि	....

(ग) यूयं चलथ ....

(घ) युवां मिलथः ....

(ङ) के पश्यन्ति ....

7. मञ्जूषायाः उचितपदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

जार्ज स्टीफेन्सनेन, रेलस्थानकानि, महत्, एटीन-ओहमिसेन, रेडियो, डायनेमोयन्त्रम्, रोगाः

(क) देशे बहूनि .... वर्त्तन्ते ।

(ख) रेलचालकयन्त्रं .... निर्मितमासीत् ।

(ग) विद्युतः उत्पादनाय .... अनिवार्यं वर्तते ।

(घ) अधुना टेलीविजनयन्त्रं .... उपकारकं सिध्यति ।

(ङ) हेलीकाप्टरनामकं वायुयानं .... नामकेन वैज्ञानिकेन कृतः ।

(च) .... यन्त्रेण दूरस्थाः शब्दाः गृहीयन्ते ।

(छ) आयुर्विज्ञानस्य आविष्कारैः .... दूरी क्रियन्ते ।

8. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

यथा - विज्ञानप्रभवाणि उपकरणानि सर्वेषां जीवने प्रविष्टानि सन्ति । (आम्)

(क) गैलेलियो-नामकः वैज्ञानिकः इटली-देशवासी आसीत् । ( )

(ख) एडीसन-नामकः वैज्ञानिकः अपि इटली-देशवासी आसीत् । ( )

(ग) मोटरकारस्य आविष्कारं माइकलफेराडे कृतवान् । ( )

(घ) टेलीविजनयन्त्रस्य आविष्कारकः आस्टीन महोदयः आसीत्। ( )

(ङ) कम्प्यूटरयन्त्रस्य आविष्कारः 1946 वर्षे अभवत्। ( )

(च) स्कूटरयानस्य आविष्कारं जगदीशचन्द्रबोसमहोदयः अकरोत्। ( )

9. अर्थानुसारेण पदानि सुमेलयत –

	पद	अर्थ
(क)	अधुना	सौ
(ख)	शतम्	आया
(ग)	कृतवान्	इस समय
(घ)	अहर्निशम्	सिद्ध होता है
(ङ)	समागतम्	उसके ही
(च)	सिध्यति	बिजली का
(छ)	विद्युतः	दिन–रात
(ज)	तस्यैव	किया

10. अधोलिखितानां पदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

(क)......................... + ... नास्ति

(ख) अति + उपयोगिनः ....

(ग) .... + ... तस्याविष्कारः

(घ) .... + ... अहर्निशम्

(ङ) एक + एकम् ....

(च) .... + ... तस्यैव

11. 'क्त' प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा त्रिषु लिङ्गेषु रूपाणि लिखन्तु

		पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
यथा –	गम् + क्त	गतः	गता	गतम्
(क)	कृ + क्त	....	....	....
(ख)	दा + क्त	....	....	....
(ग)	चल् + क्त	....	....	....
(घ)	रक्ष् + क्त	....	....	....
(ङ)	पठ् + क्त	....	....	....
(च)	लिख् + क्त	....	....	....
(छ)	रक्ष् + क्त	....	....	....
(ज)	स्मृ + क्त	....	....	....

12. अधोलिखितेषु अशुद्धानि पदानि शुद्धानि कृत्वा लिखत –

सूचितानी, अहर्निसम्, समृतिसंग्रहणे, श्रेनीकरणे सर्वान्यपि, आविस्कारम्, यन्त्रमनिवार्यम्, गृहयन्ते ।

Developed by: ABSOL www.absol.in

योग्यता-विस्तारः

पाठ से सम्बद्ध

आधुनिक विज्ञान में मानव जीवन में शीघ्रता, सुख-सुविधा इत्यादि लाकर बहुत बड़ा युगपरिवर्तन किया है। यद्यपि बहुत प्राचीन समय से कुछ देशों के लोग वैज्ञानिक अनुसन्धान में लगे हुए थे किन्तु औद्योगिक क्रांति विगत दो तीन सौ वर्षों की देन है जिसमें यूरोप तथा अमेरिका के वैज्ञानिकों ने अनेक उपकरणों का आविष्कार किया। बीसवीं शताब्दी में इस दिशा में बहुत तेजी से आविष्कार हुए। इसके फलस्वरूप हम घर बैठे या चलते-फिरते दूर के लोगों से बातें कर सकते हैं और उन्हें साक्षात् देख भी सकते हैं। मानव अन्तरिक्ष में पहुँच गया है। विभिन्न ग्रहों तक के आंकड़े मानवीय यानों के द्वारा संकलित किये गये हैं। चन्द्रमा पर भी मानव कई बार उतर चुका है। अनेक रोगों की चिकित्सा के साधन सुलभ हो गये हैं, नई-नई दवाओं की खोज हो रही है, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आज बहुत अधिक हो गयी है, जिससे मनुष्य की आयु बढ़ चुकी है, मृत्युदर कम हो गयी है।

कुछ वैज्ञानिक उपकरण ऐसे हैं जिनका हमारे दैनिक जीवन में निरन्तर उपयोग होता है। उनके आविष्कारकों के प्रति आभार प्रदर्शन करना तथा उन्हें जानना हमारा कर्तव्य है। इस पाठ में इस कार्यक्रम का संक्षिप्त क्रियान्वयन है। सामान्य ज्ञान की प्रामाणिक पुस्तकों से अतिरिक्त सूचनाएँ एकत्र की जा सकती है।

व्याकरण से सम्बद्ध

संख्यावाचक शब्द (51 से 75 तक) - संस्कृत के संख्यावाचक शब्द भारतीय भाषाओं में अपभ्रंश (तद्भव) रूप में आए हैं। छात्र-छात्राओं को अपनी भाषा के ऐसे शब्दों की तुलना संस्कृत मूल से करनी चाहिए और अन्तर की पहचान करनी चाहिए। यहाँ पच्चीस संख्यावाचक शब्दों के स्वरूप दिए जाते हैं। ये एकवचन तथा त्रिलिङ्गी

होते हैं । अत: तीनों लिङ्गों में अपने मूल स्वरूप को ही रखते हैं जैसे एकपञ्चाशत् बालका: / पुस्तकानि / बालिका: सन्ति। इसी प्रकार षष्टि: ग्रन्था: / पुष्पाणि / स्त्रिय: दृश्यन्ते । अन्य विभक्तियों में संख्यावाचक शब्द तो एकवचन रहता है किन्तु बोध्य शब्द किसी भी वचन में हो सकता है । जैसे – सप्तते: बालकानां प्रवेश: अस्मिन् सभाकक्षे जात: (इस हॉल में सत्तर लड़कों का प्रवेश हुआ)। अशीतौ कक्षासु अयं विद्यालय: चलति (यह विद्यालय अस्सी कमरों में चलता है)। ध्यान दें कि सप्तति या अशीति (संख्यावाचक शब्द) उन विभक्तियों में जाकर भी एकवचन ही हैं जबकि उनके विशेष्य वास्तविक वचनों को धारण कर रहे हैं ।

51	=	एकपञ्चाशत्
52	=	द्वापञ्चाशत् / द्विपञ्चाशत्
53	=	त्रय: पञ्चाशत् / त्रिपञ्चाशत्
54	=	चतु:पञ्चाशत्
55	=	पञ्चपञ्चाशत्
56	=	षट्पञ्चाशत्
57	=	सप्तपञ्चाशत्
58	=	अष्टापञ्चाशत् / अष्टपञ्चाशत्
59	=	नवपञ्चाशत् / एकोनषष्टि:
60	=	षष्टि:
61	=	एकषष्टि:
62	=	द्वाषष्टि: / द्विषष्टि:

63	=	त्रय:षष्टि: / त्रिषष्टि:
64	=	चतुष्षष्टि:
65	=	पञ्चषष्टि:
66	=	षट्षष्टि:
67	=	सप्तषष्टि:
68	=	अष्टाषष्टि:/अष्टषष्टि:
69	=	नवषष्टि:/एकोनसप्तति:
70	=	सप्तति:
71	=	एकसप्तति:
72	=	द्वासप्तति: / द्विसप्तति:
73	=	त्रिसप्तति: / त्रयस्सप्तति:
74	=	चतु:सप्तति:
75	=	पञ्चसप्तति:

QQQ

द्वादशः पाठः

सदाचारः

(आदर्श दिनचर्या का प्रकाशन)

(जीवन में सदाचार का महत्त्व सभी संस्कृतियों में माना गया है । सदाचार के दो अर्थ किये गये हैं । यद्यपि उनमें विशेष अन्तर नहीं है । अच्छे आचरण को सदाचार कहते हैं – सन् आचारः । दूसरे अर्थों में सज्जनों के आचार-व्यवहार को **सदाचार** कहा जाता है – **सताम् आचारः** । बालक अनुकरण से सदाचार की शिक्षा प्राप्त करते हैं । आस-पास उचित व्यवहार करने वाले लोग हों तो सदाचार स्वतः आ जाता है। फिर भी प्राचीन शास्त्रों में लिखित रूप से सदाचार के उपदेश दिये गये हैं । प्रस्तुत पाठ में जीवन में व्यवहार करने योग्य उपदेशों का संकलन धर्मशास्त्र, पुराण तथा आयुर्वेद के ग्रन्थों से किया गया है ।)

1. नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयात् न चान्यायेन पृच्छतः ।
   जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ।।

2. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
   चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।।

Developed by: SOL www.absol.in

3. वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी ।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद् यदुत्तरम् ।।

4. ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत स्वस्थो रक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तां निर्वर्त्य कृतनित्यक्रियो भवेत् ।।

5. आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः ।
नार्तेनाप्यवमन्तव्याः पुंसा कल्याणकामिना ।।

6. विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम् ।
अमित्रादपि सद्वृत्तममेध्यादपि काञ्चनम् ।।

7. सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः ।
श्रद्धावान् अनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ।।

8. सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम् ।
योऽर्थे शुचिः स हि शुचिः न मृद्वारिशुचिः शुचिः ।।

शब्दार्थः

नापृष्टः (न + अपृष्टः) = बिना पूछे नहीं

कस्यचित् = किसी का/ की/ के

ब्रूयात् = बोलना चाहिए

चान्यायेन (च + अन्यायेन) = और अन्याय / जबरदस्ती से

पृच्छतः = पूछते हुए का

जानन्नपि (जानन् + अपि) = जानता हुआ भी

जडवल्लोकमाचरेत् = मूर्ख की तरह संसार में आचरण करना चाहिए

(जडवत् + लोकम् + आचरेत्)

अभिवादनशीलस्य = अभिवादन करने वाले का

वृद्धोपसेविनः (वृद्ध+उपसेविनः) = बूढ़ों की सेवा करने वालों का/की/के

वर्धन्ते = बढ़ते हैं

वयः = उम्र, आयु (Age)

वित्तं = धन

बन्धुः = सगा-संबंधी, बान्धव, भाई

मान्यस्थानानि = आदरणीय, सम्मान के पात्र

गरीयो (गरीयः) = श्रेष्ठ, बढ़कर

यदुत्तरम् (यत् + उत्तरम्) = जो बाद में हैं

ब्राह्मे = ब्रह्मवेला में, सूर्योदय से पूर्व के समय में

मुहूर्ते = वेला में, 1 मुहूर्त = 24 मिनट

बुध्येत = जागना चाहिए

रक्षार्थमायुषः = आयु की रक्षा के लिए

निर्वर्त्य = पूरा करके / सम्पन्न करके

कृतनित्यक्रियः = जिसने नित्य क्रिया कर हो (ऐसा व्यक्ति)

आचार्य: = गुरु, शिक्षक

नार्तेनाप्यवमन्तव्या: = आर्त (विवश/बेचैन/पीड़ित) होकर भी

(न+आर्तेन+अपि+अवमन्तव्या:) अपमान नहीं करना चाहिए ।

पुंसा = व्यक्ति द्वारा

कल्याणकामिना = कल्याण चाहने वाले

विषादप्यमृतम् (विषात्+अपि+अमृतम्) = जहर से भी अमृत

ग्राह्यम् = ग्रहण करना चाहिए, लेना चाहिए

बालादपि (बालात् + अपि) = बच्चे से भी

सुभाषितम् = अच्छे वचन

अमित्रादपि (अमित्रात् + अपि) = शत्रु से भी

काञ्चनम् = सोना, स्वर्ण को

य: = जो

सर्वलक्षणहीनोऽपि = सभी लक्षणों से हीन भी

सदाचारवान् = अच्छे आचरण वाला

अनसूयश्च (अन् + असूय: + च) = और ईर्ष्यारहित/डाह न करनेवाला

शौचानामर्थशौचम् (शौचानाम् + अर्थशौचम्) = पवित्रताओं में धन की पवित्रता (ईमानदारी)

स्मृतम् = कहा गया है

शुचिः	=	पवित्र
हि	=	निश्चय ही
मृद्वारि	=	मिट्टी एवं जल
सद्वृत्तम्	=	अच्छा व्यवहार
अमेध्यादपि	=	अपवित्र से भी
(अमेध्यात्+अपि)		
काञ्चनम्	=	सोना (स्वर्ण) को

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

नापृष्टः	=	न + अपृष्टः (दीर्घसन्धिः)
चान्यायेन	=	च + अन्यायेन (दीर्घसन्धिः)
जानन्नपि	=	जानन् + अपि (व्यंजनसन्धिः)
जडवल्लोकमाचरेत्	=	जडवत् + लोकम् + आचरेत् (व्यंजनसन्धि)
वृद्धोपसेविनः	=	वृद्ध + उपसेविनः (गुणसन्धिः)
आयुर्विद्या	=	आयुः + विद्या (विसर्ग सन्धिः)
बन्धुर्वयः	=	बन्धुः + वयः (विसर्गसन्धिः)
यदुत्तरम्	=	यत् + उत्तरम् (व्यञ्जनसन्धिः)
रक्षार्थमायुषः	=	रक्षा + अर्थम् + आयुषः (दीर्घसन्धिः)

आचार्यश्च	=	आचार्यः + च (विसर्ग-सन्धिः)
नार्तेनाम्यवमन्तव्याः	=	न + आर्तेन + अपि + अवमन्तव्याः (दीर्घसन्धिः, यण्सन्धिः)
विषादप्यमृतम्	=	विषात् + अपि + अमृतम् (व्यंजनसन्धिः, यण्सन्धिः)
बालादपि	=	बालात् + अपि (व्यञ्जनसन्धिः)
अमित्रादपि	=	अमित्रात् + अपि (व्यञ्जनसन्धिः)
सद्वृत्तममेध्यादपि	=	(सत् + वृत्तम् + अमेध्यात्अपि) (व्यञ्जनसन्धिः)
सदाचारवान्	=	सत् + आचारवान् (व्यञ्जनसन्धिः)
अनसूयश्च	=	अन् + असूयः + च (विसर्गसन्धिः)
शौचानामर्थशौचम्	=	शौचानाम् + अर्थशौचम्

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

ब्रूयात्	=	$\sqrt{\text{ब्रूञ्}}$ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
पृच्छतः	=	$\sqrt{\text{प्रच्छ्}}$ + शतृ, पञ्चमी/ षष्ठी, एकवचनम्
आचरेत्	=	आ + $\sqrt{\text{चर्}}$ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
वर्धन्ते	=	$\sqrt{\text{वृध्}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
बुध्येत	=	$\sqrt{\text{बुध्}}$ विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

निर्वर्त्य	=	निर् + √वृत् + ल्यप्
ग्राह्यम्	=	√ग्रह् + ण्यत्, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
जानन्	=	√ज्ञा + शतृ, पुंल्लिङ्गम्
श्रद्धावान्	=	श्रद्धा + मतुप्, पुंल्लिङ्गम्
स्मृतम्	=	√स्मृ + क्त, नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्
अवमनतव्याः	=	अव + √मन् + तव्यत् (स्त्री. / पुं.), बहुवचनम्
आचारवान्	=	आ + √चर् + घञ् + मतुप्

अभ्यासः

मौखिकः

1. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) कस्य चत्वारि वर्धन्ते ?

(ख) अभिवादनशीलस्य कानि चत्वारि वर्धन्ते ।

(ग) कति मान्यस्थानानि सन्ति ?

(घ) पञ्च मान्यस्थानानि कानि सन्ति ?

(ङ) कदा बुध्येत ?

2. सुस्पष्टम् उच्चारयत

ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
आचरेत्	आचरेताम्	आचरेयुः
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः

3. पठत

न मित्रम्	–	अमित्रम्
न मेध्यम्	–	अमेध्यम्
न असूया	–	अनसूया
न पृष्ट:	–	अपृष्ट
न न्यायेन	–	अन्यायेन
न उचितम्	–	अनुचितम्

लिखित:

4. उदाहरणानुरूपं वाक्यानि रचयत

नित्यं	=	वयं नित्यं विद्यालयं गच्छाम: ।
पिता	=	
स्वस्थ:	=	
काञ्चनम्	=	
जीवति	=	
रक्षार्थम्	=	

5. सुमेलनं कुरुत

सदाचार:	=	श्रेष्ठ:
मेधावी	=	कस्यचित् वंशस्य पूर्वपुरुष:
सुभाषितम्	=	समय–विभाग:
पूर्वज:	=	सुन्दरं वचनम्

गरीय: = सज्जनानां व्यवहार:

मुहूर्त: = य: कञ्चित् विलक्षणसंस्कारं धारयति

6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

(क) कल्याणकामिना के नावमन्तव्या: ?

(ख) कस्मात् अमृतं ग्राह्यम् ?

(ग) किं शौचं श्रेष्ठं स्मृतम् ?

(घ) क: शतं वर्षाणि जीवति ?

(ङ) अपृष्ट: किन्न कुर्यात् ?

7. वर्णान् संयोज्य लिखत -

यथा व् + इ + त् + त् + अ + म् – **वित्तम्**

1. ब् + र् + आ + ह् + म् + अ: – ....
2. म् + उ + ह् + ऊ + र् + त् + अ: – ....
3. श् + र् + अ + द् + ध् + आ – ....
4. श् + ऋ + ङ् + ग् + आ + र् + अ: – ....
5. उ + ज् + ज् + व् + अ + ल् + अ: – ....

8. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत -

यथा- सर्वेषामेव – सर्वेषाम् + एव

लोकमाचरेत् – ....+ ....

रक्षार्थमायुष: – ....+ ....

वृत्तममेध्यात् – ....+ ....

प्रथममेव – ……………….+ ……………………

शौचानामर्थशौचम् – ……………….+ ……………………

9. मञ्जूषाया: पदानि संयोज्य वाक्यानि रचयत –

विशाल:, गंगाया:, पूर्वभागे, मध्ये, तटे, गंगा, पर्वतानां ।

यथा– भारतस्य उत्तरभागे कश्मीरराज्यम् अस्ति ।

(क) भारतस्य …………………………… वंगप्रदेश: अस्ति ।

(ख) विहारस्य …………………………… गंगानदी प्रवहति ।

(ग) वंगोपसागरस्य …………………………… उत्कलप्रदेश: अस्ति ।

(घ) …………………………… तीरे वाराणसी अस्ति ।

(ङ) पाटलिपुत्रस्य उत्तरभागे …………………………… प्रवहति ।

(च) शोणनद: अतीव …………………………… वर्तते ।

(छ) हिमालय: …………………………… राजा कथ्यते ।

10. मञ्जूषात: क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

विराजते, चलत, भविष्यति निवसाम:, निवससि, आसन्

यथा – वयं भारतवर्षे निवसाम: ।

(क) त्वं कस्मिन् ग्रामे …………………………… ?

(ख) पाटलिपुत्रं गंगायास्तटे …………………………… ।

(ग) राज्ञो दशरथस्य चत्वार: पुत्रा: …………………… ।

(घ) यूयं अस्माभि: सह विद्यालयं …………………… ।

(ङ) अस्माकं विद्यालये श्व: वार्षिकोत्सव:……………… ।

योग्यता-विस्तारः

पाठ से सम्बद्ध

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में शिष्ट आचरण या सदाचार पर बल दिया गया है। इस देश की परम्परा में जिस व्यवहार से सामाजिक सामंजस्य बना रहे, दूसरे लोग प्रसन्नता का अनुभव करें तथा जो अनुकरणीय हो उसे सदाचार के अन्तर्गत रखा जाता था। विभिन्न पुराणों में दैनिक जीवन में पालने योग्य ऐसे नियमों की लम्बी-लम्बी सूचियाँ दी गयी हैं। भौतिक युग में उनमें कुछ हास्यास्पद या व्यङ्ग्य का पात्र भी बन गई हैं। किन्तु अधिकांश आचरण समय से खरे उतरे हैं। जैसे बड़े लोगों का सम्मान करना, सत्संगति, आर्थिक ऋजुता (ईमानदारी), सत्य का पालन, ज्ञान के प्रति उत्सुकता इत्यादि। इनको आज के नीतिशास्त्री "मानवमूल्य" मानते हैं।

पाठ में दिये गये पद्यों का मूल भाव निम्नांकित है -

श्लोक 1 -विद्वान् को सही समय और पात्र के समक्ष बोलना चाहिए।

श्लोक 2 -अभिवादन एवं बड़ों की सेवा का सत्फल।

श्लोक 3 -सम्माननीय वस्तुओं का तारतम्य-धन से लेकर विद्या तक।

श्लोक 4 -प्रातःकालीन स्वास्थ्यप्रद कार्य।

श्लोक 5 -संकट में भी तिरस्कार न करने योग्य व्यक्ति।

श्लोक 6 -अच्छी वस्तुओं के उद्भव स्थान की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

श्लोक 7 -सदाचारी की प्रशंसा।

श्लोक 8 -धनविषयक पवित्रता का महत्त्व।

व्याकरण से सम्बद्ध

संख्यावाचक शब्द (76 से 100 तक) – पूर्व पाठ में दिये गये संकेतों के अनुसार इन संख्याओं का भी प्रयोग होता है । कुछ संख्याओं के दो-दो रूप होते हैं, विशेषरूप से द्वि और अष्ट से जुड़ने वाले शब्द तथा शून्ययुक्त संख्या के पूर्व के शब्द । इनपर ध्यान देना चाहिए । यद्यपि कोई एक रूप ही लोकप्रिय होता है तथापि बाद की भाषाओं में विकास की दृष्टि से दोनों विकल्पों का महत्त्व है ।

76	=	षट्सप्तति:
77	=	सप्तसप्तति:
78	=	अष्टासप्तति:/अष्टसप्तति:
79	=	नवसप्तति: / एकोनाशीति:
80	=	अशीति:
81	=	एकाशीति:
82	=	द्व्यशीति:
83	=	त्र्यशीति:
84	=	चतुरशीति:
85	=	पञ्चाशीति:
86	=	षडशीति:
87	=	सप्ताशीति:
88	=	अष्टाशीति:

89	=	नवाशीतिः / एकोननवतिः
90	=	नवतिः
91	=	एकनवतिः
92	=	द्वानवतिः / द्विनवतिः
93	=	त्रयोनवतिः / त्रिनवतिः
94	=	चतुर्नवतिः
95	=	पञ्चनवतिः
96	=	षण्णवतिः
97	=	सप्तनवतिः
98	=	नवनवतिः/एकोनशतम्
100	=	शतम्

QQQ

त्रयोदशः पाठः

रविषष्ठी-व्रतोत्सवः

(सन्धि, विभक्ति)

(मूलतः दक्षिण बिहार में मनाया जाने वाला रविषष्ठी व्रतोत्सव 'छठ पर्व' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। आजकल इसे उन सभी स्थानों में मनाते हैं जहाँ बिहार के लोग बस गये हैं। यह मुख्य रूप से कार्तिक में तथा गौण रूप से चैत्र में शुक्ल पक्ष की षष्ठी-सप्तमी तिथियों को मनाया जाता है। वैसे इसकी तैयारी कई दिन पहले से होने लगती है। विभिन्न जलाशयों के आस-पास व्रत करने वाले स्त्री-पुरुष सायंकाल तथा प्रातःकाल जब सूर्य को अर्घ्य देने जाते हैं तो विशाल मेले का दृश्य होता है। यह उत्सव बिहार की विशेष पहचान है। प्रस्तुत पाठ में इसका परिचय दिया गया है।)

प्राकृतिकपदार्थेषु सूर्यः सर्वाधिकः तेजस्वी आरोग्यप्रदश्च मन्यते। अनेन सर्वे जीवाः प्राणिनः वनस्पतयः प्राणान् लभन्ते। अस्य उपयोगितां विचार्य देवरूपेण इमं पूजयन्ति जनाः। प्राचीनकालात् सूर्यः भगवान् इति पूज्यते। सूर्यस्य पूजने कश्चित् पुरोहितः मध्यस्थः न अपेक्षितः भवति इति अस्य विशिष्टता वर्तते।

कार्तिको मासः वर्षाशीतयोः मध्ये अवस्थितः । एवमेव चैत्रो मासः शीतग्रीष्मयोः सन्धिकालः । सन्धिस्थितयोः अनयोः मासयोः अनेके रोगाः ज्वरकासादयः प्रभवन्ति । तत्र रोगाणां विनाशाय उपवासः आवश्यकः । उपवासः रविषष्ठीव्रते अनिवार्यतया जायते । अतः अस्य व्रतस्य वैज्ञानिकं महत्त्वं वर्तते । अपि च चैत्रमासे रवितप्तानि अन्नानि पच्यन्ते गोधूमादीनि । तेषां प्रयोगः अस्य व्रतस्य नैवेद्याय भवति । अतः चैत्रकालिकः व्रतोत्सवः ग्रामेषु प्रसिद्धः । कार्तिककालिकः व्रतोत्सवस्तु नगरेषु बहुधा आयोजितः । सर्वथापि जलाशयः अस्मिन् व्रतोत्सवे आवश्यकः तडागो वा नदी वा । सागरतटेषु स्थिताः जनाः सागरेऽपि स्नात्वा अर्घ्यदानं कुर्वन्ति ।

यस्मिन् मासे रविषष्ठीव्रतोत्सवः आयोजितः भवति परिवारे तस्य प्रथमदिवसादेव परिवारे अभक्ष्याः पदार्थाः वर्जिताः भवन्ति । शुक्लपक्षस्य चतुर्थदिवसः **संयतः** नाम क्रियाकलापः । तदा स्नात्वा पवित्रं सिद्धान्नम् ओदनादिकं पचन्ति, इष्टजनानपि भोजयन्ति व्रतिनः । वस्तुतः तस्मादेव दिवसात् संयमः प्रारभते । पञ्चमदिवसे एकवारमेव व्रतिनः पायसरोटिकयोः सूर्यास्तादनन्तरं भोजनं कुर्वन्ति ।

इष्टजनानपि भोजयन्ति । ततः षष्ठदिवसे सम्पूर्णदिवसम् अनाहाराः व्रतिनः सायंकाले शूर्पेषु फलानि धारयित्वा दीपकं च प्रज्वाल्य सूर्याय अर्घ्यदानं कुर्वन्ति । इदं दृश्यमतीव पवित्रं मनोहरं च । रात्रौ भूमौ शयित्वा व्रतिनः पुनः प्रातःकाले सप्तमदिवसे उदीयमानाय सूर्याय स्नानपूर्वकम् अर्घ्यदानं पूर्ववत् कुर्वन्ति। तदनन्तरं **पारणं** क्रियते । व्रतिनः स्वयं प्रसादग्रहणं कुर्वन्ति अपरेभ्यश्च प्रयच्छन्ति ।

इत्थं रविषष्ठी-व्रतोत्सवः सूर्योपासनायाः महत्त्वपूर्णः अवसरः । वस्तुतः अत्र षष्ठीदेवीपूजनं सन्तानलाभाय, सूर्यपूजनम् आरोग्याय इति द्वयोः पूजनयोः मिश्रणरूपः व्रतोत्सवः । क्रमशः अस्य प्रसारः वर्धमानः दृश्यते ।

शब्दार्थः

प्राकृतिकपदार्थेषु	=	प्राकृतिक पदार्थों में
सर्वाधिकः	=	अत्यधिक, सबसे बढ़कर
तेजस्वी	=	तेजस्वी, आत्मबल से युक्त, ओज से युक्त, ऊर्जावान् (व्यक्ति)
आरोग्यप्रदः	=	नीरोगता प्रदान करने वाला
मन्यते	=	माना जाता है
लभन्ते	=	प्राप्त करते हैं
विचार्य	=	विचार करके, सोचकर
देवरूपेण	=	देवता के रूप में
पूजयन्ति	=	पूजते हैं
प्राचीनकालात्	=	पुराने समय से

पूजने	=	पूजा करने के समय में
कश्चित्	=	कोई
मध्यस्थः	=	बीच में रहने वाला, बिचौलिया
अपेक्षितः	=	आवश्यक
शीतः	=	जाड़ा
अवस्थितः	=	स्थित
एवमेव (एवम् + एव)	=	इसी प्रकार, ऐसा ही
ग्रीष्मः	=	गर्मी
सन्धिकालः	=	जोड़नेवाला / बीच वाला समय
अनयोः	=	दोनों में
ज्वरकासादयः	=	बुखार, खाँसी आदि
प्रभवन्ति	=	उत्पन्न होते हैं
विनाशाय	=	विनाश के लिए
चैत्रमासे	=	चैत महीने में
अन्नानि	=	अन्न
पच्यन्ते	=	पकाये जाते हैं
रवितप्तानि	=	धूप में सुखाये हुए
पच्यन्ते	=	पकाये जाते हैं
गोधूमः	=	गेहूँ

नैवेद्याय	=	अर्पण के लिए
ग्रामेषु	=	गाँवों में
कार्तिककालिकः	=	कार्तिक माह वाला
नगरेषु	=	नगरों / शहरों में
बहुधा	=	प्रायः
सर्वथा	=	सब तरह से
तडागः	=	तालाब
सागरतटेषु	=	समुद्र के किनारे
स्नात्वा	=	स्नान करके
अर्घ्यदानम्	=	चढ़ावा, पूजन-सामग्री का दान
यस्मिन्	=	जिसमें
अभक्ष्याः	=	नहीं खाने योग्य
वर्जिताः	=	मना किये हुए
तदा	=	तब
सिद्धान्नम्	=	पका हुआ अन्न
ओदनादिकम् (ओदन+आदिकम्)	=	भात आदि
इष्टजनानपि (इष्टजनान्+अपि)	=	प्रिय लोगों को भी
भोजयन्ति	=	खिलाते हैं

प्रारभते	=	शुरू होता है
पायसम्	=	खीर
रोटिका	=	रोटी
अनन्तरम्	=	बाद में, पश्चात्
कुर्वन्ति	=	करते हैं
ततः	=	इसके बाद
अनाहाराः	=	बिना भोजन किए
धारयित्वा	=	रखकर
प्रज्वाल्य	=	जला कर
शयित्वा	=	सोकर
उदीयमानाय	=	उगते हुए को
पूर्ववत्	=	पहले की तरह
क्रियते	=	किया जाता है
अपरेभ्यः	=	दूसरों को
प्रयच्छन्ति	=	देते हैं
इत्थम्	=	इसप्रकार
वर्धमानः	=	बढ़ता हुआ
दृश्यते	=	दिखलायी देता है, देती है

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

आरोग्यप्रदश्च	=	आरोग्यप्रदः + च (विसर्गसन्धिः)
कश्चित्	=	कः + चित् (विसर्गसन्धिः)
एवमेव	=	एवम् + एव
व्रतोत्सवः	=	व्रत + उत्सवः (गुणसन्धिः)
तस्मादेव	=	तस्मात् + एव (व्यञ्जनसन्धिः)
एकवारमेव	=	एकवारम् + एव
सूर्यास्तादनन्तरम्	=	सूर्यास्तात् + अनन्तरम् (व्यञ्जनसन्धिः)
अपरेभ्यश्च	=	अपरेभ्यः + च (विसर्गसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

मन्यते	=	√मन् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
लभन्ते	=	√लभ् लट्प्रकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
विचार्य	=	वि + √चर् + ल्यप्
पूजयन्ति	=	√पूज् लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
पूज्यते	=	√पूज् + यक् (य), कर्मवाच्यम्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अवस्थित:	=	अव + √स्था + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
प्रभवन्ति	=	प्र + √भू लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
प्राप्नोति	=	प्र + √आप् लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम्
पच्यन्ते	=	√पच् + यक्, कर्मवाच्यम्, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
प्रसिद्ध:	=	प्र + √सिध् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनत्
आयोजित:	=	आ + √युज् + णिच् + क्त, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
स्नात्वा	=	√स्ना + क्त्वा
कुर्वन्ति	=	√कृ लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
वर्जिता:	=	√वृज् + क्त, (पुं० / स्त्री.), बहुवचनम्
स्नात्वा	=	√स्ना + क्त्वा
भोजयन्ति	=	√भुज् + णिच् लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
प्रारभते	=	प्र + आ + √रभ् लट्लकार:,प्रथमपुरुष:,एकवचनम्
शयित्वा	=	√शीङ् + क्त्वा
प्रयच्छन्ति	=	प्र + √दाण् लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्
वर्धमान:	=	√वृध् + शानच्, पुंल्लिङ्गम्, एकवचनम्
दृश्यते	=	√दृश् +यक्(य्),कर्मवाच्यम्,प्रथमपुरुष:, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत –**

   प्राकृतिकपदार्थेषु, तेजस्वी, आरोग्यप्रदः वर्षाशीतयोः, शीतग्रीष्मयोः ज्वरकासादयः, रविषष्ठीव्रते, अनिवार्यतया, गोधूमादीनि, नैवेद्याय, व्रतोत्सवस्तु, सागरेऽपि, रविषष्ठीव्रतोत्सवः, अभक्ष्याः, पायसरोटिकयोः, सूर्यास्तादनन्तरं, प्रज्वाल्य, अपरेभ्यश्च ।

2. **निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत –**

   प्राकृतिकपदार्थेषु, तेजस्वी, आरोग्यप्रदः, ज्वरकासादयः, गोधूमादीनि, नैवेद्याय, स्नात्वा, अर्घ्यदानम्, अभक्ष्याः, वर्जिता, इष्टजनान्, तस्मात्, पायसरोटिकयोः, प्रज्वाल्य, अपरेभ्यः, वर्धमानः ।

3. **एतेषु किं सत्यम् असत्यं वा, वदत –**

   (क) प्राकृतिकपदार्थेषु सूर्यः आरोग्यप्रदः मन्यते ।

   (ख) सूर्यः देवरूपेण पूज्यते ।

   (ग) कार्तिको मासः शीतवसन्तयोः मध्ये अवस्थितः ।

   (घ) चैत्रो मासः शीतग्रीष्मयोः सन्धिकालः ।

4. बिहार में मनाये जानेवाले किसी एक पर्व का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

लिखितः

1. **एकपदेन उत्तरत –**

   (क) प्राकृतिकपदार्थेषु सर्वाधिकः तेजस्वी आरोग्यप्रदश्च कः ?

(ख) कार्तिको मास: कस्मात् मासात् पश्चात् आगच्छति ?

(ग) रोगाणां विनाशाय क: आवश्यक: ?

(घ) रविषष्ठी-व्रतोत्सव: कदा मन्यते ?

(ङ) सूर्योपासनाया: महत्त्वपूर्ण: अवसर: क: ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(क) रविषष्ठीव्रतोत्सव: अन्येन केन नाम्ना ज्ञायते ?

(ख) रविषष्ठीव्रतोत्सव: कदा आयोजितो भवति ?

(ग) छठ-व्रतोत्सवे कस्य पूजा भवति ?

(घ) रविषष्ठीव्रतोत्सव: कार्तिकमासस्य कस्मिन् दिवसे मन्यते ?

(ङ) कार्तिकमासस्य शुक्लपक्षस्य सप्तमदिवसे किं भवति ?

3. उदाहरणानुसारं लिखत

यथा - एकवचनम्	बहुवचनम्
मन्यते	**मन्यन्ते**
(क) लभते	....
(ख) वर्तते	....
(ग) प्रभवति	....
(घ) भवति	....
(ङ) करोति	....

(च) प्रारभते ....

(छ) भोजयति ....

(ज) प्रयच्छति ....

(झ) पश्यति ....

4. उदाहरणानुसारेण विभक्तिनिर्णयं कुरुत –

यथा – पदार्थेषु सप्तमी विभक्तिः

(क) वनस्पतयः ....

(ख) प्राचीनकालात् ....

(ग) वर्षाशीतयोः ....

(घ) रोगाणाम् ....

(ङ) रविषष्ठीव्रते ....

(च) व्रतस्य ....

(छ) नैवेद्याय ....

(ज) भूमौ ....

(झ) सूर्योपासनायाः ....

5. मेलनं कुरुत –

(क) सूर्यः 1. ऊर्जावान्

(ख) तेजस्वी 2. रविः

(ग) अनिवार्य: 3. प्राय:

(घ) बहुधा 4. अपरिहार्य:

(ङ) स्नात्वा 5. विस्तार:

(च) प्रसार: 6. स्नानं कृत्वा

6. कोष्ठात् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) प्राकृतिकपदार्थेषु .... सर्वाधिक: तेजस्वी आरोग्यप्रदश्च मन्यते। (सूर्य:/चन्द्र:)

(ख) वर्षाशीतयो: मध्ये अवस्थित: .... मास:। (कार्तिक: / चैत्र:)

(ग) कार्तिकमासे अभक्ष्या: पदार्था: .... भवन्ति। (वर्जिता:/ अवर्जिता:)

(घ) 'छठ' इति व्रतोत्सवे .... अर्घ्यदानं दीयते (सूर्याय / चन्द्राय)

(ङ) रविषष्ठीव्रतोत्सवस्य .... महत्त्वं वर्तते (वैज्ञानिकं / आर्थिकं)

7. निम्नलिखितानां पदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत -

(क) आरोग्यप्रद: + च = ...

(ख) व्रत + उत्सव: = ...

....

(ग) .... + ... = तस्मादेव

(घ) क: + चित् = ...

(ङ) .... + ... = सूर्यास्त:

8. शब्दान् दृष्ट्वा लिखत -

ज्योत्स्ना, तेजस्वी, अनिवार्यतया, नैवेद्याय, व्रतोत्सव:, सागरेऽपि,

पायसरोटिकयोः, प्रज्वाल्य, अपरेभ्यः ।

9. वर्गप्रहेलीतः धातुरूपं निस्सारयत -

ति	ह	स	थः	न्ति	मः
ह	स	सि	ह	सा	मि
स	ति	ह	स	ध	ह
न्ति	ह	स	तः	सा	सा
ह	सा	मः	ह	मः	वः

10. संस्कृते अनुवदत -

(क) रविषष्ठव्रतोत्सव बिहार का एक प्रसिद्ध पर्व है ।

(ख) यह मुख्यतः कार्तिक महीना में मनाया जाता है ।

(ग) प्राकृतिक पदार्थों में सूर्य सर्वाधिक रोगविनाशक माना जाता है ।

(घ) कार्तिक माह वर्षा और शीतऋतु के मध्य स्थित है ।

11. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत -

यथा- सूरज सूर्यः

माह ....

कातिक ....

गेहूँ ....

तालाब ....

सूप ....

रात ....

छठी ....

योग्यता-विस्तारः

सूर्य की पूजा वैदिक काल से भारत में होती रही है। प्रारम्भ में सूर्य को प्राकृतिक देवताओं में सबसे अधिक दृश्य होने के कारण मान्यता मिली। उन दिनों सूर्य को भी अन्य वैदिक देवताओं के समान यज्ञों में आहुतियाँ दी जाती थीं। कालक्रम से पुराणों का विकास हुआ तथा देवताओं से सम्बद्ध आख्यान बनने लगे। ज्योतिष में तिथियों और नक्षत्रों से सम्बद्ध कथाएँ भी प्रचलित हुईं। बहुदेववाद का व्यापक परिवेश पौराणिक युग में दिखाई पड़ने लगा। सूर्य से सम्बद्ध भविष्यमहापुराण तथा साम्ब उपपुराण विकसित हुए जिनमें सूर्यपूजा का व्यापक विवरण दिया गया। सप्तमी तिथि के देवता के रूप में सूर्य को जोड़ा गया। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण था कि सूर्य की किरणों में सात रंग होते हैं, इसलिए सूर्य को सात घोड़ों के रथ पर चलने वाला कहा गया। हिन्दू पञ्चांगों में रविवार को सप्तमी तिथि पड़ने से इसे -'भानुसप्तमी' कहा जाता है। वैसे रविवार का दिन सूर्य से ही सम्बद्ध है। इस दिन बहुत से श्रद्धालु सूर्य के सम्मान में अलवण (नमक न खाने का) व्रत करते हैं। सूर्यपूजा का पुनरुद्धार प्रायः ईसा की प्रथम शताब्दी में दक्षिण बिहार में किया गया। वहाँ सूर्य से सम्बद्ध कई तीर्थस्थानों एवं मंदिरों का निर्माण राजाओं की सहायता से हुआ। औरंगाबाद जिले में देव का सूर्यमन्दिर, नालन्दा के निकट बड़गाँव का मन्दिर, औंगारी का सूर्यमन्दिर, पुण्यार्क (पण्डारक) का मन्दिर तथा अन्य कई सूर्यमन्दिर सूर्यपूजा के प्रसिद्ध स्थल

हैं।

रविषष्ठीव्रतोत्सव कार्तिक तथा चैत्र-दो महीनों में चार दिनों का पर्व है। मुख्यतः षष्ठी देवी की पूजा की परम्परा सन्तानलाभ के लिए विकसित हुई थी । उसे सूर्यसप्तमी से जोड़कर इस व्रतोत्सव में संयम की भव्य कल्पना की गयी। वस्तुतः उपर्युक्त दोनों महीनों में ऋतुपरिवर्तन के कारण रोग आदि बाधाएँ सम्भाव्य हैं इसलिए उपर्युक्त धार्मिक कार्यक्रम के अन्तर्गत उपवास और संयम के नियम जुड़ जाने से इन बाधाओं पर अद्भुत नियंत्रण होता है । इसलिए स्वास्थ्य-विज्ञान को धर्म के साथ जोड़कर यह आस्था का महान् उत्सव प्रचलित हुआ। आज के प्रसारवादी युग में इस उत्सव को दूर-दूर तक फैलने में देर नहीं लगी है। इसमें मुख्य कार्य पवित्र होकर सूर्य को सायंकाल और प्रातःकाल अर्घ्य देना है जो किसी जलाशय के निकट होता है । बिहार का इसे सबसे बड़ा और भव्य पर्व कहें तो इसमें आश्चर्य नहीं। सूर्य को अर्घ्य देने का मन्त्र इस प्रकार है -

एहि सूर्य ! सहस्रांशो ! तेजोराशे ! जगत्पते ! ।
अनुकम्पय मां देव ! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ।।

QQQ

चतुर्दशः पाठः

कृषिगीतम्

(विशेषण-विशेष्य)

(प्रस्तुत पाठ अभिनव संस्कृत गीत है जो कुछ भजनों की धुन में रचा गया है । इसमें भारतीय किसानों की स्थिति का वर्णन है । किसान बहुत परिश्रम करके रूखी धरती को हरी-भरी वसुन्धरा में बदल देते हैं। वह मानो नये परिधान धारण कर लेती है । किसानों को यह चिन्ता है कि उनके परिश्रम से उत्पन्न सस्य सम्पदा का उपभोग करने का अवसर उन्हें नहीं मिलता है । उनके अनाज ऋण चुकाने के लिए बिचौलियों के हाथों सस्ते दामों में बेच दिये जाते हैं। ये बिचौलिए उन्हें बाजारों में अधिक मूल्य पर बेचते हैं और किसान निर्धन का निर्धन ही रह जाता है । उसकी अशिक्षा इसका कारण है, उसके पास सीधा बाजार में जाने का साधन नहीं । फिर भी सीधा-सादा किसान धरती के साथ अपने जुड़ाव के कारण प्रसन्न है। ऋतुएँ उसके लिए वरदान हैं ।)

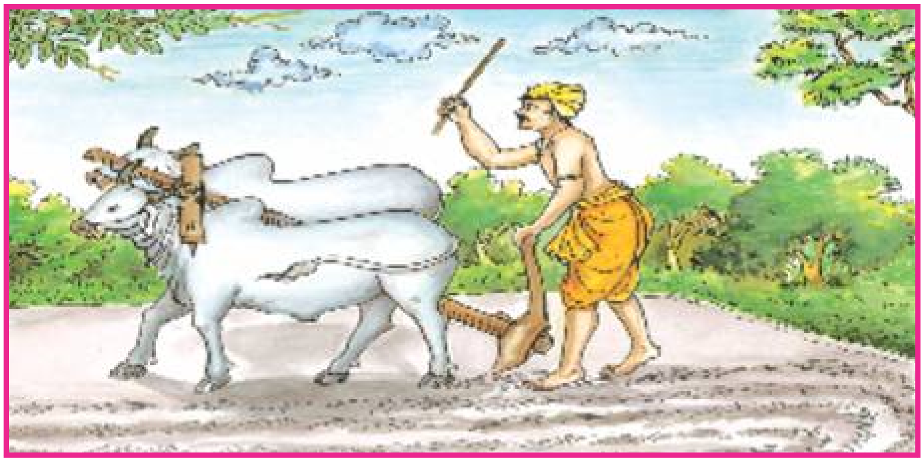

वयं गायाम कृषिगीतं धरा परिधानयुक्तेयम् ।

1. तदासीद् या विकृतवेषा कुरूपा निर्जला चेयम् ।
   इदानीं नः श्रमेणाप्ता धरा परिधानयुक्तेयम् ।।

2. समेषां चिन्तयास्माकं कथञ्चित् कर्मणा फलितम् ।
बहूनां कर्षकाणां नः श्रमैः सस्यं समाकलितम् ।।

3. परं ते मध्यमाः सर्वे समेषामन्नराशीनाम् ।
क्रयं कृत्वाल्पमूल्येन, पुनर्नो निर्धनान् कुर्युः ।।

4. धराऽस्माकं भवेत्कामं न चान्नं नो हितायेदम् ।
वयं गायाम कृषिगीतं तथापीत्थं सुखायेदम् ।।

5. ॠतूनां कष्टमाघातैः वयं सर्वे समभ्यस्ताः ।
शरीरे नास्ति परिधानं कृषिः परिधानयुक्तेयम् ।।

6. सुखं सन्तोषवाचा यत् प्रशस्यं कल्पयामस्तत् ।
समेषामन्नभाजां सा कृषिः सुखलब्धये भूयात् ।।

अन्वयः – 1. तदा या इयम् विकृतवेषा कुरूपा निर्जला च आसीत् (सा इयं) धरा इदानीं नः श्रमेण (हरित) परिधानयुक्ता आप्ता ।

2. समेषां चिन्तया अस्माकं कर्मणा कथंचित् फलितम् । नः बहूनां कर्षकाणां श्रमैः सस्यं समाकलितम् ।

3.परं ते सर्वे मध्यमाः अल्पमूल्येन समेषाम् अन्नराशीनां क्रयं कृत्वा पुनः नः निर्धनान् कुर्युः।

4. कामं धारा अस्माकं भवेत्, इदम् अन्नं च नः हिताय न (अस्ति)। तथापि वयं कृषिगीतं गायाम, इत्थम् इदं सुखाय (भवति)।

5. वयं सर्वे ॠतूनाम् आघातैः कष्टं (प्रति) समभ्यस्ताः । शरीरे परिधानं नास्ति । (किन्तु) इयं कृषिः परिधानयुक्ता ।

6. समेषाम् अन्नभाजां सन्तोषवाचा यत् सुखं तत् प्रशस्तं (वयं) कल्पयामः। सा कृषिः सुखलब्धये भूयात् ।

शब्दार्थः

धरा	–	धरती
परिधानम्	–	पहनावा
विकृतवेषा	–	खराब वेशभूषा वाला
समेषाम्	–	सब का / की / के
कथञ्चित्	–	किसी तरह
कर्षकाणाम्	–	किसानों का
सस्यम्	–	फसल
समाकलितम्	–	प्राप्त हुआ
मध्यमाः	–	बीच वाले, बिचौलिये
नः	–	हमारा / री / रे
कामम्	–	निश्चय ही, भले ही, यद्यपि
आघातैः	–	आघातों / चोटों से
समभ्यस्ताः	–	अभ्यस्त, आदी
प्रशस्यम्	–	अच्छा, प्रशंसनीय
कल्पयामः	–	करते हैं, कर सकते हैं (हमलोग)
सुखलब्धये	–	सुख पाने के लिए
अन्नभाजाम्	–	अन्न खाने वालों का

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेद :

तदासीत्	–	तदा + आसीत् (दीर्घसन्धिः)
चेयम्	–	च + इयम् (गुणसन्धिः)
श्रमेणाप्ता	–	श्रमेण + आप्ता (दीर्घसन्धिः)
परिधानयुक्तेयम्	–	परिधानयुक्ता + इयम् (गुणसन्धिः)
चिन्तयास्माकम्	–	चिन्तया + अस्माकम् (दीर्घसन्धिः)
कृत्वाल्पमूल्येन	–	कृत्वा + अल्पमूल्येन (दीर्घसन्धिः)
पुनर्नो (पुनर्नः)	–	पुनः + नः (विसर्गसन्धिः)
धराऽस्माकम्	–	धरा + अस्माकम् (दीर्घसन्धिः)
चान्नम्	–	च + अन्नम् (दीर्घसन्धिः)
हितायेदम्	–	हिताय + इदम् (गुणसन्धिः)
नास्ति	–	न + अस्ति (दीर्घसन्धिः)
कल्पयामस्तत्	–	कल्पयामः + तत् (विसर्गसन्धिः)
तथापीत्थम्	–	तथा + अपि + इत्थम् (दीर्घसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

गायामः	–	√गै + लोट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्
आसीत्	–	√अस् + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
कृत्वा	–	√कृ + क्त्वा

कुर्युः	-	√कृ + विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्
भवेत्	-	√भू + विधिलिङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
अस्ति	-	√अस् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
कल्पयामः	-	√कृप् + णिच्, लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, बहुवचनम्
भूयात्	-	√भू + लोट्लकारः प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. गीतं सस्वरं गायत ।
2. स्वमातृभाषायां कृषिगीतं श्रावयत ।

लिखित :

3. गीतांशेषु रिक्तस्थानानि स्मरणेन पूरयत -

समेषां .... कथंचित् .... ।

धराऽस्माकं भवेत्कामं .... ।

वयं गायाम .... सुखायेदम् ।

ऋतूनां .... वयं सर्वे .... ।

4. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनं च लिखत -

	पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा-	कर्षकाणाम्	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	शरीरे	....	....	....
	सुखाय	....	....	....

कर्मणा ....

आघातैः ....

उपलब्धये ....

5. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –

(क) तदा धरा विकृतवेषा आसीत् ।

(ख) इदानीं धरा परिधानयुक्ता अस्ति ।

(ग) कर्षकाणां श्रमैः सस्यं प्राप्यते ।

(घ) वयं कृषिगीतं गायाम ।

(च) कर्षकाणां कृषिकर्म अस्माकं सुखाय भवति ।

6. निम्नवाक्येषु अव्ययपदानि चित्वा लिखत – तदा

यथा – तदा वसुधा कुरूपा आसीत् । ....तदा..............

(क) अस्माकं श्रमेण इदानीं धरा श्यामला अस्ति । ....

(च) कर्षकाणां परिश्रमः कथंचित् सफलो जातः । ....

(ट) परं मध्यमाः अल्पमूल्येन अन्नं क्रीणन्ति । ....

(त) ते अस्मान् पुनः निर्धनान् कुर्वन्ति । ....

(प) वसुन्धरा सुरूपा सजला च वर्तते । ....

7. समुचितं विपरीतार्थकपदं चित्वा मेलयत –

इदानीम्	बहूनाम्
निर्जला	इदम्
दुःखाय	केषाञ्चित्
अल्पानाम्	तदा
समेषाम्	निर्धनान्
धनिनः	सजला
तत्	सुखाय

8. कोष्ठात् पदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

मिलति, गङ्गायाः, वर्तते, हिमालयात्, देशस्य

विहारस्य राजधानी पाटलिपुत्रम् .... । इदं नगरं .... तटे अवस्थितमस्ति । गंङ्गा अस्माकं .... पवित्रतमा नदी वर्तते । इयं .... निःसृत्य वङ्गोपसागरे .... ।

9. निम्नलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नानां निर्माणं कुरुत

भारतवर्षं कृषिप्रधानः देशः वर्तते । अत्र षट् ऋतवः भवन्ति । वसन्तः ऋतूनां राजा कथ्यते । विविधेषु ऋतुषु विविधानि सस्यानि फलानि च उत्पद्यन्ते । अत्रत्या धरा सर्वदा सस्यश्यामला भवति । कृषिकाश्च परिश्रमिणः सन्ति ।

यथा - भारतवर्षं कीदृशः देशः वर्तते ?

....

....

....

....

....

योग्यता-विस्तारः

इस नवगीत की रचना **प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'** ने की है । इसका लयपूर्वक गान सम्भव है जिसे कक्षाओं में बताया जा सकता है ।

यह एक विडम्बना है कि सबको भोजन देनेवाला भारतीय किसान स्वयं प्रायः भूखा रहता है । पृथ्वी को दिव्य परिधान से विभूषित करने वाला किसान स्वयं आवश्यक वस्त्र से भी वञ्चित रहता है । किसान कई प्रकार के हैं । बड़े-बड़े खेतों के स्वामी, ट्रैक्टर आदि उपकरणों से खेती करने वाले बहुत सम्पन्न हैं। किन्तु कुछ किसान ऐसे भी हैं जो दूसरों के स्वामित्व वाले खेतों में दैनिक मजदूरी करते हैं । प्रस्तुत

कृषिगीत में ऐसे ही दीन-हीन किसानों का वर्णन है । संतोष की अद्‌भुत मूर्ति ऐसा किसान विचारों से बहुत ईमानदार है । इसे वह अपनी नियति मानकर संतुष्ट रहता है, किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता । इधर कुछ वर्षों में राजनीति का खेल खेलने वालों ने उसमें आक्रोश उत्पन्न करने का प्रयास किया है । इसे किसानों की आर्थिक दशा को सुधार कर दूर किया जा सकता है किन्तु इसके लिए राजनेताओं में दृढ़ इच्छाशक्ति और स्वस्थ आर्थिक नीति के संचालन की क्षमता होनी चाहिए ।

किसान सब कुछ देखते हुए भी इसलिए प्रसन्न है कि उसके परिश्रम से धरती सब को भोजन देती है, और वह स्वयं भी सुन्दर रूप धारण कर लेती है ।

अन्तरा 1 – कुरूप, निर्जल धरती को किसान के श्रम से हरा-भरा बनाना ।

अन्तरा 2 – सभी किसानों के परिश्रम, कर्म तथा चिन्ता से फसल की प्राप्ति ।

अन्तरा 3 – मध्यस्थ लोगों के कारण अल्पमूल्य पर अन्नराशि का क्रय एवं किसानों का निर्धन ही रह जाना।

अन्तरा 4 – अन्न भले ही किसानों के हित में न हो फिर भी उन्हें सुख है, वे कृषिगीत गाते हैं ।

अन्तर 5 – सभी ऋतुएँ के आघातों को सहते हुए उनका नग्नप्राय शरीर अभ्यस्त हो गया है । स्वयं परिधान नहीं किन्तु खेत परिधानयुक्त हैं ।

अन्तरा 6 – सभी उपभोक्ताओं के लिए कृषि सुखकारक हो, यही किसान को संतोष है ।

QQQ

प्रासङ्गिकं व्याकरणम्

1. वर्णविचार:

भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है । जैसे क्, ख्, अ, इ इत्यादि । इन वर्णों के संयोग से शब्द बनते हैं । वर्ण समूह को ''वर्णमाला'' में रखते हैं । वर्णों के दो भेद संस्कृत में माने गये हैं - **स्वर वर्ण** तथा **व्यञ्जन वर्ण** । अपने उच्चारण में किसी की अपेक्षा न रखने वाले को **स्वर** कहते हैं (स्वयं राजन्ते इति स्वरा:) । जिनके उच्चारण में स्वर सहायक होता है वे **व्यञ्जन** कहलाते हैं (अन्वग् भवति व्यञ्जनम्) । अ, आ, इ, ई आदि स्वर हैं जबकि क्, ख् आदि व्यञ्जन हैं । प्राचीन काल में केवल व्यञ्जनों को '**वर्ण**' कहते थे और स्वरों को ''अक्षर'' कहा जाता था । किन्तु अब दोनों को वर्ण में समेटा जाता है ।

स्वर वर्ण को **मूलस्वर** तथा **सन्ध्यक्षर** - दो भागों में विभक्त किया गया है । अ, इ, उ, ऋ **(ऌ भी)** ये मूल स्वर हैं जबकि ए, ऐ, ओ, औ ये चारों **सन्ध्यक्षर** कहलाते हैं। वस्तुत: इनका निर्माण दो मूल स्वरों से होता है (अ + इ = ए, अ + उ = ओ, आ + इ = ऐ, आ + उ = औ) । यही कारण है कि अयादि संधि में इन सन्ध्यक्षरों से अय्, अव्, आय्, आव् हो जाते हैं क्योंकि इ, उ का परिवर्तन दूसरी सन्धि में य्, व् हो जाता है । **मूलस्वरों** के तीन-तीन भेद हैं **ह्रस्व, दीर्घ** और **प्लुत** । ह्रस्व स्वर तो इन्हीं रूपों में लिखे जाते हैं किन्तु दीर्घ स्वरों को लिखने में लिपिगत परिवर्तन होता है - आ, ई, ऊ, ॠ। प्लुत लिखने के लिए इन्हीं के बाद तीन का अंक लगाया जाता है । आ 3, ई 3, ऊ 3, ऋ 3 । इनका प्रयोग दूर से पुकारने में होता है । जैसे - हे राम = हे रामा 3 ! स्मरणीय है कि सन्ध्यक्षर दीर्घ होते हैं ।

व्यञ्जनों को तीन वर्गों में विभक्त करते हैं -

1. स्पर्श वर्ण - कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग (25 वर्ण)
2. अन्त:स्थ वर्ण - य् , र्, ल्, व् (4 वर्ण)
3. ऊष्म वर्ण - श्, ष्, स्, ह् (4 वर्ण)

Developed by: ABSOL www.absol.in

सभी व्यञ्जनों को सामान्यतः हल् कहते हैं जो एक प्रत्याहार है । इसे पूर्व के एक पाठ में समझाया गया है। इसीलिए व्यञ्जनों की लिपि में हलन्त का प्रयोग होता है । जैसे मुनीन् में न् 'हलन्त' कहलाता है क्योंकि इसका अन्तिम 'न' शुद्ध हल् या व्यञ्जन है, स्वर से जुड़ा नहीं है ।

व्यञ्जनों को उच्चारण स्थानों तथा प्रयत्नों के आधार पर पुनः वर्गीकृत किया जाता है । **कवर्ग** (क्, ख्, ग्, घ् ङ्) का उच्चारण कण्ठ से होने से इन वर्णों को **कण्ठ्य** कहते हैं । **चवर्ग तालव्य** कहलाता है, **टवर्ग 'मूर्धन्य'** है, **तवर्ग 'दन्त्य'** है जबकि **पवर्ग 'ओष्ठ्य'** है । अन्तःस्थ वर्णों में **य् तालव्य** है, **र् मूर्धन्य, ल् दन्त्य** तथा **व् दन्तोष्ठ्य** है । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं- श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

स्वरों के भी अपने-अपने उच्चारण स्थान हैं। जैसे अ (कण्ठ्य), इ (तालव्य), उ (ओष्ठ्य), ऋ (मूर्धन्य), लृ (दन्त्य)। दीर्घ और प्लुत स्वरों के भी यही स्थान हैं। सन्ध्यक्षरों के उच्चारण में दो-दो स्थानों का उपयोग होता है । जैसे ए, ऐ (कण्ठ-तालु), ओ, औ (कण्ठ - ओष्ठ)। इन उच्चारण स्थानों की स्मरण रखने से अनेक स्वरसन्धियों का रहस्य समझ में आता है।

उच्चारण-स्थान से सम्बद्ध सूत्र सप्तम वर्ग की संस्कृत पाठ्य-पुस्तक (अमृता-द्वितीय भाग) के 'प्रासङ्गिकं व्याकरणम्' में देखे जा सकते हैं । उन्हीं का विवरण यहाँ दूसरे रूप में दिया गया है।

आभ्यन्तर तथा बाह्य प्रयत्न

किसी भी वर्ण के (स्वर या व्यञ्जन) के उच्चारण के लिए उच्चारण-स्थानों में एवं उनके बाहर कण्ठ-नली में किये जाने वाले प्रयास को 'प्रयत्न' कहते हैं । मानव अपनी इच्छा को व्यक्त करने के लिए फेफड़े से वायु-सञ्चार करता है जो कण्ठ एवं मुख विवर से टकरा कर ध्वनियों को उत्पन्न करता है । इसमें कुछ प्रयास करना ही

पड़ता है । प्रयास के मृदु होने या तीव्र होने के कारण उच्चारण भी मृदु या तीव्र होता है। फुसफुसाहट तक बिना प्रयास के नहीं हो सकती । अतः उच्चारण-प्रक्रिया में प्रयत्न का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है ।

प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं - **आभ्यन्तर** तथा **बाह्य** । **आभ्यन्तर प्रयत्न** कण्ठ से लेकर ओष्ठ तक के बीच में होने वाले प्रयत्न को कहते हैं। ये सभी उच्चारण- स्थान हैं, इनका परस्पर सट जाना या आधा सटा होना या बिल्कुल पृथक् होना आभ्यन्तर प्रयत्नों का निर्णय करता है। **बाह्य प्रयत्न** वस्तुतः उच्चारण-स्थानों के बाहर अर्थात् कण्ठ के भीतर ही वायु के रहने की स्थिति में होते हैं । यद्यपि उदात्त आदि प्रयत्न उच्चारण-स्थान के भीतर ही होते हैं फिर भी वे बाह्य कहलाते हैं ।

आभ्यन्तर प्रयत्न के पाँच भेद हैं -

1. **स्पृष्ट** - क् से लेकर म् तक पचीस (25) व्यञ्जनों के उच्चारण में उच्चारण-स्थान या तो स्वयं या जिह्वा के अग्र भाग से सट जाते हैं । इसीलिए इन वर्णों को स्पर्श कहते हैं । इस प्रकार उच्चारण-स्थानों के भीतर स्पर्श की क्रिया होने से स्पृष्ट आभ्यन्तर प्रयत्न है ।
2. **ईषत्-स्पृष्ट** - अन्तःस्थ वर्णों के उच्चारण में ईषत्-स्पृष्ट प्रयत्न होता है । य्, र्, ल्, व् का उच्चारण करते हुए प्रतीत होता है कि जिह्वाग्र से उच्चारण स्थान लगभग स्पर्श की स्थिति में है । इसीलिए ईषत् (थोड़ा) स्पृष्ट नामक प्रयत्न होता है ।
3. **विवृत** - सभी स्वर वर्णों के उच्चारण में उच्चारण-स्थान परस्पर खुले रहते हैं, वायु का निर्गमन सरलता से हो जाता है। इसलिए प्रयत्न को विवृत कहते हैं ।
4. **ईषद्-विवृत** - ऊष्म वर्णों के उच्चारण में यह प्रयत्न लगता है । श्, ष्, स्, ह् का उच्चारण करते हुए इसका अनुभव किया जा सकता है कि उच्चारण-स्थान कुछ-कुछ खुले रहते हैं ।

5. **संवृत** – यह व्याकरण की प्रक्रिया की दृष्टि से माना गया प्रयत्न है । ह्रस्व अ के उच्चारण में यह स्वीकृत है।

बाह्य प्रयत्न वस्तुतः उच्चारण–प्रक्रिया की सूक्ष्मता की व्याख्या करते हैं । इन्हें चार वर्गों में देखा जा सकता है।

1. **विवार, श्वास, अघोष** – वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण (क्–ख्, च्–छ्, ट्–ठ्, त्–थ्, प्–फ्) एवं श्, ष्, स् – ये **अघोष** कहलाते हैं । इनके उच्चारण में कण्ठ के नीचे स्थित स्वर–यन्त्र के द्वार खुले होते हैं । इसलिए इनके उच्चारण में तीव्र ध्वनि नहीं होती । स्वर–यन्त्र के खुले होने से इन्हें **विवार** कहा जाता है । विना विशेष प्रयत्न के उच्चारण से इन्हें **श्वास** भी कहते हैं ।
2. **संवार, नाद, घोष** – अन्य व्यञ्जन **घोष** प्रयत्न में आते हैं । इनके उच्चारण में विशेष ध्वनि (नाद) होती है, स्वर–यन्त्र के द्वारों को प्रयत्नपूर्वक खुलवाना पड़ता है । ग् – घ् – ङ्, ज्–झ्–ञ् इत्यादि के उच्चारण में ये प्रयत्न होते हैं । सन्धियों में क् का ग् होना च् का ज् होना इत्यादि अघोष के घोष में रूपान्तरण का उदाहरण है।
3. **अल्पप्राण, महाप्राण** – जिन वर्णों के उच्चारण में कम वायु लगे उन्हें **अल्पप्राण** कहते हैं । जैसे क्, ग्, ङ् इत्यादि। दूसरी ओर जिनके उच्चारण में दुहरी (अधिक) वायु का प्रयोग होता है वे **महाप्राण** हैं । इनमें ह के रूप में दूसरी ध्वनि जुड़ी रहती है । जैसे– ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, ह् । अल्पप्राणों के साथ **ह** का उच्चारण होने से महाप्राण होता है ।
4. **उदात्त, अनुदात्त, स्वरित** – इनका महत्त्व वैदिक भाषा के उच्चारण में है । उच्चारण–स्थान में उच्चतम स्थान पर जीभ को रखकर 'उदात्त' का, निम्नतम स्थान से अनुदात्त का और मध्यस्थान से स्वरित का उच्चारण होता है । स्मरणीय

है कि ये तीनों भेद केवल स्वर वर्णों के होते हैं। सामान्य उच्चारण में इनका उपयोग नहीं होता।

पदविचार : (Morphology) : वर्णों के योग से जो अर्थबोधक इकाई बनती है उसे 'शब्द' कहते हैं। शब्द बहुत व्यापक अर्थ में आता है। यहाँ तक कि अनर्थक ध्वनि को भी शब्द कहते हैं (ध्वनिः शब्दः) जैसे मेघ का शब्द या किसी वस्तु के गिरने का शब्द। पूरे वाक्य को भी शब्द कहने की परम्परा रही है **(आप्तवाक्यं शब्दः)**। इस व्यापक अर्थ-शृंखला में यहाँ सार्थक ध्वनि-समूह को ही शब्द कहना प्रासंगिक है। जैसे राम, गज, गम् इत्यादि। शब्द जब वाक्य में प्रयोग करने के योग्य हो जाता है तब उसे केवल शब्द न कहकर पारिभाषिक दृष्टि से **'पद'** (Term) कहते हैं। सामान्यतः संस्कृत में **तीन** प्रकार के **पद** होते हैं - **सुबन्त पद** (बालकः, राज्ञः, वयम्, चत्वारि इत्यादि), **तिङन्त पद** (गच्छति, अपठत्, करिष्यति, धावामः इत्यादि) तथा **अव्यय** पद (पुनः, कृत्वा, सर्वथा, शनैः, कथमपि इत्यादि)। सभी पद शब्द हैं, किन्तु सभी शब्द पद नहीं हैं।

सुबन्त पदों में लिंग, वचन, विभक्ति अनिवार्य होते हैं। इसी प्रकार तिङन्त पदों में पुरुष, वचन तथा लकार अनिवार्य हैं। **तिङन्त** पदों में विभक्ति और लिङ्ग नहीं होते किन्तु क्रिया के रूप में जो कृदन्त पद होते हैं (जो वस्तुतः सुबन्त ही हैं) वे लिङ्ग की विशिष्टता रखते हैं। जैसे - बालकः गतवान्, सीता गतवती। किन्तु लकार के रूप में जो तिङन्त होगा वह लिङ्ग के कारण भिन्नता नहीं रखेगा। जैसे-बालकः अगच्छत्, सीता अगच्छत्।

अव्यय पद में लिङ्ग, वचन या विभक्ति के प्रभाव नहीं पड़ते वह सदा एकरूप रहता है। **'व्यय'** का अर्थ **विकार** है। जिसमें विकार नहीं होता, वह अव्यय है। इसका भी वाक्य में स्वतन्त्र प्रयोग होता है। जैसे रमा शीघ्रं चलति। रमा सुबन्त है, शीघ्रम् अव्यय है, चलति तिङन्त है। ये सभी पद हैं। पद भी किसी-न-किसी रूप में

शब्द हैं किन्तु सभी शब्द पद नहीं हो सकते । पद होने के लिए सुप् या तिङ् लगना अथवा अव्यय के रूप में होना अनिवार्य है।

2. **सन्धिविचार : (Euphomic Combination) :** संस्कृतभाषा की विशेषताओं में एक उल्लेखनीय बात है कि यहाँ सन्धिबद्ध पदों का अत्यधिक प्रयोग होता है। इसके कारण संस्कृत की कठिनता से लोग भड़क उठते हैं । गीता, नीतिश्लोक जैसे सुरुचिपूर्ण साहित्य में भी सन्धियों को देखकर उच्चारण करने की कठिनाई का सामान्य लोग प्रतिदिन साक्षात्कार करते हैं। किन्तु सन्धियाँ जहाँ संस्कृत की विशिष्टता हैं वहीं इनका सही ज्ञान हो जाने पर भाषा के सौन्दर्य का एवं इनसे होने वाले अनुप्रासों की सुषमा का रसास्वादन किया जा सकता है । सन्धियों की उपयोगिता संस्कृत भाषा में निम्नांकित रूप से देखी जा सकती है –

1. सन्धियाँ संस्कृत के वर्णों पर आश्रित हैं, वर्णों का उच्चारण-स्थान जानना संस्कृत सन्धियों के लिए अनिवार्य है। इससे संधियों से वर्णविचार का परिचय स्वतः हो जाता है और विश्व की भाषाओं में संस्कृत ध्वनि-विज्ञान (Sanskrit Phonetics) की महत्ता समझ में आती है । यदि + अपि = यद्यपि, इसमें इ का य् क्यों हुआ इसे जानने के लिए समझना होगा कि इ और य् दोनों का उच्चारण स्थान तालु है। इस प्रकार सन्धियाँ मनमाने ढंग से नहीं होती अपितु वर्णों के परिवर्तन में वैज्ञानिकता है । वाक् + ईशः = वागीशः, यहाँ क् का ग् हो जाना न केवल उच्चारण स्थान की समता से है अपितु अघोष वर्ण का घोष वर्ण में परिवर्तन उच्चारण के स्वाभाविक विकास का द्योतक है । इस प्रकार सन्धियों में जो तथाकथित वर्ण-परिवर्तन होते हैं वे संस्कृत ध्वनि-विज्ञान की मौलिक विशिष्टता अंकित करते हैं ।
2. सन्धियों के कारण संस्कृत में संक्षिप्त और संश्लेषण की स्थिति आती है । इससे कभी-कभी उच्चारण का सौन्दर्य भी झलकता है। जैसे – रविः + अपि =

रविरपि । दोनों के उच्चारण में स्वभावत: सौन्दर्य का अन्तर प्रतीत होगा । इसी प्रकार स्मृता + अपि = स्मृतापि में अन्तर देखें । चार वर्ण तीन वर्णों में बदल गये । संस्कृत पद्य-रचना में इसका बहुत महत्त्व होता है ।

3. संस्कृत भाषा संयोगात्मक (Synthetical) है अर्थात् शब्दों के साथ विभक्तियाँ जुड़ी रहती हैं । इसलिए पदों को कहीं भी रख दें, अन्वय करने में असुविधा नहीं होती । सन्धियों के कारण ऐसे विभिन्न स्थलों में रखे हुए पदों से अद्भुत नाद-सौन्दर्य उत्पन्न होता है । दण्डी के ''दशकुमारचरित'' में आए हुए एक वाक्य को लें - **असत्येनास्य नास्यं संसृज्यते** । सन्धियों के कारण ''**नास्य नास्यं**'' में नाद-सौन्दर्य उत्पन्न है । वस्तुत: सन्धि तोड़ देने पर यह वाक्य होगा - **असत्येन अस्य न आस्यं संसृज्यते** । अर्थात् असत्य से इसके मुख का कोई संसर्ग नहीं होता, यह झूठ नहीं बोलता। इतनी साधारण बात को कवि ने **पदचयन, पदस्थापन** तथा **सन्धि** - इन तीनों का प्रयोग करके अद्भुत चमत्कार किया है। सन्धियाँ सामान्य विकृत शब्दों में भी सुन्दरता ला देती हैं, उनका संक्षेपण होने से पद्यों में संस्कृत कवियों ने सन्धियों का अधिकतम प्रयोग किया है ।

4. पद्य-रचना में सन्धि का महत्त्व कितना है यह कोई अनुभवी ही जान सकता है । सन्धियों के कारण छन्दों के चरण में वर्णलाभ होता है । जैसे एक पद्य का चरण है - **विषादप्यमृतं ग्राह्यं......** । इसे सन्धि तोड़कर अन्वित करें तो वाक्य बनेगा- **विषात् अपि अमृतम् ग्राह्यम्** । इसमें छन्द का चरण आठ (8) अक्षर ही चाहिए। अपि और अमृतम् मिलकर पाँच के स्थान पर चार स्वर ही हो जाते हैं और छन्द को सही बना देते हैं । इसी प्रकार त् का दकार हो जाना, म् का अनुस्वार हो जाना भी अनुकूलता उत्पन्न करता है । मकार का स्वर वर्ण से सम्मेलन तथा अनुस्वार में परिवर्तन भी संस्कृत सन्धि की महत्ता का द्योतक है।

जैसे- अहम् + एव = अहमेव, कथम् + इव = कथमिव, वित्तम् + बन्धुः = वित्तं बन्धुः इत्यादि उदाहरण लिए जा सकते हैं। सन्धियों के कारण कभी-कभी पूरा चरण इसी प्रकार एकशब्दात्मक प्रतीत होता है। जिससे संस्कृत की संश्लिष्टता पर प्रकाश पड़ता है। जैसे रघुवंश महाकाव्य में रघुवंशी राजाओं की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कालिदास ने लिखा है -

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् ॥

अर्थात् उन रघुवंशी राजाओं का वर्णन करूंगा जो जन्म से होने वाले संस्कारों के कारण पवित्र थे, फल जब तक न मिल जाए तबतक काम करते रहते थे। समुद्रपर्यन्त पृथ्वी पर जिनका अधिकार था और स्वर्ग तक (आ नाक) जिनके रथ का मार्ग बना हुआ था।

इस प्रकार सन्धि के विविध उपयोगों को देखा जा सकता है।

3. सर्वनाम विशेषणं क्रियाविशेषणं च :

(क) सर्वनाम : व्याकरण में सामान्यतः सर्वनाम की परिभाषा यह दी गयी है कि संज्ञा शब्द के स्थान पर आने वाला शब्द सर्वनाम होता है। जैसे वह, यह, कौन, तुम, हम इत्यादि। यह परम्परा अंग्रेजी व्याकरण से चली है जहाँ सर्वनाम को संज्ञा का स्थानापन्न कहते हैं। संज्ञा का बार-बार प्रयोग बचाने के लिए सर्वनाम प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत में भी प्रायः इसी अर्थ में सर्वनाम शब्द आते हैं। पाणिनि ने सर्व आदि कुल पैंतीस (35) शब्दों को सर्वनाम कहा है (सर्वादीनि सर्वनामानि) इनके शब्दरूप अन्य प्रातिपदिक शब्दों से कुछ भिन्न होते हैं। सर्वनामों में भी सभी लिङ्ग रहते हैं। केवल युष्मद् और अस्मद् का रूप सभी लिङ्गों के लिए एक समान होता है अर्थात् इनमें लिङ्गगत वैशिष्ट्य नहीं रहता। अन्य सभी सर्वनामों के पृथक्-पृथक् लिङ्गों में भिन्न

रूप होते हैं । जैसे-**सर्व** का **पुंल्लिङ्ग** रूप **सर्वः सर्वौ-सर्वे** इत्यादि है तो **स्त्रीलिङ्ग** में **सर्वा - सर्वे - सर्वाः** है, **नपुंसकलिङ्ग** में **सर्वम्-सर्वे सर्वाणि** इत्यादि है ।

सर्वनामों में तद्, यद्, इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद्, भवत् और किम् के प्रयोग बहुत प्रचलित हैं इसलिए सामान्यतः इनके रूपों पर पर्याप्त बल दिया जाता है । यह ध्यातव्य है कि युष्मद् और अस्मद् के रूप कुछ जटिल हैं । इनके प्रातिपदिक रूप केवल बहुवचनों में ही दिखाई पड़ते हैं । एकवचन, द्विवचन में न अस्मद् का पता रहता है, न युष्मद् का । इन पर ध्यान देना चाहिए । यह भी ध्यातव्य है कि दिशा वाचक पूर्व, दक्षिण और उत्तर शब्द तो सर्वनाम हैं, पश्चिम नहीं । इसी प्रकार संख्या वाचक एक और द्वि सर्वनाम हैं अन्य संख्याएँ सर्वनाम नहीं हैं ।

जिस संज्ञा के स्थान में सर्वनाम आता है उसके उस संज्ञा के लिङ्ग और वचन का ग्रहण करता है । जैसे इयं गङ्गा नदी, तस्यां वर्षपर्यन्तं जलं वर्तते । यहाँ नदी स्त्रीलिङ्ग है इसलिए उसका सर्वनाम 'तस्याम्' भी स्त्रीलिङ्ग एकवचन है । उसका सार्वनामिक विशेषण ''इयम्'' भी वैसा ही है । निम्नलिखित वाक्यांशों में रेखांकित पद सर्वनाम हैं- उत्तरस्य तडागस्य, अन्यस्यां (अपरस्यां) नद्याम्, अपराणि फलानि, एकं पुस्तकम्, उभौ बालकौ, सर्वेभ्यः जनेभ्यः, दक्षिणस्यै दिशायै, एकस्याः नार्याः, सर्वाभिः बालिकाभिः, कस्याः नगर्याः आगच्छसि ? उत्तरस्मिन् भागे हिमालयः, पूर्वस्यां दिशायाम् - ये सार्वनामिक विशेषण हैं किन्तु संस्कृत में सर्वनाम ही हैं ।

(ख) विशेषण - किसी अन्य पद की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं । ''विशेषण'' सापेक्ष शब्द है इसलिए इसका विशेष्य के साथ सम्बन्ध होता है । विशेष्य की ही विशेषता विशेषण प्रकट करता है । वह विशेष्य सुबन्त या तिङन्त कोई भी हो सकता है, इसलिए विशेषण के दो भेद होते हैं -

1. सामान्यविशेषण जो सुबन्त की विशेषता बताता है ।
2. क्रियाविशेषण जो तिङन्त अथवा उसके स्थानापन्न क्रिया रूप में प्रयुक्त कृदन्त

की विशेषता बताता है। सामान्यतः इन दोनों को पृथक् माना जाता है क्योंकि इनके प्रयोग की विशेषताएँ पृथक्-पृथक् होती हैं ।

यहाँ (सामान्य) विशेषण की विवेचना की जाती है । यह विशेषण विशेष्य का अन्धानुकरण करता है । व्याकरण के वचन, लिङ्ग तथा विभक्ति की दृष्टि से जो स्थिति विशेष्य की होती है वही विशेषण की भी रहती है । इन उदाहरणों में इसे देख सकते हैं – सुन्दरं पुष्पम्, लघूनि चित्राणि, निपुणस्य छात्रस्य, गभीरायां नद्याम्, अस्मिन् गृहे, मूर्खायाः दास्याः, दुर्बलयोः बालकयोः, धवले वस्त्रे, उत्कृष्टानि फलानि, जीर्णात् गृहात्, निर्धनेभ्यः छात्रेभ्यः इत्यादि ।

विशेषण का स्वरूप जैसा होगा (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त आदि) उस शब्द के ढाँचे पर ही इसका रूप चलेगा । जैसे अकारान्त विशेषण का पुँल्लिङ्ग में 'बालक' के समान, नपुंसकलिङ्ग में 'फल' के समान और स्त्रीलिङ्ग आकारान्त हो जाने पर 'लता' के समान रूप होगा । नीचे के उदाहरण देखें –

शीतल (ठंढा) –	पुँल्लिङ्ग	–	शीतलः, शीतलौ, शीतलाः
	स्त्रीलिङ्ग	–	शीतला, शीतले, शीतलाः
	नपुंसकलिङ्ग	–	शीतलम्, शीतले, शीतलानि

अन्य स्वरों से अन्त होने वाले विशेषणों के रूप उनके संज्ञा-रूपों के समान होते हैं ।

जैसे – लघु (छोटा) का रूप –

पुं. – लघुः लघू, लघवः

नपुं – लघु लघुनी, लघूनि (मधु के समान)

नीचे कुछ उपयोगी विशेषण दिए जाते हैं –

रंगसम्बन्धी – सफेद = श्वेतः । काला = कृष्णः, श्यामः । लाल = रक्तः अरुणः । पीला = पीतः । नीला = नीलः ।

आकारसम्बन्धी - छोटा = ह्रस्व:, लघु: । बड़ा = विशाल:, महान् । मोटा = स्थूल:, पीन: । लम्बा = दीर्घ: लम्ब: । पतला = कृश:, क्षीण: । लंगड़ा = खञ्ज: ।

स्वभावसम्बन्धी - अच्छा = सुशील:, सज्जन:, शोभन:, उत्तम:, सुन्दर: (अर्थ के अनुसार प्रयोग होता है)। सबसे अच्छा = श्रेष्ठ: । सुस्त = मन्द: । चालाक = चतुर:, निपुण:, कुशल: । चंचल = चपल:, चञ्चल: । तेज = तीव्र: । बुरा = दुष्ट: । पढ़ा-लिखा = शिक्षित: ।

गुणसम्बन्धी - कड़ा = कठोर: । मजबूत = दृढ:, सबल: । कमजोर = दुर्बल: । सूखा = शुष्क: । गीला = आर्द्र: । ठंढा = शीत:, शीतल: । गर्म = उष्ण:। महीन = सूक्ष्म: । मुलायम = कोमल:, मृदुल: । रूखा = रूक्ष: । तीखा = तीक्ष्ण: । कड़वा = कटु: । तीता = तिक्त: । गरीब = निर्धन:, दरिद्र: । धनी = धनिक:, धनी । मीठा = मधुर:, मिष्ट: । खट्टा = अम्ल: । कसेला = कषाय: ।

मूलत: सर्वनाम रहने वाले शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं । इनमें भी विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति का प्रयोग होता है । इनका संस्कृत भाषा के दैनिक व्यवहार में बहुत महत्त्व है । इदम् (तीनों लिङ्ग), अदस् (तीनों लिङ्ग), यद् (तीनों लिङ्ग), तद् (तीनों लिङ्ग), एतद् (तीनों लिङ्ग) एवं किम् (तीनों लिङ्ग)- इनका प्रयोग बहुत अधिक देखा जाता है, इसलिए इनके रूपों को संस्कृत वाग्धारा की दृष्टि से स्मरण रखना आवश्यक है । कुछ उदाहरण देखें - के के बालका: सन्ति ?(कौन-कौन लड़के हैं ?) ।

एतस्य गृहस्य (इस घर का) ।

असौ बालक: (वह लड़का) ।

अस्या: बालिकाया: (इस लड़की का) ।

कस्यां पाठशालायाम् (किस पाठशाला में) ।

तेषां छात्राणाम् (उन छात्रों का) ।

तानि पुष्पाणि (वे फूल) ।

तस्मात् नगरात् (उस शहर से)

इसी प्रकार सैकड़ों उदाहरण बनाने का प्रयास करें ।

इस प्रसंग में अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषणों का भी प्रयोग सीखना चाहिए । प्रश्नवाचक सर्वनाम (तथा अव्यय) से 'चित्' या 'चन' लगाने पर अनिश्चय-वाचक शब्द (सार्वनामिक विशेषण या अव्यय) बन जाते हैं। विशेषण में चित्, चन के पूर्व ऊपर के अनुसार विभक्ति लगती है। उदाहरण देखें –

कोई लड़का (कः + चित् = कश्चित् बालकः)

किसी लड़की को (काम् + चित् = काञ्चित् बालिकाम्)

(यहाँ सन्धि के नियम लगते हैं) ।

किसी जगह से (कस्मात् + चित् = कस्माच्चित् स्थानात्)

कुछ फूलों को (कानि + चित् = कानिचित् पुष्पाणि)

किसी शहर में (कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित् नगरे)

चित् के स्थान पर 'चन' (हलन्त नहीं) तथा 'अपि' का प्रयोग भी देखा जाता है किन्तु सन्धि के नियमों का पालन आवश्यक है । उदाहरण –

किसी नदी में = कस्याञ्चित्, कस्याञ्चन, कस्यामपि नद्याम् । कुछ मनुष्यों का = केषाञ्चित्, केषाञ्चन, केषामपि मनुष्याणाम् ।

(ग) क्रियाविशेषण – ऊपर कहा गया है कि विशेषण का ही एक भेद क्रिया-विशेषण है जो तिङन्त या क्रियारूप में प्रयुक्त कृदन्त की विशेषता बतलाता है । क्रिया

की विशेषता का अर्थ है उसके प्रकार, स्थान, काल इत्यादि का बोध कराना। इसलिए क्रियाविशेषण इन लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं। क्रियाविशेषण अव्यय के रूप में हो जाते हैं इसलिए इनमें लिङ्ग, वचन, विभक्ति का प्रश्न नहीं उठता, सदा एकरूप रहते हैं। कुछ लोगों ने भ्रमवश 'क्रियाविशेषणे द्वितीया' के रूप में नियम बनाया है। वस्तुतः यह व्यर्थ है। अव्यय के स्वरूप के अनुसार किसी शब्द में 'अम्' लगा हो तो वह द्वितीयान्त नहीं होता।

क्रियाविशेषण अव्यय होते हैं इसलिए अव्ययों के तीनों भेद (मूल अव्यय, प्रत्ययान्त अव्यय तथा अव्ययीभाव समास) यहाँ गृहीत होते हैं। उदाहरण देखें –

मूल अव्यय – वृक्षात् फलं **पृथक्** भवति।
स **प्रातः** गमिष्यति।
त्वं **पुनः** समागतः असि।
पण्डितः **उच्चैः** वदति।

प्रत्ययान्त अव्यय– अहम् **अन्यत्र** पठिष्यामि (स्थानवाचक)।
इदम् **उभयथा** सिध्यति (प्रकारवाचक)।
यदा सः आगतः **तदा** वृष्टिः जाता (कालवाचक)।
शिक्षकः **कथञ्चित्** चलति (प्रकारवाचक)।

अव्ययीभाव समास– अहं **यथाशक्ति** करिष्यामि।
प्रधानाध्यापकः **उपविद्यालयं** समागतः।
छात्राः **प्रतिदिनं** परिश्रमं कुर्वन्ति।

4. समासस्य अवधारणा

संस्कृत भाषा में दो या अधिक सार्थक शब्दों को एक साथ मिलाकर प्रयुक्त करने की व्यवस्था है। इसे "समास" कहते हैं। इसका अर्थ है – **समसनं समासः**। अर्थात् पदों को एक साथ (सम्) रखना (असनम्)। एक साथ रखने पर उसके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं। दोनों पदों के बीच कैसा सम्बन्ध है इसके आधार पर समास के भेद होते हैं। इस सम्बन्ध को समास के विग्रह द्वारा प्रकट करते हैं। जैसे–

समास का पद –	पदों में सम्बन्ध (विग्रह)
राजपुरुषः –	राज्ञः पुरुषः।
यथाशक्ति –	शक्तिम् अनतिक्रम्य। (शक्ति की सीमा के अन्तर्गत)
पीताम्बरः –	पीतम् अम्बरं यस्य सः।
पाणिपादम् –	पाणी च पादौ च तयोः समाहारः।

समास मूलतः चार प्रकार के हैं –

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व। तत्पुरुष के अन्तर्गत कर्मधारय और द्विगु मुख्य रूप से होते हैं इसलिए कहीं-कहीं छह समासों की चर्चा दिखाई पड़ती है।

अव्ययीभाव समास – अव्यय के रूप में रहता है। इसमें प्रायः पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता रहती है। **जैसे–**

शक्तिमनतिक्रम्य	=	यथाशक्ति।
दिनं दिनं प्रति	=	प्रतिदिनम्।
गृहस्य समीपम्	=	उपगृहम्।

तत्पुरुष समास – में उत्तर पदार्थ की प्रधानता होती है। इसमें कहीं-कहीं दोनों पदों

की विभक्तियाँ भिन्न होती हैं तो व्यधिकरण तत्पुरुष कहलाता है। जैसे -

ग्रामं गतः = ग्रामगतः। (द्वितीया तत्पुरुष)

ज्ञानेन हीनः = ज्ञानहीनः। (तृतीया तत्पुरुष)

व्याघ्रात् भयम् = व्याघ्रभयम्। (पञ्चमी तत्पुरुष)

गङ्गायाः जलम् = गङ्गाजलम्। (षष्ठी तत्पुरुष)

काव्ये प्रवीणः = काव्यप्रवीणः। (सप्तमी तत्पुरुष)

पूर्वपद की विभक्ति के अनुसार इसके भेद किए गये हैं।

- तत्पुरुष समास में कभी-कभी दोनों पदों की विभक्तियाँ समान होती हैं, तब उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे-

नीलं कमलम् = नीलकमलम्

वीरः पुरुषः = वीरपुरुषः

घन इव श्यामः = घनश्यामः

कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः

- ऐसे ही समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, तो उसे **द्विगु** कहते हैं। जैसे -

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी

सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती

नवानां रात्रीणां समाहारः = नवरात्रम्

- 'न' का समास किसी पद के साथ होने से उसे ''नञ्'' समास कहते हैं। न का

व्यञ्जन के पूर्व 'अ' तथा स्वर के पूर्व 'अन्' हो जाता है । जैसे-

न मोघः = अमोघः

न सिद्धः = असिद्धः

न अर्थः = अनर्थः

न आगतः = अनागतः

➲ बहुव्रीहि समास में दोनों पदों के अर्थों से भिन्न अन्य पदार्थ की प्रधानता होती है। जैसे –

दश आननानि यस्य सः = दशाननः (अर्थात् रावण)

पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (अर्थात् विष्णु)

वीणा पाणौ यस्याः सा = वीणापाणिः (अर्थात् सरस्वती)

➲ **द्वन्द्वसमास** – 'च' के अर्थ में होता है, इसलिए इसमें दोनों पदों के अर्थों की प्रधानता होती है । जैसे –

रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ

सुखं च दुःखं च = सुखदुःखे

पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ

सीता च गीता च = सीतागीते

यह स्मरणीय है कि सन्धि के समान समास भी संस्कृत भाषा की विशिष्टता है जिससे भाषा में संक्षेपण, अभिनव अर्थ का प्रकाशन एवं बहुव्रीहि समास के प्रयोग से

व्यञ्जना वाले अर्थ भी लाए जाते हैं।

5. पत्रलेखनम् (आवश्यक निर्देश)

पत्रलेखन द्वारा व्यक्तियों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान दूर रह कर भी होता है। प्राचीन काल से ही इसका महत्त्व रहा है। जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जाता है उसकी स्थिति के अनुसार आरम्भ में सम्बोधन किया जाता है। पुनः शिष्टाचार के अनुसार प्रणाम, आशीर्वाद, विनम्रता-प्रदर्शन इत्यादि औपचारिक रूप से आवश्यक हैं। पत्र का मुख्य भाग वर्णनात्मक, सूचनात्मक अथवा निबन्धात्मक भी हो सकता है। पत्र के अन्त में पत्र लिखने वाला अपना नाम देने के पूर्व अपने सम्बन्ध के अनुसार शब्दों का प्रयोग करता है। पत्र में तीन मुख्य औपचारिक अंग होते हैं जो इसके मूल भाग के अतिरिक्त हैं -

1. सम्बोधन, 2. अभिवादन तथा 3. समापन। जहाँ तक सम्बोधन का प्रश्न है **बड़े लोगों के लिए मान्यवराः, आदरणीयाः, पूज्याः, मान्याः** इत्यादि लिखे जाते हैं। **मित्रों के लिए प्रिय, प्रियमित्र, बन्धुवर** अथवा **प्रिय के बाद नाम का** प्रयोग भी होता है। **छोटों के लिए** भी **प्रिय, चिरञ्जीवी, आयुष्मान्,** इत्यादि लिखे जाते हैं। औपचारिक पत्र या आवेदन में मान्यवर, महोदय, इत्यादि लिखना समीचीन है। **अभिवादन के लिए प्रणामाः, चरणस्पर्शः** इत्यादि लिखा जाता है। मित्रों को **नमस्ते, नमामि, प्रणमामि** इत्यादि लिखना उचित है। पत्र का **समापन करते हुए भवदीयः, स्नेहभाजनः, आज्ञाकारी, शुभचिन्तकः, कृपाकांक्षी** इत्यादि शब्द आवश्यकता के अनुसार आते हैं। उदाहरण - पिता को पत्र

पूज्याः पितृचरणाः पाटलिपुत्रम्

सादरं प्रणामाः सन्तु दिनाङ्कः ....

अहम् अत्र कुशलपूर्वकं पठामि। प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि। छात्रावासे

निवासस्य भोजनस्य च व्यवस्था उचिता वर्तते । अतः भवान् चिन्तां न करोतु । सर्वे सहवासिनः सहयोगं कुर्वन्ति । सायंकाले उद्याने क्रीडा भवति । तया शरीरस्य व्यायामः जायते । विद्यालये शिक्षकाः सर्वे योग्याः सन्ति । छात्रान् पुत्रवत् ते मन्यन्ते । ग्रीष्मावकाशे आगमिष्यामि ।

भवदीयः स्नेहभाजनः

आत्मजः ....

आवेदन पत्र (प्रधानाचार्य के पास)

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

मध्यविद्यालयः, कृष्णपुरम्

विषयः – अवकाशार्थम् आवेदनम् ।

मान्यवराः !

सविनयं निवेदयामि यत् मम अग्रजायाः विवाहसमारोहः 26.02.2012 दिनाङ्के आयोजितः भविष्यति । अतः अहं स्वकक्षायां पञ्चदिवसान् अनुपस्थितः भविष्यामि । मम प्रार्थना वर्तते यत् 23.2.2012 दिनाङ्कात् 27.2.2012 दिनाङ्कं यावत् मह्यम् अवकाशप्रदानस्य कृपां कुर्वन्तु भवन्तः । तदर्थम् अहं सर्वदा कृतज्ञः भविष्यामि ।

भवदीया आज्ञाकारिणी छात्रा

....

अनुच्छेदलेखनम्

अनुच्छेद किसी बड़े निबन्ध का एक खण्ड होता है जिसमें एक विषय से सम्बद्ध कई वाक्य रहते हैं। निबन्ध में लेखक विषयान्तर में भी जा सकता है किन्तु अनुच्छेद में यह सम्भव नहीं । विषयवस्तु का अनुशासन यहाँ बहुत प्रभावशाली होता है । इसलिए एक वाक्य भी तारतम्य से रहित नहीं हो सकता । आकार में लघु होने के कारण अनुच्छेद लिखने वाले के बौद्धिक संयम तथा अनुशासन का परिचायक होता है। व्यक्तियों की जीवनी, ऋतुओं का वर्णन, पर्वत-नदी का वर्णन, छात्रजीवन से सम्बद्ध विषय, मानवीय गुण, उत्सव आदि के विषय में प्राय: अनुच्छेद-लेखन की आवश्यकता है। यहाँ कुछ अनुच्छेद दिए जाते हैं।

1. **गङ्गा नदी** - गङ्गा अस्माकं देशस्य श्रेष्ठा पूजनीया च नदी वर्तते । हिमालयपर्वतात् इयं नि:सरति । उत्तराखण्डे गङ्गोत्तरीनामके स्थाने अस्या: उद्गम: वर्तते । तत्र हिमशिलाया: इयं निर्गता । उत्तरप्रदेशे विहारे वङ्गप्रदेशे च भूमिं सा सिञ्चति । इयं बहुलाभप्रदा वर्तते ।

2. **विद्यालय:** - छात्राणां हिताय विद्यालयस्य महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति । विद्यालये अनेका: कक्षा: भवन्ति । तासु शिक्षका: छात्रान् विविधान् विषयान् पाठयन्ति । प्रधानाध्यापक: विद्यालयस्य नियन्त्रणं करोति । विद्यालये छात्राणां सदाचारस्य शिक्षणमपि भवति ।

3. **छात्रजीवनम्** - जीवनस्य प्रथम: चरण: छात्रजीवनम् एव । प्राचीनभारते ब्रह्मचर्याश्रम: भवति स्म । स एव सम्प्रति छात्रजीवने दृश्यते । अस्मिन् जीवने एव शारीरिक:, मानसिक: च परिश्रम: भवति । तस्य जीवनपर्यन्तं फलं जायते।

अनुशासनं विद्याध्ययनं च छात्राणां परमं कर्तव्यं भवति ।

6. शब्द रूपाणि

सखि (मित्र)

इकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधनम्	हे सखे!	हे सखायौ !	हे सखायः

मुनि

इकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधनम्	हे मुने!	हे मुनी !	हे मुनयः

नोट : कवि, हरि, ऋषि, रवि, अग्नि, कपि (बन्दर), अरि (शत्रु) भूपति/ नृपति (राजा) जलधि/उदधि (समुद्र), व्याधि (रोग) इत्यादि शब्दों के रूप मुनि के समान होते हैं।

पति (स्वामी, भर्ता)

इकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्

तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधनम्	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

साधु

उकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधनम्	हे साधो !	हे साधू !	हे साधवः!

नोट : गुरु, वायु, शम्भु, मृत्यु, भानु (सूर्य), बन्धु, तरु, ऋतु, शिशु, बहु (बहुत) विधु (चन्द्रमा) पशु आदि शब्दों के रूप साधु के समान होते हैं ।

भ्रातृ (भाई)

ऋकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातृन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
पञ्चमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातृणाम्
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधनम्	हे भ्रातः !	हे भ्रातरौ !	हे भ्रातरः!

नोट – पितृ (पिता), जामातृ (दामाद), देवृ (देवर), नृ (नर) आदि शब्दों के रूप भ्रातृ के समान होते हैं।

लता

आकारान्त (स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभयाम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधनम्	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

नोट : कन्या/सुता (बेटी), भार्या (पत्नी), कृपा, दया, सन्ध्या, निशा/क्षपा(रात) नासिका(नाक), अजा (बकरी), पूजा, शय्या, महिला, सुधा (अमृत), कथा, कविता, रोटिका आदि शब्दों के रूप लता के समान होते हैं।

धेनु (दूध देनेवाली गाय)

उकारान्त (स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधनम्	हे धेनो !	हे धेनू!	हे धेनवः !

नोट – तनु (शरीर), रेणु (धूल) इत्यादि शब्दों रूप धेनु की तरह होते हैं।

मातृ (माता)

ऋकारान्त (स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	माता	मातरौ	मातर:
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄ:
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभि:
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्य:
पञ्चमी	मातु:	मातृभ्याम्	मातृभ्य:
षष्ठी	मातु:	मात्रो:	मातणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रो:	मातृषु
सम्बोधनम्	हे मात:!	हे मातरौ !	हे मातर: !

महत् (बड़ा)

पुँल्लिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्त:
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महत:
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भि:
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्य:
पञ्चमी	महत:	महद्भ्याम्	महद्भ्य:
षष्ठी	महत:	महतो:	महताम्
सप्तमी	महति	महतो:	महत्सु
सम्बोधनम्	हे महान् !	हे महान्तौ !	हे महान्त: !

नोट : महत् का स्त्रीलिङ्ग महती (बड़ी) के रूप नदी की तरह होता है ।

नामन् (नाम)

क्लीबलिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	नाम	नाम्नी/नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी/नामनी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभि:
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्य:
पञ्चमी	नाम्न:	नामाभ्याम्	नामभ्य:
षष्ठी	नाम्न:	नाम्नो:	नाम्नाम्

सप्तमी	नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधनम्	हे नाम!/ हे नामन् !	हे नाम्नी!/ हे नामनी!	हे नामानि !

नोट : व्योमन् (आकाश) धामन् (घर), दामन् (रस्सी), प्रेमन् (प्यार) आदि शब्दों के रूप नामन् की तरह होते हैं।

पयस् (जल)

क्लीबलिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पञ्चमी	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसोः	पयःसु/पयस्सु
सम्बोधनम्	हे पयः !	हे पयसी!	हे पयांसि!

नोट : वचस् (वाणी), नभस् (आकाश), सरस् (तालाब), वयस् (उम्र), मनस् आदि शब्दों के रूप पयस् के समान होते हैं।

कर्मन्

क्लीबलिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वितीया	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
तृतीया	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
चतुर्थी	कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
पञ्चमी	कर्मणः	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
षष्ठी	कर्मणः	कर्मणोः	कर्मणाम्
सप्तमी	कर्मणि	कर्मणोः	कर्मसु
सम्बोधनम्	हे कर्म !	हे कर्मणी	हे कर्माणि!

नोट : जन्मन्, सद्मन् (घर) आदि शब्दों के रूप कर्मन् की तरह होते हैं।

भवत् (आप)

पुँल्लिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधनम्	हे भवन् !	हे भवन्तौ !	हे भवन्तः !

नोट : भवत् का स्त्रीलिङ्ग भवती (आप) है जिसका रूप नदी की तरह होता है।

एक (एक)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि (दो)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

नोट : (‘द्वि’ शब्द के रूप केवल द्विवचन में होते हैं)

त्रि (तीन)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

नोट : ‘त्रि’ से लेकर आगे की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में होते हैं।

चतुर् (चार)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नोट – पञ्चन्, षष्, सप्तन्, आदि संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं और केवल ‘बहुवचन’ में होते हैं।

पञ्चन् – पाँच

विभक्तिः	–	पुँल्लिङ्गम्
प्रथमा	–	पञ्च
द्वितीया	–	पञ्च
तृतीया	–	पञ्चभिः
चतुर्थी	–	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	–	पञ्चभ्यः
षष्ठी	–	पञ्चानाम्

सप्तमी	-	पञ्चसु

7. धातुरूपाणि

दृश् - देखना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तमपुरुषः	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुषः	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यमपुरुषः	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तमपुरुष :	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यमपुरुषः	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तमपुरुष :	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यमपुरुषः	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत

उत्तमपुरुष :	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

याच् – माँगना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचति	याचतः	याचन्ति
मध्यमपुरुषः	याचसि	याचथः	याचथ
उत्तमपुरुष :	याचामि	याचावः	याचामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उत्तमपुरुष :	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
मध्यमपुरुषः	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उत्तमपुरुष :	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचतु	याचताम्	याचन्तु
मध्यमपुरुषः	याच	याचतम्	याचत
उत्तमपुरुष :	याचानि	याचाव	याचाम

विधिलिङ् लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
मध्यमपुरुषः	याचेः	याचेतम्	याचेत
उत्तमपुरुष :	याचेयम्	याचेव	याचेम

या –जाना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याति	यातः	यान्ति
मध्यमपुरुषः	यासि	याथः	याथ

उत्तमपुरुष :	यामि	याव:	याम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	यास्यति	यास्यत:	यास्यन्ति
मध्यमपुरुष:	यास्यसि	यास्यथ:	यास्यथ
उत्तमपुरुष :	यास्यामि	यास्याव:	यास्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अयात्	अयाताम्	अयान्, अयु:
मध्यमपुरुष:	अया:	अयातम्	अयात
उत्तमपुरुष :	अयाम्	अयाव	अयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	यातु	याताम्	यान्तु
मध्यमपुरुष:	याहि	यातम्	यात
उत्तमपुरुष :	यानि	याव	याम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	यायात्	यायाताम्	यायु:
मध्यमपुरुष:	याया:	यायातम्	यायात
उत्तमपुरुष :	यायाम्	यायाव	यायाम

दिव् - चमकना, जुआ खेलना (परस्मैपदी)

लट्लकार:

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	दीव्यति	दीव्यत:	दीव्यन्ति
मध्यमपुरुष:	दीव्यसि	दीव्यथ:	दीव्यथ
उत्तमपुरुष :	दीव्यामि	दीव्याव:	दीव्याम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	देविष्यति	देविष्यत:	देविष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	देविष्यसि	देविष्यथ:	देविष्यथ

उत्तमपुरुष :	देविष्यामि	देविष्याव:	देविष्याम:

लङ्‌लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यमपुरुष:	अदीव्य:	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तमपुरुष :	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

लोट्‌लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यमपुरुष:	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तमपुरुष :	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधिलिङ्‌लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयु:
मध्यमपुरुष:	दीव्ये:	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तमपुरुष :	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

आप् – प्राप्त करना (परस्मैपदी)

लट्‌लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आप्नोति	आप्नुत:	आप्नुवन्ति
मध्यमपुरुष:	आप्नोषि	आप्नुथ:	आप्नुथ
उत्तमपुरुष :	आत्नोमि	आप्नुव:	आप्नुम:

लृट्‌लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आप्स्यति	आप्स्यत:	आप्स्यन्ति
मध्यमपुरुष:	आप्स्यसि	आप्स्यथ:	आप्स्यथ
उत्तमपुरुष :	आप्स्यामि	आप्स्याव :	आप्स्याम :

लङ्‌लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यमपुरुष:	आप्नो :	आप्नुतम्	आप्नुत

उत्तमपुरुष :	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लोट्लकारः

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यमपुरुषः	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तमपुरुष :	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यमपुरुषः	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तमपुरुष :	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

इष् - इच्छा करना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तमपुरुष :	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तमपुरुष :	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यमपुरुषः	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तमपुरुष :	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत

उत्तमपुरुष :	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयु:
मध्यमपुरुष:	इच्छे:	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तमपुरुष :	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

प्रच्छ्-पूछना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमान काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पृच्छति	पृच्छत:	पृच्छन्ति
मध्यमपुरुष:	पृच्छसि	पृच्छथ:	पृच्छथ
उत्तमपुरुष :	पृच्छामि	पृच्छाव:	पृच्छाम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत:	प्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथ:	प्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुष :	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्याव:	प्रक्ष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यमपुरुष:	अपृच्छ:	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तमपुरुष :	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यमपुरुष:	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तमपुरुष :	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु:
मध्यमपुरुष:	पृच्छे:	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तमपुरुष :	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

क्री - खरीदना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यमपुरुषः	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तमपुरुष :	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तमपुरुष :	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यमपुरुषः	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तमपुरुष :	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यमपुरुषः	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तमपुरुष :	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
मध्यमपुरुषः	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीयीयात

उत्तमपुरुष :	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

चुर् = चोरी करना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यमपुरुषः	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तमपुरुष :	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तमपुरुष :	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यमपुरुषः	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तमपुरुष :	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यमपुरुषः	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तमपुरुष :	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यमपुरुषः	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तमपुरुष :	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

चिन्त् = सोचना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
मध्यमपुरुषः	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ

उत्तमपुरुष :	चिन्तयामि	चिन्तयाव:	चिन्तयाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यत:	चिन्तयिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथ:	चिन्तयिष्यथ
उत्तमपुरुष :	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्याव:	चिन्तयिष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
मध्यमपुरुष:	अचिन्तय:	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उत्तमपुरुष :	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
मध्यमपुरुष:	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उत्तमपुरुष :	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयु:
मध्यमपुरुष:	चिन्तये:	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उत्तमपुरुष :	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

पूज् = पूजा करना

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयति	पूजयत:	पूजयन्ति
मध्यमपुरुष:	पूजयसि	पूजयथ:	पूजयथ
उत्तमपुरुष :	पूजयामि	पूजयाव:	पूजयाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयिष्यति	पूजयिष्यत:	पूजयिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	पूजयिष्यसि	पूजयिष्यथ:	पूजयिष्यथ

उत्तमपुरुष :	पूजयिष्यामि	पूजयिष्याव:	पूजयिष्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
मध्यमपुरुष:	अपूजय:	अपूजयतम्	अपूजयत
उत्तमपुरुष :	अपूजयम्	अपूजयाव	अपूजयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयतु	पूजयताम्	पूजयन्तु
मध्यमपुरुष:	पूजय	पूजयतम्	पूजयत
उत्तमपुरुष :	पूजयानि	पूजयाव	पूजयाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयेत्	पूजयेताम्	पूजयेयु:
मध्यमपुरुष:	पूजये:	पूजयेतम्	पूजयेत
उत्तमपुरुष :	पूजयेयम्	पूजयेव	पूजयेम

नम् - नमस्कार करना, झुकना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नमति	नमत:	नमन्ति
मध्यमपुरुष:	नमसि	नमथ:	नमथ
उत्तमपुरुष :	नमामि	नमाव:	नमाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नंस्यति	नंस्यत:	नंस्यन्ति
मध्यमपुरुष:	नंस्यसि	नंस्यथ:	नंस्यथ
उत्तमपुरुष :	नंस्यामि	नंस्याव:	नंस्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यमपुरुष:	अनम:	अनमतम्	अनमत

उत्तमपुरुष :	अनमम्	अनमाव	अनमाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यमपुरुषः	नम	नमतम्	नमत
उत्तमपुरुष :	नमानि	नमाव	नमाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यमपुरुषः	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तमपुरुष :	नमेयम्	नमेव	नमेम

घ्रा (जिघ्र्) = सूँघना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
मध्यमपुरुषः	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उत्तमपुरुष :	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उत्तमपुरुष :	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
मध्यमपुरुषः	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उत्तमपुरुष :	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
मध्यमपुरुषः	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत

उत्तमपुरुष :	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयु:
मध्यमपुरुष:	जिघ्रे:	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उत्तमपुरुष :	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

पा (पिब्) = पीना (परस्मैदी)

लट्लकार: (वर्त्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पिबति	पिबत:	पिबन्ति
मध्यमपुरुष:	पिबसि	पिबथ:	पिबथ
उत्तमपुरुष :	पिबामि	पिबाव:	पिबाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यमपुरुष:	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तमपुरुष :	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अपिबत्	अपितबताम्	अपिबन्
मध्यमपुरुष:	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उत्तमपुरुष :	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यमपुरुष:	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तमपुरुष :	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयु:
मध्यमपुरुष:	पिबे:	पिबेतम्	पिबेत

उत्तमपुरुष :	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

नृत् (नृत्य) = नाचना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तमपुरुष :	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तमपुरुष :	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यमपुरुषः	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तमपुरुष :	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यमपुरुषः	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तमपुरुष :	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यमपुरुषः	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत

उत्तमपुरुष :	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

हस् – हँसना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यमपुरुषः	हससि	हसथः	हसथ
उत्तमपुरुष :	हसामि	हसावः	हसामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तमपुरुष :	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यमपुरुषः	अहसः	अहसतम्	अहसत
उत्तमपुरुष :	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यमपुरुषः	हस	हसतम्	हसत
उत्तमपुरुष :	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
मध्यमपुरुषः	हसेः	हसेतम्	हसेत

उत्तमपुरुष :	हसेयम्	हसेव	हसेम

8. संस्कृत - सम्भाषणम्

सुप्रभातम्	=	सुप्रभात (Good Morning)
प्रणमामि / नमस्ते / नमस्कार:	=	नमस्ते, प्रणाम
शुभरात्रि:	=	शुभरात्रि (Good-night)
धन्यवादा:	=	धन्यवाद
अस्तु / आम्	=	जी हाँ / ठीक है
स्वागतम्	=	स्वागत
चिन्ता मास्तु	=	कोई बात नहीं
क्षम्यताम्	=	क्षमा करें
अथ किम् ?	=	और क्या ?
भवतु	=	जी !
आगच्छतु	=	आइए
उपविशतु	=	बैठिए
किम् अन्यत् ?	=	और क्या ?
तथैव अस्तु	=	जी हाँ / ऐसा ही हो
भवत: नाम किम् ?	=	आपका (पुं.) नाम क्या है ?
मम नाम रोहित: अस्ति	=	मेरा नाम रोहित है ।
भवत्या: नाम किम् ?	=	आपका (स्त्री.) नाम क्या है ?
मम नाम शाम्भवी	=	मेरा नाम शाम्भवी है ।
आगच्छानि महोदय ?	=	श्रीमान्, क्या मैं आऊँ ?
स्वैरम् आगच्छ	=	सहर्ष आ जाओ
जलं पातुं गच्छानि किम्	=	क्या मैं जल पीने जाऊँ ?
त्वं कस्मिन् विद्यालये पठसि?	=	तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो ?
अहं मध्यविद्यालये पठामि	=	मैं मध्यविद्यालय में पढ़ता हूँ ।

त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ? = तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ?

अहम् अष्टमकक्षायां पठामि = मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

तव विद्यालये कति शिक्षका: सन्ति? = तुम्हारे विद्यालय में कितने शिक्षक हैं ?

मम विद्यालये दश शिक्षका: सन्ति = मेरे विद्यालय में दस शिक्षक हैं।

तव पितु: नाम किम् ? = तुम्हारे पिता का क्या नाम है ?

मम पितु: नाम श्रीरविदास: अस्ति = मेरे पिता का नाम श्री रविदास है

इदानीं क: समय: ? = इस समय क्या बजा है ?

इदानीं त्रिवादनम् अस्ति = अभी तीन बजे हैं।

अहं सपादत्रिवादने गमिष्यामि = मैं सवा तीन बजे जाऊँगा।

पादोन-षड्वादने जलपानं करिष्यामि = पौने छह बजे जलपान करूँगा।

सार्ध - नववादने विद्यालयं गमिष्यामि = साढ़े नव बजे विद्यालय जाऊँगा।

सोमवासरे क: दिनाङ्क: भविष्यति ? = सोमवार को कौन-सी तिथि (तारीख) होगी ?

सोमवासरे पञ्चदश दिनाङ्क: अस्ति = सोमवार को पन्द्रह तारीख है।

एकविंशतिदिनाङ्के क: वासर: ? = इक्कीस तारीख को कौन सा वार (दिन) होगा?

एकविंशतिदिनाङ्के रविवासर: भविष्यति = इक्कीस तारीख को रविवार होगा।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

QQQ

व् **दन्तोष्ठ्य** हैं। **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं– श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् **दन्तोष्ठ्य** हैं। **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् **दन्तोष्ठ्य** हैं। **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् **दन्तोष्ठ्य** हैं। **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् **दन्तोष्ठ्य** हैं। **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ?